ओ३म्

असत्य पर सत्य की विजय

'सत्यार्थ प्रकाश का असत्यार्थ प्रकाश' नाम की भ्रष्ट
मुस्लिम पुस्तक का उत्तर ।

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 801
दयानन्द महिला म

डॉ० श्रीराम आर्य
कासगंज (एटा) उ०प्र०

सन् १९८०

प्रथम वार मू० ३.५० पै०

ओ३म
गुरु विरजानन्द दण्डी
संदर्भ पुस्तकालय
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र
वर्गीकरण नम्बर .. 801 ....
पु. परिग्रहण क्रमांक .....

॥ ओ३म् ॥

... लाल भारतीय
पुस्तकालय
क्रमांक संख्या 208

"सत्यार्थ प्रकाश का असत्यार्थ प्रकाश"

दिनांक ५-५-५-७५

पुस्तक का उत्तर

पुस्तकालय
क्रमांक संख्या 208
विषय
दिनांक ५-५-५-७५

* प्रथम अध्याय *

कुरान शरीफ जो सुन्नी सम्प्रदाय के मुसलमानों को मान्य है उसमें ३० सिपारे है। कुछ लोग उसमें ११४ सूरतें ५४८ रुकूअ तथा ६२९९ आयते मानते हैं तथा कुछ लोग ६६६६ आयते मानते है। कुरान की अधिकाँश सामिग्री तौरात-जबूर और इञ्जील से ली गई है जो कि यहुदी व ईसाईयों के मान्य ग्रथ हैं। शिया सम्प्रदाय के मुसलमान कुरान में ४० सिपारे मानते हैं। भारत में पटना में खुदा बख्श लाइब्रेरी में ४० सिपारे वाला कुरान भी मौजूद है। कुरान में विभिन्न व्यक्तियों द्वारा कही गई आयतों का संग्रह है। यथा शैतान-फिर औन-मूसा-मुसरिकीन-यूसुफ काफिर व खुदा आदि के द्वारा कही गई आयतों का उसमें संग्रह किया गया है। कुरान में कई स्थानों पर पुरानी किताबों तौरात जबूर व इन्जील को खुदाई माना हैं। (देखो-कुरान की छान बीन छठाअध्याय।) २-फिर भी उनके विरुद्ध अनेक स्थल तथा व्यवस्थाऐं उसमें दी गई है। अर्थात्त उनके खुदा की बातों को कुरान के अरबी खुदा ने काट दिया है। (कुरान सूरे आलइमरानआ) ३- कुरान में दीगर मजहब वालों से युद्ध करने और तब तक लड़ने के आदेश दिये हैं जब तक कि वे मुसलमान न हो जावे। (कुरान की छान बीन अ०

पाचवां) ४– विधर्मियों से लड़ने के साथ/साथ खुदा ने उनको लूट ने व उनकी औरतों को भी पकड़ लाने का भी समर्थन किया है। (देखो समीक्षा नं० ३५ में दिये प्रमाण) ५– लूट के माल में खुदा पैगम्बर व रिश्तेदारों के भी हिस्से कुरान में बाँध दिये गये हैं। (देखो समीक्षा नं० ७६ व ७९।) ६– मुसलमानों का कल्मा "लाइलाहालिल्लाह मुहम्मद रसूल लिल्लाह" सम्पूर्ण कुरानमें इस लिये नहीं दिया गया हैं कि उसमें खुदा के नाम के था मुहम्मद या किसी का नाम शामिल करना कुरान के विरुद्ध है। खुदा ने कुरान में स्वयम् को इस्लाम का पक्षपाती घोषित किया है। ७– दूसरे धर्म वाले अरबी लोगो को खुदा ने 'जाहिल' शब्द से गाली भी दी है।(कुरान सू० आलइमरान आ० ~~स्ने~~ २८।) ८– लोगों को इस्लाम में लाने लिये खुदा नेकुरान में गोश्त – शराबे– दूध – शहद की नहरे तथा खूब सूरत औरतों व लोडों के मिलने के लालच भी दिये है जो सिर्फ मुसलमानों के लिये सुरक्षित बता ये गये है। (कुरान सू० आलइम रान आ० २०।)९ – अन्य मज– हब वालों को काफिर और उन्हें दोजख में डाल कर भूना जाने वाला बताया गया है। (देखो समीक्षा नं० ४६) १०– खुदा को दूर आसमान में जन्नत में रहने वाला तथा अर्श नाम के तख्त पर बैठ ने वाला माना है जिसे फरिश्ते उठाते हैं। खुदा जन्नत में बैठक में मुसलमानों से मिलेगा यह भीं लिखा है। (कुरान सू० आराफ आ० ३६) ११– खुदा के केवल दो हाथ हैं और उनसे महनत करके छः या आठ दिन में (८००० साल में) उसने दुनियाँ को बनाया था यह भी लिखा है। (देखो समीक्षा नं० ८२)

खुदा का आसमान को हाथों में कागज की तरह लपेटन दोजख आसमान और जमीन से बातें करना आदि विलक्षण बातें भी कुरान में लिखी है जिन्हें देखकर कुरान के होने खुदाई पर

विश्वास नहीं होता है। कुरान में वहुत सी आयतें जो प्रथम बार लिखी गई थी वे बाद में खुदा ने बदल दी थी। इसमें कुरान संशोधित होने से प्रथम बार भें उतरा भी नही रह गया है। १२– कुरान उतरने का उदेश्य भी मक्का और उसके आसपास वालों को डराना कुरान में वताया गया हैं। अतः, वह सँसार के लिये नही माना जा सकता है। सूरे वकर आ० १०६।

अरब में युद्धादि में–मौहम्मद साहव की जरूरतों के अनुसार आवश्यकता पड़ने पर विभिन्न प्रकार के उपदेश खुदा की ओर से लिखे जाते थे वे भी कुरान में संग्रहीत है जो केवल सम्बन्धित घट नाओं की व्यवस्थाओं से सम्बन्धित है। कुरान में अरब इस्राएल आदि प्रदेशों की घटनाओ उन्ही के महापुरुषों आदि का उल्लेख मिलता है, शराब – मांसाहार आदि का विरोध व समर्थन भी कुरान में हैं।

कुरान में आयतों की कमी वेशी के सम्बन्ध में हम एक तालिका नींचे प्रस्तुत करते हैं—

रमज्जल कुरान	६६६६ आयतें।	क्रफियो ने ६२१४
मदानियों के समीप	६२१४	। इराकियों ने ६२१४
मक्कियों ने	६२१२	वस्रियों ने ६२१६

अब्दुलाहिब्ने मसऊद ने ६२१८। सुयूती के अनुसार इब्ने अब्बास ने ६२१६ शायते तथा अद्दानी ने ६००० मानी है। इसी प्रकार कुरान के शब्दों व अक्षरो की संख्या मैं भी भारी मतभेद मुस्लिम बिद्वानो के रहे हैं। सम्पूर्ण कुरान ज्यो का त्यो क्या था इस बिषय में मुस्लिमो में कभी एक मत नहीं हो सका है जव कि खुदाई किताब में कमी विशी होनी नहीं चाहिए। क्यो कि खुदाई किताब की रक्षा का भार खुदा का होना था यदि वह खुदाई होता तथा सँसार भर के मनुष्यो के लिये होता किन्तु उसका निर्माण केवल अरवी लोगो

के ही लिये खुदा के नाम पर किया गया था। मुहम्मद साहब को एक बार आयतें बनाकर या खुदा को आयतें उतारने के बाद उन्हें खारिज करके बार बार नई आयते उतारनी पड़तोथो। हम संक्षेप में उनकी संख्या नीचे देते है। जितनी आयते खारिज होती थी। ठीक उतनी ही उनकी जगह नई बना कर जोड़ दी जाती थी। सूरतवार संख्या निम्न प्रकार है—

सरते वकर २६ आयते। सू० आलइमरान में ५। सू० निसा मे २४ सू० मायदा में ६। सू० आनआम में १३। सू० आराफ में २। सू० अनफाल में ६। सुत्र तौवा मैं ७। सु यूनिस मैं ४। सु० हद मैं ३। सूरतें में २ सुहज्ञर में ५। सु नहल में ५। स बनीइसाएल में ३। स कहफ में १। सुमरिमम में ५। स ताहा में ३। स अम्बिया में २। सू हज्ज में २। मोमनून २। सू नूर में ७। सू फुरकान में २। सू शूरा में ४। सू नम्ल में १। सू कसस में १। सू अनकबूत में १। सू रोम में १। सू सजदा में १। सू अहजाब में २। सू सबा में १। सू सफ्फात ४। सू साद में २। सू जमर ७। सू मोमिन २। सू फुर्कान १। सू जुखरुफ में २।

इसी प्रकार अन्य सभी सूरतों में आयतें खारीज करके नई गढ़ कर जोड़ी जाती रही जो २१४ बैठती हैं। श्री सूयूती ने कुल १६२ कुरान में परिबर्तित आयतों को स्वीकार किया है।

कोई भी मुसलमान जो जानता है कुरान को ज्यों त्यों जैसा प्रथम बार बना था वैसा स्वीकार नही कर सकता है और न उसे संसार के लिये बना हुआ बता सकता है।

नोट:— निरस्त की गई तथा निरस्त करने बाली २१४/२१४ आयतों की सूरत वार पूरी सूची कुरान परिचय भाग १ पृ० ४५६ से ४६१ देखें।

कुरान शरीफ में अन्यत्र भी स्पष्ट लिखा है "यह कुरान परवदिगार का उतारा हुआ है। १६२। तेरे दिल पर ताकि तू डराने वालों में

हो जाय ।१९४। साफ अरबी जवान में ।१९५।और अगर हम कुरा न को किसी ऊपरी जबान में उतारते ।१९८। और वह उसे अरब वालों को पढ़कर सुनाते तो वह उस पर ईमान न लाते । ।१९९। (सूरे शुअरा) और हमने(अरबी)कुरान को समझने के लिए आसान कर दिया है तो कोई है जो शिक्षा पकड़े ।१७। सूरे कमर।

इन प्रमाणों में भी कुरान बनने का उद्देश्य मुहम्मद साहब को डराने वाला बनाने तथा केवल अरब बालों को इस्लाम में लाने व उनमें कुरान का प्रचार करना मात्र था। यह दुनियां के लोगों के लिये बनाया ही नही गया था यह ऊपर के प्रमाणों में खुदा की घोषणा से स्पष्ट है। और भी अन्यत्र कुरान में लिखा है।

"और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवाय किसी और दीन को तालाश करे तो खुदा के यहां उसका वह दीन कबूल नहीं होगा, और वह कयामत में नुकसान पाने वालों में से होगा ।८५। सू आलइमरान ।

इस प्रमाण से प्रगट है कि कुरान का अरबी खुदा केवल मुसलमानों का पक्षपाती था वह निष्पक्ष नही था। सम्भव है वह खुद भी मुसलमान हो गया हो वह ससार के सभी लोगों का हितैषी नही था। कुरान के अनुसार खुदा की स्थिति अरबी हल्के के डिप्टी मजिस्ट्रेट जैसी प्रतीत होती हैजो इस्लामेतर लोगों व भिन्नविचार धारा रखने वालों से चिढ़ता था। पैगम्बर और किताबे भी अरब और उसके आस पास के देशोंके लोगों को भेजता था। पहिले उसे यहूदी मजहव पसन्द था तब उसने तौरात व जबूर किताबे उसमें भेजी थी व नूह मूसा आदि पैगम्बर उनमें भेजे थे। बाद को ईसा मसीह नाम का अपना खास इकलौता बेटा उन ही में उसने भेजा तथा इञ्जील नाम की पुस्तक भेजी। इसके बाद उसे इस्लाम से (अरब वालों से) प्रेम हो गया तो मुहम्मद साहब को पैगम्बर बना दिया और कुरान शरीफ नाम की किताव बना दी। इस तरह

खुदा ने अपने को यहुदियों ओर अरबी मुसलमानों का दोस्त व दुनियां के अन्य विचार वाले लोगों का शत्रु साबित किया है। भारत में उसने न कोई किताब भेजी न पैगम्बर भेजा यह कुरान से प्रगट है।

मौलाना लिखता है कि खुदा कर्मानुसार फल देता है। पर कुरान ने कर्मों को फल का आधार न मानकर केवल मुसलमान होने को आधार माना है। देखो प्रमाण—

'जिन लोगोंने हमारी आयतों से इन्कार किया हम उनको (दोजख को) आग में फेकेगे' ।५६। सू निसां। खुदा काफिरों को नसीहत नही दिया करता ।२६४। सूरे बकर। (खुदा ने कहा) हमको इन काफिरों से बदला लेना है।४१। सू जुखरुफ। ऐसे मुस्लिम पक्षपातीं खुदा को यदि हिन्दू न माने या नफरत करेंतो क्योंकर गलत होंगे कुरान के अनुसार कयामत का दिन सिर्फ जन्नत में मुसलमानों को भेजने व शेष संसार के लोगों को दोजख में जला जलाकर मारने उनके घोर उत्पीड़न का मनहूस दिन होगा(सुरतेजमर देखो)इसदिन गैर मुस्लिमों को चीख पुकार भी खुदा न सुनेगा और न उनके नेक कर्मों की तौल की तराजू खड़ी की जावेगी। उस दिन सिर्फ मुसल मान ही खुश होगे और सारी दुनियाँ को खुदा बेहद दुःख देगा ऐसे काल्पनिक मनहूस दिनका मालिक कोई दुष्ट राक्षस भी बनना पसन्द नकरेगा। क्या ऐसे खुदाको रहमानिर्र होम साबित किया जा सकता है १ ऐसी मान्यता पर वे अक्ल मौलाना ! तुम को लज्जा आनी चाहिए कि तुम अरबी खुदा को भी राक्षस जैसा मानते हो जो दूसरों को दुःख देकर प्रसन्नता अनुभव करता है और सिर्फ अप ने चेलों से ही खुश रहता हैं। जो गैर मुस्लिम इन्सान को अपना दुश्मन समझता और उससे बदला चुकाने की भावना रखता है। जैसी कि कुरान ने घोषणा की है।

अरवी खुदा सिर्फ अपने को कर्जदेने वालों को केवल कुरान मानने वाले मुसलमानों कोही जन्नत में भेजेगा और उनके गुनाहों कोमाफ करेगा दूसरे मजहब वालो के नेक कर्मों को भी नही देखेगा न उन कोमाफ करेगान उनकी विकालत आरवी पैगम्बरकरेंगे(ऐ मुहम्मद) फिर अगर हम तुझे दुनियाँ से उठा ले तो भी इन काफिरो से बद ला लेना है।४१। फिर जव इन लोगों ने हमको गुस्सा दिलाया हमने इन से बदला लिया फिर इन सबको डुबो दिया ।५५। सूरे जखरुफ। आप सोचे कमजोरनाचीज इन्सान और अरबी खुदा की टक्कर का क्या मुकाबिला हो सकता है । फिर भी अरबी इस्लामी खुदा गैर मुस्लिमो से बदला चुकाने का दम भरता है कैसी नासमझी की वातखुदा के बारेमें लिखी गई है। कोई बलवान शरीफ आदमी भी बदले की भावना कमजोर से नही रखता है, पर अरबी खुदा बिना बदला लिये अपना दिल ठंडा नही कर पाताहै। खुदा गुस्सेबाज भी है यह भी मजे की बात कुरान में लिखी हैं। गुस्सा दिमागी बीमा री होती है जो कुरान के अनुसार खुदा पर हावी है। लार्ड ईसा मसीह ने फाँसी के तख्ते पर भी अपने पकड़बाने वालो के लिये क्षमा कर दिया था। विपक्षी मौलाना अपने खुदा का उन हस्तियो से क्या मुकाबिला कर सकता है। ! मौलाना। क्षमा कर ना वीरो का भूषण है वदला लेना कमजोरों की निशानो है। टक्कर वहादुर बरावर वालों से लेते हैं। खुदा इन्सान को अपनी बराबरी का अगर मानता है तो वधाई हैं आप के अरबी इन्सानी खुदा की और आप के कुरान को दोनो की सूझ बड़ी निराली है।

वास्तव में मजहवी किताबे बनाने वालों ने ईश्वर की पवित्र महान सत्ता को समझा ही नही था और इन्सानी कमजोरियों को उसे अपने जैसा मानकर उसमें आरोपित करा दिया है। परमेश्वर तो सभी का मित्र है सभी का सखा है सभी का पिता है सभी का

पालक है। वह विश्व के कणकण में व्यापक सर्वज्ञ सर्वेश्वर व सर्व शक्ति मान समदष्टा न्यायकारी घट घट व्यापी निष्पक्ष जीवों के स्वतन्त्रता पूर्वक किये कर्मो का न्याय पूर्वक व्यावस्थापक है। ईर्ष्या द्वेष बदला लेना पक्षपात क्रोध अल्पज्ञता एक देशीयपन आदि तो जीवों की बुराईया हैं। उनकी कल्पना परमेश्वर में करने वाली पुस्तकों को समझदार कोई भी व्यक्ति खुदाई रूप में मान्य नही कर सकता है। वास्तव में खुदा में इन्सानी बुराईयो गुस्सा वदला लेना मुकद्मा लड़ना आदि की कल्पना कुरान ने वाइविल से नकल की हैं उसकी अपनी नही है। कुरान बनाने वालो को उतनी समझ नही थी कि वह पूर्व पुस्तको की खराबियो को छोड़ देता उन्हें नकल न करता। कम अक्ल मौलाना। ईश्वर की सभी चीज संसार के लिये होती है। धूप व चांद की रौशनी हवा आदि प्रभु ने सभी के लिये एक जैसी प्रदान की है। बेदों का ज्ञान भी सभी के लिये बिना भेद भाव के दिया है। जैसे कानपुर–लखनऊ–दिल्ली, लाहोर लन्दन टोकियो तेहरान न्यूयार्क आदि स्थानो के प्रशासनो ने अपने यहाँ के लिये भिन्न २ कानून वना रखे है जो सँसार के सभी के लिये नही हैं,वेसे ही कुरान बाईबिल आदि ग्रन्थ अपने २ देश वालो के लिये समयानूकुल व्यवस्था वाले होने व विभिन्न मत वालो के लिये हौने से सँसार में मानव मात्र के लिये नही बने थे, और यह व्यवस्था तौरात, इज्जील व कुरान से स्वयं प्रमाणित है। कुरान का यह कहना है कि यह मक्का और उसके आस पास रहने वालो को डराने के लिये, बनाया गया था (देखो कुरान सूरे अनआम आयत९२ तथा सूरेशुअरा) इससे कुरान बनाने का उद्देश्य तथा उस का प्रचार क्षेत्र स्वयं सीमित सिद्ध हो जाता हैं। यह बात मुस्लिमो (कुरान मानने वाले) को हमेशा याद रखना चाहिये।

मौलाना। जिसके तुम अन्धमक्त वकील हो उस कुरान के उपदेश

का दुष्परिणाम करोड़ों शिया तथा कादियानी कुरान भक्त मुसलमानों को सुन्नी जमाअत के मुसलमानों द्वारा नित्य भोगना पड़ता है। शियाओं को मस्जिदों में सुन्नी और सुन्नियों की मस्जिदों में शियानमाज तक नही पढ़ सकते हैं। लाखों शिया व अहमदिया मुसलमानों को आपके सुन्नी फिरके वालो ने मौत के घाट उतार दिया है पाकिस्तान में आपकी सुन्नी लोगों की सरकार ने ५० लाख अहमदियों को मुसलमान तक मानना स्वीकार नही किया। उनकी मस्जिदें बरबाद कर दी बलवे करके उनको काट डाला गया जब कि वे कुरान को पढ़ते है, रोजा रखते, नमाज , पढ़ते मुस्लिम त्यौहारों को मानते हैं जकात देते हैं पच्च वक्ता खुदा की इबादत करते हैं, दाड़ी रखते व खतना कराते हैं, शरह के मुताबिक निकाह व तलाक करते हैं, जन्नत-दोजख-फरिश्तों और कयामत को मानते हैं कुरान में जो कि सच्चा मुसलमान होने की शर्त है। उनके माथे पर नमाज के दाग भी सिजदे के देखे जा सकते हैं जोकि जन्नत मिलने के खुदाई सर्टिफिकेट हैं, जैसा कि कुरान में खुदा ने जन्नत में जाने वालों की शनाख्त का पैटेन्ट मार्क माना है देखो प्रमाण "तू इन्हें (मुसलमानों को), सिजदा करते देखेगा खुदा की कृपा और खुशी चाहते हैं उनकी पहचान यह है कि सिजदे के निशान उनके माथे पर हैं। यही गुण उनके तौरात और इञ्जील में लिखे है"। सू फतह आ २९

वास्तव में कुरान से खुदा का यह दावा गलत है कि तौरात व इञ्जील में माथे के सिजदे के निशान का जिक्र है पर यह मौहर इस्लाम के सभी सम्प्रदायों के लोगों के माथे पर ज्यादातर देखी जा सकती है। इनमें भेद केवल मान्यता में अन्तर है सुन्नी मुहम्मद को अन्तिम पैगम्बर मानते हैं, कादयानी मौहम्मद के बाद गुलाम अहमद कादियानी को पैगम्बर मानते हैं। जैसे हिन्दुओं

में राम कृष्ण शिव, विष्णु आदि किसी के भी उपासक एक परिवार के रूप में रहते हुए अपनी मान्यता भिन्न—भिन्न रख सकते हैं और कभी इस आधार पर नही लड़ते हैं। जैसा भ्रात्र भाव सर्व धर्म समभाव हिन्दुओं में है वैसा इस्लाम में कतई नही है । वहां विचार स्वातन्त्र बिलकुल नही है और यह सब कुछ कुरान की ही शिक्षाओं का परिणाम है जो स्वयं मुसलमान भोग रहे हैं मुसलमानों का खूनी इतिहास मानव जाति पर सदैव उनके आक्रमणकारी होने का प्रमाण उपस्थित करता है जबकि भारतीय हिन्दुओं ने धर्म प्रचार व साम्राज्य लिप्सा में कभी अतीत में किसी देश या जाति पर अक्रमण नही किया। महान वैदिक धर्म की शिक्षा आत्म वत सर्व भूतेषु सभी प्राणियों को अपने ही सम न्समझने सभी को मित्र की द्रष्टि से देखने,संसार की कल्याण कामना करने,आत्म त्याग एवं परोपकार प्रिय बनने, विश्व बन्धुत्व "वसुधैव कुटुम्व—रूप की भावना रखने की रही है और इसी से भारतीय सदैव प्रेरणा लेते रहे है जबकि कुरान के अनुयायियों ने भारत के लाखों मन्दिरों का विध्वन्स करके यहां खून की नदियां अपनी मूर्खता से ग,जी बनने के लोभ में बहाई हैं । कुरान और भारतीय आर्य सभ्यता में यह मौलिक अन्तर है गत वर्ष सन१९८८में हुआ सम्भल मुरादाबाद में मुसलमानों द्वारा किया गया हिन्दुओं का कत्ल आम इसकी ताजा मिसाल है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाशनामी महान ग्रन्थ की रचना विश्व के सभी सम्प्रदायों में फंसे मनुष्यों के कल्याण के लिये जब की थी तभी से कट्टर पन्थी साम्प्रदायिक मुल्ला मौलवी, पादरी आदि ने उसके विरुद्ध विष वमन करने का आन्दोलन मचा रखा है अनेकानेक पुस्तकें इस ग्रन्थ के विरुद्ध प्रकाशित होती रही हैं। बड़े—बड़े शास्त्रार्थ आर्य विद्वानों के साथ

हुए हैं पर कभी भी कोई विपक्षी विद्वान शास्त्रार्थों में अथवा पुस्तकें लिख कर ऋषि की आलोचनाओं का उत्तर नही दे सका और न शास्त्रार्थों में आर्य विद्वान के सामने जम सका है। यह एक सर्व बिदित ऐतिहासिक तथ्य है। आर्य विद्वानों द्वारा विपक्षी पुस्तकों के जब तथ्य पूर्ण उत्तर दिये गये तो उनके जबाव में उन पर कलम उठाने तक का पुनः साहस किसी को कभी नहीं हो सका है।

हमने यह भी देखा है कि विपक्ष की ओर से यदि लेख लिखने का प्रयत्न किसी विद्वान ने किया हैं तो उसने सदैव ऋषि की मर्यादा का ध्यान रखते हुए ही लेख लिखे हैं किन्तु यदि किसी धूर्त व्यक्ति ने कलम उठाई है तो उसने अपने वंश एवं स्वभाव का प्रदर्शन गाली गलौज पूर्ण भाषा में किया है और इससे समझदार लोगों में वह सदैव घृणा व निन्दा का पात्र बना है।

इस्लाम मजहब कुरान शरीफ को खुदाई किताब मानता है और यह बताता है कि जिब्रील नाम के एक फरिश्ते के द्वारा कुरान की आदते खुदा अपने पास से हजरत मौहम्मद साहब के पाससमय समय पर भेजा करता था और वह संग्रहही कुरान शरीफ के नाम से प्रख्यात है। स्वयं ह मुहम्मद साहब सर्वथा वे पढ़े लिखे (अर्थात उम्मी) थे कुरान शरीफ में जो कुछ भी लिखा है वह सर्वथा सत्य है। इसमें बुद्धि विज्ञान विरुद्ध किसी भी प्रकार की कोई गलत बात नही है उसमें सर्व बधुत्व की भावना है, सभी उपदेश मानव के लिए कल्याणकारी है। स्वर्ग नरक आदि का जों भी वर्णन कुरान में है वह पूर्ण सत्य है। खुदा की जो व्याख्या इसमें है वह बुद्धि अनुकूल है। वह मनुष्य मात्र के लिए खुदाई पुस्तक है, इत्यादि मुसलमानों की मान्यता है ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने जहां सभी मत मतान्तरों को अन्ध विश्वास पूर्ण पुस्तकों व मान्यताओं की आलो-

चना निष्पक्ष भाव से सत्यार्थ प्रकाश में की है वहां इस्लाम के इस मान्य ग्रन्थ कुरान की भी बुद्धि पूर्वक १५६ स्थलों की समीक्षा उक्त ग्रन्थ के चौहदवें समुल्लास में दी है जिसमें कुरान के बुद्धि विरुद्ध तर्क विरुद्ध, विज्ञान, विरुद्ध सृष्टि नियम विरुद्ध अनेक स्थलों के मिथ्यात्व का पर्दाफ़ाश करके मुस्लिम जनता को अन्ध विश्वासों से मुक्ति पाने का मार्ग साफ कर दिया गया है इस समुल्लास को पढ़ कर लाखों समझदार मुसलमानों के विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं, लाखों मुसलमानों ने इस्लाम के स्थान पर वैदिक सिद्धान्तों की श्रेष्ठता को समझ कर वैदिक धर्म को ग्रहण किया है तथा सहस्त्रों मुस्लिम विद्वान कुरान को खुदाई किताब नही मानते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश के इस चमत्कारिक प्रभाव को देख कर अनेक द्वेषी क्षुद्राशय मुसलमान यदा कदा उसके विरुद्ध ऊट पटांग लेख लिखते व महर्षि के लिए अप शब्दों का प्रयोग करते भी देखे जाते हैं।

हाल ही में हमारे सामने एक पुस्तक मौ० अबू मौहम्मद इमामुद्दीन राम नगरी, वाराणसी उ० प्र० की लिखी हुई आई है। पुस्तक को देखने से ज्ञात हुआ कि लेखक को इस्लामी मान्यताओं की भी सही जानकारी नही है और न उसने कुरान को समझा ही है वह कुरान व इस्लाम का एक झूठा बकील बन बैठा है अथवा उसने जान बूझ कर सत्य को छिपा कर कुरान की वास्तविक स्थिति से जनता को गुमराह करने का प्रयत्न किया है उसे ऋषि दयानन्द से घोर द्वेष है और इसी लिए उसने सभ्यता को ताक में रख कर ऋषि के प्रति अपने दुष्ट हृदय को खोल कर रख दिया है। उसने जिस भाषा का प्रयोग किया है वह अत्यन्त घृणित व गाली गलौज पूर्ण है।

हम उसकी पुस्तक " सत्यार्थ प्रकाश का असत्यार्थ प्रकाश " मू० १-०० प्राप्ति स्थान—इस्लामी साहित्य सदन—राम नगर वाराणसी का उत्तर इस पुस्तक में देना प्रारम्भ करने से पहले कुरान व इस्लाम के मान्य ग्रन्थों से कुछ कुरानी मान्यताओं पर प्रकाश डालना उचित समझते हैं जिससे सभी को ऋषि दयानन्द की सत्यार्थ प्रकाश में दी गई आलोचनाओ को समझने में सुविधा हो सके और सभी समझ सके कि ऋषि दयानन्द व आर्य जन कुरान को खुदाई किताब क्यों नही मानते हैं ।

विपक्षी ने बार—वार यह आरोप लगाया है कि स्वामी जी ने कुरान के उद्धरण अनेक स्थानों पर पूरे नहो दिये । बीच के कही प्रारम्भ या अन्त के अंश व आयतें छोड़ कर अधूरे प्रमाण दिये हैं हमारा कहना है कि सिद्धान्त को प्रगट करने के लिये जितने अंश व आयतों की जहा आवश्यकता होती है वही उद्धरण लिए जाते हैं इसमें कोई गलती नही है । जैसे स्वयं विपक्षी ने अपनी पुस्तक के पृ० २७ पर "लाइक्राह फिद्दीन" सू २ आ २५६ का केवल जरासा अंश देकर अपना पक्ष प्रति पादन किया है पूरी आयत नही दी जो कि चार पंक्तियों की है । इस उद्धरण से मौलाना ने अपने आचरण से यह स्वीकार किया है कि उसने स्वामी जी पर मूर्खता पूर्ण आक्षेप इस विषय में किया है और स्वयं अधूरा अंश प्रमाणमें दिया है । अपनी उक्त पुस्तक में पृष्ठ ४ पर मौलाना कुरान की निम्न आयत लिख कर आर्य समाज की मान्यता त्रैतवाद (ईश्वर, जीव, प्रकृति की अनादि सत्ता) पर आक्षेप करते हुए हुए लिखता है—

" पृथ्वी और आकाश की सब वस्तुऐं ईश्वर की हैं, सब की सब उसकी आज्ञाकारी है वह आकाशों और पृथ्वी का अविष्कारक है वह जिस बात का निश्चय करता है उसके लिए केवल यह आज्ञा

देता है कि होजा और वह हो जाती है ।

(सूरे वकर आ०११६-११७)

हमारा कहना है कि यह आयत बुद्धि विरुद्ध एवं गलत है । केवल होजा कहने से कुछ नही हो सकता है । खुदा किससे होजा कहता था और कौन उसका हुक्म सुनता था, कौन क्या हो जाता था जब खुदा के अतिरिक्त दुनियाँ बनने से पहले कोई नही था तो क्या शुन्य को आदेश देता था ? खुदा का हुक्म देना ही बताता है कि उसके हुक्म को सुनने वाला जानदार जीवात्मा और बेजान माद्धा भी उसके साथ हमेशा से था और यही तीनों की अनादि सत्ता आर्य समाज का त्रैतवाद है । हमने आपके समीक्षा स्थल नं० ८८ में आगे बताया है कि कुरान का "होजा" वाला उक्त दावा भी कुराने पाक के विरुद्ध है, क्यों कि खुदा को दुनियां बनाने में ८दिन (८००० साल) का समय लग गया था और उसे अपने दोनों हाथों से कड़ी मेहनत इस काम में करनी पड़ी थीं तथा तौरात और कुरान के अनुसार काम होने के बाद उसने कहा था कि इतने पर भी हम नही थके ।

दूसरी बात भी उक्त आयत की सही नही है कि आकाश और पृथ्वी की सभी वस्तुऐं खुदा की आज्ञाकारी हैं । आज्ञाकारी वह होता है जिसमें जान और अक्ल होती है । बे जान आज्ञाकारी हुक्म उद्‌ली करने वाला नही होता है जो समझदार आज्ञा नहीं मानता है वह दोषी होता है । मौलाना ? कुरान की तो बातें ही अक्ल एवं विज्ञान के अनुकूल नही है । तुम उनका समर्थन करके गालियां देकर निज मूर्खता क्यों प्रगट करते हो । देखो कुरान शरीफ में लिखा है—

"और हमने दाऊद को अपनी तरफ से बढ़ाई दीं । ए पहाड़ों और परन्दों दाऊद के साथ रुज होकर (नमाज) पढ़ो और

दाऊद के लिए हमने लोहे को मुलायम कर दिया।

।। १० ।। सूरे सबा।

इसमें अरबी खुदा बन्द पक्षियों और पहाड़ों को नमाज पढ़ने का उपदेश व आज्ञा देते हैं मानो वे भी तुम्हारी ही तरह अक्लमन्द हैं और हुक्म का पालन कर सकेंगे। क्या पहाड़ झुक कर सीधे भी हो सकेंगे ? क्या वे मुलायम होते हैं ? कुरान में सूर हामीम सज्दह आयत ११ में खुदा साहब का जमीन और आसमान से खुशी से आने का सवाल करना और उन दोनों का खुशी से आने का जबाब देना लिखा है। कुरान सूरे जिलजाल आ०४ में लिखा है कि "जमीन खुदा को अपनी खबरें सुनायेंगी। सूरे अम्विया आ १०४ में लिखा है (खुदा ने कहा) जिस दिन हम आसमान को इस तरह लपेटेंगे जैसे तूमार में कागज लपेटते हैं कुरान सूरे फुर्कान आ०६१में लिखा है बड़ी बरकत है उसकी जिसने आसमान में बुर्ज बनाये"आप अपने सारे उल्माये कुरान की मदद लेकर खुदा के इस बिज्ञान को खुलासा करके दिखावें। जहां सैकड़ों विज्ञान बिरुद्ध ऐसी - ऐसी काबिले तारीफ कुरान में बाते लिखी हैं बहां स्वामी जी ने चन्द नमूने आपके बिलक्षण इलहाम के दुनियां को यदि दिखा दिये तो बुरा क्या कियाहै ? आप चिढ़ते क्यों हैं ? क्या खुदा की बातों को प्रगट करना भी गुनाह है ?

आपने लिखा है कि सनातन धर्म इस्लाम के ज्यादा निकट है। आप लोग सनातन धर्मी हिन्दुओं के मन्दिर तोड़ना, मूर्तियों को ध्वस्त करना, गौ की हत्या करना धर्म समझते हैं जबकि वे उनकी पूजा व आदर करते हैं। आप लोग कसमे खाकर मुकर जाना उन्हें तोड़ना पाप नहीं मानते हिन्दू बचन पालन करना धर्म समझते हैं। 'प्राण जायं पर बचन न जाही' हम हिन्दुओं का आदर्श रहा है। सनातनी अहिंसा परमो धर्म को मानते हैं आप

लोग जरूरत के वक्त सुअर को भी मार कर खाने में पाप नहीं समझते हैं। [देखो सूरे बकर आ० १७३] तब आप और वे निकट कैसे हुए ! हाँ एक बात में कुछ एकता हैं वह यह कि वे शिव लिंग पर दूर से पानी डालते हैं । और आप शिव लिंग (संगे अस्वद) को चूसना या उसका बोसा लेना धर्म मानते हैं। इसके अतिरिक्त हर बात आपकी उनसे उल्टी ही है । सूरते यूनिस आयत ३७ में कहा गया हैं कि कुरान शरीफ तौरात जबूर और इञ्जील इन पुरानी किताबों की व्याख्या (तफसील) मात्र है फिर भी हम देखते हैं कि उसमें अनेक स्थल उन में से नकल किए गये हैं अनेक स्थल उनके विरुद्ध भी लिखें गये हैं। कुरान में बार—बार अनेक आयतेखारिज कीं गई है अनेक आयतें निकाल कर उनके स्थान परनई आयतें लिखी गई हैं अतः अनेक दृष्टियों से कुरान की प्रमाणिकता स्वीकार नही की जा सकती है कि वह इलेहाम है। इस विषय में विशेष जानने के लिए कुरान दर्पण का प्रथम अध्याय 'कुरान में परिवर्तन' नाम की तथा 'कुरान की छान बीन' ग्रन्थ देखें। स्पष्ट है कि वर्तमान कुरान वहीं नहीं है जो पहिली ही बार में उतरा या बना था। यह संशोधित है ।

मौलाना अबू साहब ? सत्यार्थ प्रकाश में कुरान के १५६ स्थलों की समीक्षा की गई है पर आपने उनमें से केवल २५ स्थलों पर ही उल्टी कलम क्यों चलाई हे ? इसके अर्थ हैं कि शेष १३४ की समीक्षा स्वामी दयानन्द जी की आपने बिना कान पूंछ हिलाये सर झुका कर सत्य स्वीकार कर लीं है। अपने उन २५ स्थलों को भी क्रम बार न लेकर बीच—बीच में से लेकर कागज काले किये हैं, पर जवाब एक भी समीक्षा का न बन सका है। गालियां देकर अपने दिल की भड़ास अवश्य निकाल कर अपनी मूर्खता प्रगट कर दी हैं। आपके अरबी खुदा ने कुरान से सुरते आल—

इमरान आ१ २० व सुरते जुमा आ० २ में भी आपकी ही तरह लोगों को गालियां देकर जिस अरबी सभ्यता को प्रगट किया हैं ? वही आपने भी कराके दिखाया आपको भी खुदा की ही तरह अपने दिलो दिमाग पर काबू नही रहता है। क्या यही इस्लामी सभ्यता है और यही इस्लाम का सर्व धर्म समभाव है ? हम सादर आपकी सभी गालियां ज्यों को त्यों आपको वापिस करते हैं। और आपसे निवेदन करते हैं कि जरा आप उनको अपने मान्य पैगम्बरों के लिए इस्तेमाल करके वेखें और अनुभव करें कि तब आपका दिल कितना खुश होगा। गालियां देने से आप इस्लाम या कुरान के लिए यश अर्जन नही करेंगे किन्तु उन्हें बदनाम ही करेंगे।

अगर आप में आपके गिरोह के किसी उलमा में कुरान की योग्यता हों तो हमारी इस पुस्तक का उत्तर प्रकाशित करके कुरान की मान्यताओं पर हमारी शंकाओं का निवारण करने का साहस दिखाने का हमारा चैलेन्ज स्वीकार करें। हम आपको एक वात यहाँ और स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि आपकी गन्दी पुस्तक के जवाब में लिखित इस पुस्तक में हमारे ऐतराजात कुरान के खुदाई होने को मान्यता पर व उसके सिद्धान्त पर है। हम कभी ह०मौह-म्मद साहब कुरान शरीफ या उनकी शान के खिलाफ कोई शब्द न तों इस्तैमाल करते हैं और न करेंगे। हम समझते हैं कि सभी महा पुरुषों व सभी धर्म ग्रन्थों का सम्मान सभी को करना चाहिए पर उनकी मान्यताओं से मत भेद होने पर उनकी समीक्षा सभ्य भाषा में करना उन पर विचार प्रगट करना भी सभी का अधि-कार है। आंख बन्द करके किसी की भी बात को मान लेना आप लोगों की तरह गलत समझते हैं। इसी द्रष्टि कोण के आधार पर हम आपकी गाली गलौज पूर्ण असभ्य पुस्तक का उत्तर कुरान

के ही प्रमाणों से देते समय ह० मौहम्मद साहब ब आपके मान्य कुराने पाक के लिए आपकी तरह अप शब्दों का प्रयोग नही करेंगे भविष्य में आप भी कलम उठाते समय सावधानी रखें गो उत्तम होगा। वरना याद रखें हम ईट का जबाब पत्थर से देना भी जानते हैं।

हमारी द्रष्टि में कुरान खुदाई किताबक्यों नही है

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज उनका स्थापित आर्य समाज तथा उनके अनुयायी हम आर्य लोग पवित्र कुरान शरीफ को खुदाई किताब क्यों नहीं मानते हैं, इसके लिए हम कुरान की ही अन्तः साक्षी यहां उपस्थित करते हैं।

कुरान की सर्व प्रथम सूरते बकर आयत १ में लिखा है—

बिस्मिल्लाह रहमानिर्र हीम। अलिफ लाम मीम ॥

अर्थात्— शुरु साथ नाम अल्लाह के जो निहायत दयाबान मेहरबान हैं"।

इसमें आगे अलिफ लाम मीम का अर्थ कोई कुरान टीका कार नही करता है। अरबी ब्याकरण के अनुसार लाम अक्षर वाउ में बदल जाता है और तब अलिफ और बाउ मिलकर 'ओ' बन जाता है तथा मीम मिलाने से ओम शब्द बन जाता है। इस प्रकार आयत का अर्थ बनता है—

"शुरू करता हुं ओम नाम बाले अल्लाह के नाम के साथ जो निहायत दयावान मेहरबान है।" यदि कुरान खुदाई होता तो वाक्य होता" शुरू अपने ओम नाम के साथ जो निहायत दयाबान मेहरबान हूं" किन्तु ऐसा नही है, स्पष्ट है कि अल्लाह के ओम नाम के साथ कुरान लिखना शुरू करने बाला खुदा से पृथक कोई अन्य व्यक्ति है, चाहे वह ह० मौहम्मद साहब हों या कोई अन्य आदमी हो। अतः कुरान खूदाई नही है।

ठीक यही बात कुरान में अन्यत्र दी गई निम्न आयतों से भी स्पष्ट है—

"खुदा की कसम तुमसे पहिले हमने बहुत सी उम्मतों की तरफ पैगम्बर भेजें"।

॥ कु० पा० १४ सु० नहल रू ८ आ०६३ ॥

"तेरे परवर्दिगार की कसम कि हम इन सबसे पूंछेगे—

॥ कू० पा० १४ सू० हिज ह ६ आ० ६२ ॥

इन दोनों आयतों में खुदा की कसम खाने वाला कोई दूसरा खुदा है या आदमी है जो कुरान का लेखक है। इसका अर्थ है कि इस्लाम दो खुदा मानता है एक खुदा नहीं।

ऐ मौहम्मद। खुदा तुझको माफ करे। तूने क्यों इनको इस लड़ाई में न जाने का हुक्म दिया.....।

॥ कु० पा० १०सूरे तोवा हक ७ आ०४३ ॥

कुरान की यह आयत भी खुदा की लिखी नहीं है अथवा दो खुदा स्पष्ट हैं। एक बड़ा दूसरा छोटा खुदा—

" खुदा इनको गारत करे। किधर को भटके चले जा रहे हैं"

[कु० पा० ६० सूरे तौबाह ५ आ० ३०]

खुदा के सिवाय किसी की पूजा मत करो मैं उसीं की ओर से तुमको डराता और खुश खबरी सुनाता हूं।

[कु० पा० ११ सु० हदह १ आ० २]

उपरोक्त प्रमाणों से यह स्पष्ट है कि कुरान खुदा का लिखा नहीं है। उसका लेखक खुदा से जुदा कोई अन्य व्यक्ति खुदा की ओर से लोगों को डराता खुश खबरी सुनाता है खुदा से लोगों को गारित करने की प्रार्थना करता है।

मैं तो पूरब और पश्चिम के परवर्दिगार की कसम खाता हूं.....।

[कु०पा०२६ सूरे मआरिज आ४०]

इस आयत में खुदा की कसम खाने बाला कुरान बनाने बाला खुदा से दूसरा आदमी कुरान का लेखक स्पष्ट है जो अपने से ऊंची हस्ती वाले खुदा की कसम खाता है।

कुरान में प्रक्षेप हैं या नही यह तो हम नहीं कहते पर आयतें बहुत सी बदल—बदल लिखी गई है जैसा कि कुरान सूरते बकर आ० १०६ में लिखा है हम कोई आयत मंसूख कर दें या बुद्धि से उतार दें तो उससे अच्छी या वैसा ही पहुँचा देते हैं।

इससे खुदा की कमजोरी व कुरान में परिवर्तन तो स्पष्ट है इसके अलावा आपके मान्य सुन्नी कुरान में केवल तोस सिपारे हैं जब कि शिया लोग ४० सिपारे उसमें मानते हैं। पटना की खुदा बख्श लाइ बरेरी में आज भी ४० सियारे का कुरान आपजा कर देख सकते हैं। अतः स्पष्ट है कि आपका मान्य कुरान संशोधित एवं अधूरा तो हैं ही। आप इसे फिर भी पूर्ण मानते हैं तो यह आपकी हठ धर्मी, है।

स्वामी जी ने जो कुरान के तर्जुमों को पेश किया हैं इसमें और किसी भी मौलवी के तर्जुमा में कोई अन्तर नही हे। केवल शैली व शब्द भेद हैं जो हर कुरान की भाषा में जो मौल वियों ने किये हैं आज भी विद्यमान हैं। हमारे पास चार प्रकार के तर्जुमा कूरान है। असलियत हम जानतें हैं, आप नहो जानते। क्यों कि आपने पूरा कुरान भी नही पढ़ा व समझा है। स्वामी जी की समीक्षा, सद् भावना पूर्ण सत्य स्पष्ट और सभी को मार्ग दर्शक है। आप जैसे गुमराहों की बात दूसरी है जो कुरान को नही समझ पाते हैं।

आपने वैदिक धर्म के चन्द सिद्धान्तों पर भी कलम चलाने का कुछ दुःसाहस किया है जिसके आप अधिकारी नहीं हैं। वैदिक सिद्धान्तों की बारीकियों व दार्शनिक तथ्यों को आप जैसे

मुर्गा का रज वीर्य (अण्डा) पखाना पेशाव बनाने वाली मशीन जीवों का गोश्त खाने बाले समझ भी नहीं सकते हैं। कभी आपके बुजुर्ग जो हिन्दू थे इन बातों को करोड़ों बर्षो से समझते आ रहे थे। कुछ दशाब्दियों यशाताब्दियों पूर्व मार—मार कर मुसलमान बना लिये गये आप लोग जो कुरान द्वारा अरबी सभ्यता के मार्ग पर ड ले जा चुके है वह जब तक आप सात्विक मस्तिष्क के नहीं बन सकेंगे हिन्दू धर्म के गौरव पूर्ण मन्तब्यों के दार्शनिक रहस्यों को समझने की योग्यता प्राप्त नही कर सकेंगे आप किसी आर्य विद्वान की सेवा में बैठ कर एवं बुद्धि को शुद्ध कराके वैदिक सिद्धान्तों को समझ लेवें तो उपयुक्त रहेगा पुनर्जन्म पर पं० लेखराम जी कृत पुस्तक पढ़ कर आप रोशनी प्राप्त कर लें आपकी शकायें मिट जावेगीं। स्वामी जी ने कुरान की आयतों के जो अर्थ समीक्षा में सप्रा में दिए हैं वे ही अर्थ सभी कुरान भाष्यकारों ने किए हैं। अत: उन अर्थो को गलत कहना आपकी व्यर्थ की वकबास मात्र है। आप एक भी अर्थ को गलत सावित नही कर सकते हैं और न कभी कर ही सकेंगे।

मौलाना का कुरान के बारे में लिखना "मुसलमान विद्वान तक इस ज्ञान समुद्र की थाह न पा सके हैं, स्वामी जी किस गिनती में हैं"। सर्वथा मूर्खता पूर्ण दावा है। हमारी इसी पुस्तको पढ़ने पर उसे पता लग जावेगा कि कुरान समुद्र है, झील है अथवा क्या है। अन्ध विश्वासी है इस्लामी धर्म के मामले में भोले भाले मुसलमानों को तुम्हारे जैसे ही कठमुल्लाओं ने गुमराह कर रखा है तुम ज्ञान विज्ञान सेउतना ही दूर हो जितना तुम्हारा अरबी खुदा हमारी जमीन से दूर रहता है! खुदा की दूरी के बारे में कुरान में सूरे मआरिज में लिखा है—

"खुदा के मुकाविले में जो सीढ़ियों का मालिक है [३] इनसे फरिश्ते और रुह उसकी तरफ एक दिन में आसमान चढ़ ते

और उसका अन्दाज ५० वर्ष का है"— इसमें चढ़ने की रफ्तार नही बताई गई है पर खुदा की ऊचाई के बारे में यह तो खुलासा है कि आपका अरबी खुदा और हमारी जमीन में बेहद दूरी है। इसी तरह ज्ञान की दूरी विपक्षी मौलाना से है। यह खुदा जमीन वालों के लिए बिल कुल परदेशी है, क्यों कि वह जमीन से दूर जन्नत में कही रहता है, यहाँ नही रहता है। जैसे हमारे यहां के डिप्टी लोग दौरा लगाया करते हैं वैसे ही जन्नतशीन खुदा भी कभी—कभी इस जमीन पर आया जाया करता है। इसके प्रमाण तौरात व कुरान में मौजूद है पढ़ कर देख लेवें—

कुरान शरीफ को केवल कलामे इलाही भी मानना संभव नही है, क्यों कि उसमें कलामे शैतान, कलामे इसाह, कलामे यूसुफ कलामे काफिरान आदि अनेकों की कही हुई आयतों का भी समावेश है अतः वह केवल कलामे इलाही न होकर मिश्रित कलामों का संग्रह है।

गत पृष्ठों में कुरान के हलहाम न होने के अनेक प्रमाण उपस्लिति किये जा जा चुके हैं। इसीं सम्बन्ध में निम्न प्रमाण और भी कुरान के दर्शनीय हैं। हम निम्न तर्जुमा मौलाना अहमद बशीर साहब एम० ए० कामिल, दबीर कामिल, मौलबी का कुरान से पेश करते हैं। कु० पा० २८ सूरते हशर आ० २१ में लिखा हैं। ऐ पैगम्बर ? अगर हमने यह कुरान किसी पहाड़ पर उतारा होता तो तू देखता कि वह खुदा के डरके मारे झुक गया होता और फट गया होता। हम यह मिसाल लोगों के लिये बयान फरमाते है ताकि बह सोचे.....।" कुरान पारा १३ सू० राद आ ३१ में लिखा है.....और अगर कोई कुरान ऐसा होता जिससे पहाड़ चलने लगते या उससे जमीन के टुकड़े हो सकते या उससे मुर्दे जी उठें और बोलने लगें तो वह यहीं होता।"

कुरान के भाष्य कार स्पष्ट घोषित करते हैं कि जिस कुरान

से पहाड़ चलने लगें और जमीन के टुकड़े हो सकते हैं । और मुर्दे जिन्दा होकर बोलने लग सकते हैं । वही खुदाई असली कुरान होगा इस कसौटी पर अलिमाने कुरान मौजूदा कुरान शरीफ को प्रत्यक्ष सत्य सावित करके दिखावें उसमें मुर्दा जिन्दा करें। अन्यथा वह खुदाई सावित नही होगा । कुछ लोग इन आयतों का अर्थ बदलने का प्रयत्न करते हैं वे कहते हैं कि सुरते हशर की आयत का अर्थ खुदा के डर से पहाड़ फटना है, न कि कुरान के प्रभाव से । किन्तु यह अर्थ और भी गलत होगा क्यों कि जड़ पहाड़ का किसी से या खुदा से डरना बताना हो कम अक्ली की बात है । डरना जानदार समझदार का होता है न कि पत्थर या पहाड़ का । अतः यही अर्थ बनता है कि यदि यह कुरान असली होता तो इस कुरान के पहाड़ पर उतारने या उस पर रखने पर वह झुक या फट जाता । और यही अर्थ सूरते राद की आयत से संगत बैठता जिससे कुरान से जमीन के टुकड़े होना पहाड़ फटना, व मुर्दे जिन्दा होना माना है। इस मौलाना की यह संगति भी गलत है कि "खुदा ने कहा है कि यदि कोई कुरान ऐसा होता जिससे यह तीनों बातें हो जाती तो भी लोग उस पर ईमान नही लाते । यदि ऐसा चमत्कारिक कोई कुरान या नुस्खाखुदा पैदा कर सकता या दुनियां को दे देता तो उस चमत्कार के सामने विश्व सर झुका कर उसे मान लेता । जब वैसा कुरान खुदा के पास नही हैं या वैसा कुरान खुदा बना ही नही सका तो उसके बारे में बेकार की दलील कसौटी उक्त आयत में क्यों पेश करता । अतः सावित हुआ कि दोनों आयतो का अर्थ एक ही है जो अहमद बशीर साहब के तर्जुमे से स्पष्ट हैं और असली नकली कुरान को जाचने की वही सच्ची कसौटी है ।

इसके अतिरिक्त खुदाई पुस्तक में विज्ञान के विरुद्ध वर्णन नही होना चाहिए जैसा कि मौजूदा कुरान में मिलता है जो सचाई से दूर है—

गुरु विरजानन्द दण्ड...
सन्दर्भ 801
परिग्रहण क्रमांक ......
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

१- खुदा ने आसमान में बुर्ज बनाये [सूरते फुर्कान]
२- आसमान में ओलों के पहाड़ जमे हुए हैं । [सु नूर आ ४३]
३- असमान जमीन पर गिरने से थमा है मगर उसके हुक्म से ।
[सू हज्ज आ ६५]
४- खुदा ने आसमान टटोला तो अंगारों और सख्त चौकीदारों से भरा पाया । [सु जिल्ला]

"आसमान कीं खाल खीची जायेगीं" [सू तकवीर आ० ११]
"आसमान कागज की तरह लपेटा जायेगा"[सू अम्बिया आ१०४]
"आसमान और सव लोग खुदा के सामने निकल कर खड़े होंगे ।
[सू० इब्राहीम ४८]
"पहाड़ चलने लगेंगे" [सू० तूर आ० १०]
"आसमान फट जायेगा" [सू० हक्का आ० १६]
"जब पहाड़ उड़ाये जायेंगे" [सू०मुर्सलात आ० १०]
"जिस वक्त आसमान की खाल खीची जायेगी ।
[सू० तकवीर आ११]

"जब आसमान फट जायगा (१) और अपने परवर्दिगार की बात सुनेगा और यह उसका फर्ज ही है (२) और जब जमीन तान दी जावेगी । और जो कुछ उसमें है वाहर डाल देगी और खाली हो जावेगी (४) और अपने परिवर्दिगार की बात सुनेगी, यह तो उसका फ़र्ज ही है" ।
[सू० इन्शिकाक]

आसमान फट कर दरबाजे—दरबाजे हो जायेंगे ।
[सु० नबा आ० १९]

"उसी दिन (जमीन) अपनी खबरें सुनायेगी"
[सू० जिल्जाल आ० ४]

हम ही ने जमीन में पहाड़ रखे ताकि लोगों को लेकर झुक न पड़े (कु० ९०१) (सूरे अम्बिया आ ६५) और हमने आसमानों को

को बाहुबल से बनाया (४७) [सूरे जरियात] क्या हमने जमीन को फर्श (६) और पहाड़ों को मेखें बनाया (७)

[सूरे नवा पा ३०]

"अल्लाह ने जमीन आसमान को थाम रखा है कि टल न जाये"

[पा० २२ सूरे फातिर ४१]

मरियम की शर्म गाह ये रुह फूंक कर मसीह पैदा किये गये ।

[सू अम्बिया आ० ९१]

कुरान पाक के उपरोक्त स्थल देख कर सभी विद्वान सोचें कि क्या यह सारी बातें जो कुरान में लिखीं हैं खुदा की कही हो सकती हैं ? आसमान की खाल खींचना, उसका फाड़ा जाना आसमान का खुदा से बातें करना उसके टुकड़े हो जाना, उसे बाहुबल से बनाया जाना कितनी ना समझी की बात है जब कि आसमान शून्य है वह कोई जानवर या पदार्थ नहीं है जो उसकी खाल खींची जावेगी । पहाड़ जमीन में नीचे से ऊपर को उभर कर बनते हैं जबकि मेखें या कोई भी ठोंकी या गाढ़ी जाने वाली वस्तु जमीन से पृथक होती है जो ऊपर से गाढ़ी जाती है । जमीन पहाड़ों की वजह से लुढ़कने से रुकी है यह बात भी खुदा बन्द करीम साहब ने विलक्षण ही कही हैं । कयामत के दिन जमींन के अन्दर की सभी चीजें अलग—अलग हो जावेगी तो जमीन नाम की कोई चीज ही खुदा को बात सुनाने को बाकी न बचेंगीं फिर खुदा किससे बाते करेगा ? ऐसी सैकड़ों ज्ञान विज्ञान बिरुद्ध बातें कुरान शरीफ में लिखी हैं जिससे हम लोग उसे खुदाई नही मानते हैं । आप माने तो मानते रहे आप स्वतन्त्र हैं ।

संसार के सभी मतवाले ईश्वर को नित्य सर्वज्ञ मानते हैं । कोई भी यह नही मानता कि ईश्वर से कोई भी बात छिप सकती

है। वह सर्व व्यापक घट—घट वासी एवं सर्वज्ञ है। किन्तु केवल आपका ही ऐसा सम्प्रदाय है जिसके मान्य ग्रन्थ कुरान में अनेक स्थलों पर उसे अल्पज्ञ अर्थात सब कुछ न जानने वाला घोषित किया है। वह लोगों के दिलों की बात भी नही जान सकता है। चन्द प्रमाण इसके लिये कुरान के उपस्थिति किये जाते हैं। गौर से देखें—

१– खुदा ने कहा "फिर कई वर्ष के लिए हमने गुफा में उनके कान थपक दिए (११) फिर हमने उनको उठाया ताकि हम देख लें कि दो गिरोहों में किसको ठहरने की अवधि याद है"।

[कु पा १५ सूरे कहफ आ १२]

२– (कयामत के दिन खुदा) "दोजख से पूछेगा कि तू भर चुका वह कहेगा क्या कुछ और भी है" ?

[कु० पा २६ सू० काफ रु० ३ आ २९]

३– A ऐ पैगम्बर। मुसलमानों को लड़ने पर उत्तेजित करो कि अगर तुम में जमे रहने वाले बीस भी होंगे तो दो सौ पर ज्यादा ताकत वर बैठेंगे। अगर तुममें से सौ होंगे तो हजार काफिरों पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे क्यों कि यह ऐसे लोग जो समझते ही नही"।

(सूरे अनफाल रु ९ आ ६५)

B– अब खुदा ने तुम पर से अपने (पहले) हुक्म का बोझ हल्का कर दिया और उसने देखा कि तुम में कमजोरी है तो अगर तुममें से जमे रहने वाले सौ होंगे तो दो सौ पर ज्यादा ताकत वर होंगे और अगर तुम में से हजार होंगे खुदा के हुक्म से वह दो हजार पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे। अल्लाह उन लोगों का साथी है जो जमे रहते हैं"।

(क० पा १० सूरे अनफाल रु० आ ६६)

इन चन्द प्रमाणों से स्पष्ट है कि कुरान के अनुसार खुदा लोगों के दिल की कमजोरी उनके दिमागों की बातें भी नही जान पाता है और धोखा भी खा जाता है । बाद को अपनी गलती मालूम करके अपने हुक्मों में परिबर्तन करता रहता है । सर्वज्ञ ईश्वर की पवित्र सत्ता (हस्ती) को दोष लगाने वाली पुस्तक को आर्य विद्वान कभी खुदाई किताब नहीं मान सकते हैं । आप जैसे अन्ध विश्वासी मौलवी लोगों की बात दूसरी है जो अपनी अक्ल पर ताला लगाये फिरते है कुरान में एक मिसाल खुदा की अल्पज्ञता की ओर भी देख लें—

कु पा १ सूरते बकर रु० ८ आ ७१ में लिखा है—)

(मूसा ने कहा) खुदा फर्माता है....." गरज उन्होंने गाय हलाल की और "उनसे उम्मेद न थी" कि (गाय हलाल) करेंगे" । इसमें भी खुदा की ना तजुर्बेकारी स्पष्ट है वह आगे की बात भी न जान सका था ।

डियर मिस्टर मौलाना साहब । अब आप समझे कि हम या ऋषि दयानन्द जी महाराज कुरान को खुदाई किताब क्यों नहीं मानते है तथा आपके अरबी हल्के के इस्लाम परस्त कुरानी खुदा को वास्तविक ईश्वर क्यों स्वीकार नहीं करते हैं ?

क्या अरबी खुदा शान्ति पसन्द था ?

अब हम आपको कुरान पाक से यह दिखाते हैं कि अरबी खुदा शन्ति पसन्द नही था, वह झगड़ा फिसाद पसन्द था तथा अशान्ति कराता था । कु पा ८ सूरे अनआम रु १५ आ १२३ में कुरानी खुदा कहता है—

"और इसी तरह हमने हर बस्ती में बड़े—बड़े अपराधी पैदा किये **"ताकि वहां फिसाद करते रहें"** । और जो फसाद वह करते हैं आपकी ही जानों के लिए करते हैं और नहीं समझते हैं ।

इस प्रमाण से स्पष्ट है कि खूदा दुनियां में यदि शन्ति व प्र म पसन्द करता तो फिसादी लोगों बदमाशों लुटेरों व गुन्डों को पैदा ही न करता। उसने केवल फसाद पैदा करने के ही लिए बदमाश पैदा किए हैं और उनका काम खुदा के हुक्म को पालना व फसाद पैदा करना ही होता है। यदि वे बेसा गुन्डापन न करेंगे ती खूदा उनको कोड़ों से मार लगावेगा। भला खूदा के हुक्म फसाद करने को वह टाल कैसे सकते हैं जो कुरान के अनुसार यह वाक्य किसी और ने नही कहे वल्कि स्वयं खूदा के हैं जों वास्तविकता पर आधारित है। इसमें 'ताकि' शब्द गुन्डे पैदा करने के उद्देश्य को स्पष्ट करता है। आप यह नही कह सकते कि जैसा खुदा सबको पैदा करता है वैसे ही गुन्डों को भी पैदा करता हे। यदि यह वाक्य किसी अन्य ने कहा होता तब आप उक्त बहाना कर सकते थे आपके कुरान से ही अब हम गुन्डे फसादियो को काफिरों क सुनाफिकों को पैदा करने का खुदा का एक और उद्देश्य दिखाते हैं—

कु०पा० ९ सू आराफ रु २२ आ १७९ में खुदा कहता है—

"और हमने बहुतेरे ज़िन्न और मनुष्य दोजख के ही लिए पैदा किये हैं उनके दिल तो हैं उनसे समझते का काम नही लेते"।

"तुम्हारे परवदिगार का कहा हुआ पूरा हो कि हम जिन्नें और आदमियों सबसे दोजख भर देंगे"।

[कु० पा० १२ सू० हूद रु १० आ ११९]

इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि खुदा को दोजख भरने के लिए ही जिन्नों व आदमियों को पैदा करना पड़ा था। कोई अन्य उद्देश्य उनको पैदा करने का न था। खुदा ने अपनी बात को नीचे की आयतों में और भी स्पष्ट किया है—

"जिनको खुदा राह दे सच्चे वही रास्ते पर हैं और जिसको वह गुमराह करे तो फिर तुम कोई उसको राह पर लाने वाला न पाओगे"।

[कु० पा० १६ सू० कहफ रु २ आ १७]

"खुदा चाहता तो (तुम) को एक ही गिरोह बना देता मगर वह जिसको चाहता है गुमराह करता है ओर जिसको चाहता है सुझाता है....."।

[कु० पा० १३ सू० नहल रु१३ आ ९३]

"उसी ने एक गिरोह को हिदायत दी और एक गिरोह को भटका दिया" पा ८ सु आराफ रु ३/३० (खुदा ने कहा) "फिर हम उनके आपस में फूट डाल देंगे"।

[कु० पा० ११ सू० यूनिस रु ३ आ २८]

इनमें ऐसे भीं हैं कि तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं और उनके दिलों पर हमने पर्दे डाल दिये। इनके कानों में बोझ हैं ताकि तुम्हारी बात न समझ सकें।

[कु० पा० ७ सू० अनआस रु०३ २५]

"खुदा जिसको चाहे उसे भटका दे और जिसे चाहे उसे सीधे रास्ते पर लगा दें"।

[सु० अनआम आ ३९]

उपरोक्त सारी आयतें खुदा की कही मानी जाती है। हम यदि इनको न माने तो उसका मतलब होगा कि हमें खुदा को गलत मानना पड़ेगा यदि खुदा सच्चा हैं तो इसका अर्थ हुआ कि मनुष्यों को गुमराह करना, उन्हें गुन्डे बनाना, उन्हें फिसादी बनाना उन्हें काफिर बनाना, उनके कानों व दिल दिमाग पर मौहर

(सील) कर देना ताकि वे नेक न बन सकें यह सब खुदा की ही शराफत है और वह भी इस लिए कि उसने दोजख को भरने की कसम खा रखी है उसे पूरी करना है यदि वह ऐसा न करता तो उसका दोजख भरने का वायदा झूठा पड़ जाता। तब बिना वजह लोगों पर जुल्म करना, गुन्डों से दुनिया में फिसाद फैलाने वाला होने से और स्वयं अपनी गलत कार गुजारियों का गर्व के साथ कुरान में बयान करने से ऐसे अन्याय पसन्द खुदा को हम लोग दुनियां का रक्षक व पिता के समान सबका कल्याण चाहने वाला ईश्वर कैसे मान सक्ते हैं आप ही सोचें—

नोट— इस्लाम जीवों को कर्म करने में स्वतन्त्र नही मानता है। जैसा खुदा ने जिसकी तकदीर में लिख दिया वैसा ही करने पर जीव विवश होते हैं।

खुदा का विचित्र न्याय

कुरान में झूठी कस्में मुसलमानों को खाने का प्रोत्साहन खुदा ने दिया है यथा (खुदा ने कहा) तुम्हारी फिजूल कस्मों पर खुदा तुमको नहीं पकड़ेगा। लेकिन उनको पकेड़ेगा जो तुम्हारे दिलो इरादे हो। और अल्लाहवख्श ने वाला, और वर्दाश्त करने वाला है।

[कु पा सूरे बकर रु २८ आ २२५]

तुम लोगों के लिए खुदा ने तुम्हारी कस्मों को तोड़ डालने का भी हुक्म रखा है"।

[कु सूरे तहरीम आ २]

"तुम्हारी वे फायदा कस्मों पर खुदा नही पकड़ेगा, हां पक्की कसम खा लो तो खुदा पकड़ेगा, सो इस पाप की शान्ति के लिए दस भूखों को मामूली भोजन खिला डेना.....".

[कु पा७ सूरे मायदा रु१२ आ८९]

ऊपर दो स्थानों पर खुदा ने झूठी कसमों पर मुसलमानों को क्षमा प्रदान कर दी है ओर उसे पाप नही माना है। हां यदि कोई पक्की कसम खा ले और उसे तोडे तो उसका प्रायश्चित भीं बता दिया है। कोई कुरान परस्त जो कसम खाता है वह सच्ची है या झूठी इसकी क्या कसौटी होगी यह कुरान ने नही बताई है।

अब हम कुरान के चन्द परस्पर विरोधी स्थल दिखाते हैं जिनमें खुदा की अपनीं ही कहीं बातों का काट स्वयं हो जाता है जबकि किसी भी समझदार आदमी की लिखी किताव में परस्पर विरोधी कथन नही मिलेंगे।

कुरान के बहुत से परस्पर विरोधी स्थलों में से चन्द स्थल

[विशेष प्रमाण कुरान की छान बीन पुस्तक में देखें]

निम्न लिखित बिषयों पर कुरान में परस्पर विरोधी आयतें स्पष्ट हैं जो प्रगट करती है कि कुरान खुदा का बनाया या उतारा हुआ नही है—

पक्ष १— और जिस वक्त दरिया पाट दिये जायें ६ [सू तकवीर]

बिरोध— और जब नदियाँवह चलें (३) [सू इन्फितार]

पक्ष २— और नेकी और वदी वराबर नही बुराई का बदला अच्छे वर्ताव से दें………। (३४) [सु हामीम सज्दह]

बिरोध— जो मनुष्य अल्लाह का दुश्मन हो और उसके फरिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्रील का और मीका-एल का तो अल्लाह भी ऐसे काफिरों का दुश्मन है"।

[८९ सू वकर ह १२]

"और हमने इनके आपस में दुश्मनी और ईर्षा कयामत तक डाल दी है.....। (६४ सू मायदा)

"अल्लाह काफिरों को नसीहत नहीं दिया करता"।

(सू बकर आ २६४)

"अगर सख्ती भी करो तो वैसी ही सख्ती करो जैसी तुम्हारे साथ की गई हो....."।

(१२५ सू नहल)

मुसलमानो अपने आस—पास के काफिरों से लडो और चाहिए कि वे तुम से सख्ती मालूम करें....."।

(कु सू तौरब आ १२३)

पक्ष ३— वही आदि हैं, वही अन्त है वही प्रत्यक्ष हैं और गुप्त है और वह हर चीज से जानकार है....."।

(सू हदीद आ ३)

"तुमको मालूम रहे कि जो कुछ आसमान और जो कुछ जमीन में है अल्लाह जानता है और अल्लाह हर चीज से जानकार है"। (६७ सूरे मायदा रु १३)

विरोध— "उस दिन दोजख से पूंछेगा कि क्या तू भर चूकी और वह कहेगी क्या कुछ और भी है" (सू काफ २६) उसी ने जमीन और आसमान दोनों से कहा कि तम दोनों खुशी से आये या लाचारी से ? दोनों ने कहा हम खुशी से आये"। (११ हामीम सज्दह)

पक्ष ४— फिर जब नर सिंहा फूंका जायेगा तो उस दिन लोगों में रिश्तेदारियां (वाकी) न रहेगी और न एक दूसरे की बात पूंछेगे"।

(१०१ सु मोमिनन)

विरोध— "हमेशा रहने को बाग है जिनमें वह जायेंगे और उनके बड़ों और इनकी बीवियों और उनके बच्चे औलाद जो भला काम करने वाले होंगे उनके साथ जायेंगे"।

(२३ राद)

प्रश्न— यदि मुसलमानों के बच्चे मय लड़कियों के जन्नत में जायेंगे तो काफिरों की औलाद व औरतें अवश्य दोजख में जावेंगे रिस्ते दारियाँ तो फिर भी वाको ही रहेगी। कुरान का दावा तो गलत ही रहेगा।

पक्ष ५– तुम्हारा परवर्दिगार बड़ा माफी करने वाला महरवान हैं। अगर इनके काम के बदले में इनको पकड़ना चाहता तो फौरन ही इन पर सजा उतार देता, लेकिन इनके लिए एक मियाद है जिससे इधर कही शरण नही पा सकते।

(५८) (सु कहफ)

खुदा का हर वायदा लिखा हुआ है (३८ सू राद)

विरोध– कोई शख्स बे हुक्म खुदा मर नही सकता जिन्दगी लिखी हुई है, और जो शख्श दुनियां में बदला चाहता है हम उसका बदला यही दे देने हैं। और जो कयामत में बदला चाहता है मैं उसको वही दूंगा। और जो लोग शुक्र करते हैं मैं उनको जल्द बदला दूंगा (१४६)

(सू झाल इमरान हकू १५)

पक्ष ६– "खुदा फिसाद नही चाहता"।

(सू बकर आ २०५)

विरोध– खुदा ने कहा "हमने हर बस्ती में बड़े—बड़े अपराधी पैदा किये हैं ताकि वहां फसाद करते रहें"।

(कु सू अनआम आ १२३)

पक्ष ७– मेरे यहां बात नही बदली जाती और मैं बन्दों पर जुल्म

नही करता।

(सू काफ आ २८)

विरोध– हमें कोई आयत मंसूख कर दें या बुद्धि से उतार दें तो उससे अच्छी या वैसी ही पहुँचा देते हैं………"।

(कु सूरे बकर १०६)

"जब हम एक आयत को बदल कर उसकी जगह दूसरी आयत उतारते हैं तो जो हुक्म उतरता है उसको वही बखूबी जानता है"।

(कु सू नहल १०१)

पक्ष ८– ऐ पैगम्वर ! मुसलमानों को लड़ने पर उत्तेजित करो कि यदि तुम में से जमे रहने वाले बीस भी होंगे तो दो सौ पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे अगर तुम में से सौ होंगे तो हजार काफिरों पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे क्यों कि यह ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं । (६५)

विरोध– "और अब खुदा ने तुम पर से अपने हुक्म का (बोझ) हल्का कर दिया और उसने देखा कि तुम में कमजोरी है। तो अगर तुममें से जमे रहने वाले सौ होंगे तो खुदा के हुक्म से वह दो सौ पर ज्यादा ताकतवर रहेंगे और अगर तुममें से हजार होंगे खुदा के हुक्म से दो हजार पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे। अल्लाह उन लोगों का साथी है जो जमे रहते हैं"।

(कु सूरे अनफाल आ ६६)

पक्ष ९– "और नेकी और बदी बराबर नही, बुराई का बदला अच्छे वर्ताव से दें, तो तुझमें और जिस आदमी में दुश्मनी थी वह पक्का दोस्त पावेगा"।

(सू सज्दह आ ३४)

विरोध– ऐ ईमान वालो ! जो लोग मारे जावें उनमें तूमको जान के बदले जान का हुक्म दिया जाता है । आजाद के बदले आजाद और गुलाम के बदले गुलाम औरत के बदले औरत

(कु सू बकर रु० २२ आ० १७८)

प्रश्न– जालिम के गुनाह का बदला उसकी वे गुनाह वीबी या बेटी से लेना कौनसा न्याय है ?

पक्ष१०–"ईमान वालो से कहो कि अपनी आंख नीची रखें और अपनी शर्मगाहों को बुरे कामों से बचायें रहें इसमें उनको ज्यादा सफाई है....." ।

(सूरे नूर ३०)

विरोध– और तुम्हारी लौंडियां जो पाक रहना चाहती हैं उनको दुनियां की जिन्दगी के फायदे की गरज से हरामकारी पर मजबूर न करो । और जो मजबूर करेगा तो अल्लाह उनको मजबूर किये पीछे क्षमा करने वाला मेहरबान है"

(सूरे नूर ३३)

"जो औरतें कैद हो कर तुम्हारे हाथ लगी उनके लिए तुमको फुदा का हुक्म है । और उनके अलावा दूसरी सब औरतें हलाल हैं....." ।

(सू निसा आ २४)

बींवीयों और बादियों से (जिना करने पर) इलजाम नही

(सू मोमिनन आ ६)

पक्ष११– "और खजूर और अंगूर के फलों से तुम शराब और अच्छी रोजी बनाते हो । जो लोग बुद्धि रखते हैं उनके लिए उन चीजों में निशानी हैं" ।

(सूरे नहल रु ९ आ ६)

विरोध– मुसलमानो ! शराब जुआ बुत और पाँसे गन्दे काम हैं ।

उनसे बचो शायद इससे तुम्हारा भला हो।

[सू मायदा रु० १२ आ ६०]

पक्ष १२–"अल्लाह को पसन्द नही कि कोई मुंह फाड़ कर बुरा कहे (गाली दे) मगर जिस पर जुल्म हुआ है । और अल्लाह सुनता और जानता है....."।

(१४८) [सू निसा]

विरोध–ऐ पैगम्बर ! किताब वाले और जाहिलों से कह कि तुम भी इस्लाम को मानते हो (या नहीं)....." ?

नोट— प्रथम स्थान पर खुदा ने गाली देने का निषेध किया है किन्तु पीडितों को गाली देने की छूट दी गई है जब कि दूसरी आयत में खुदा ने स्वयं लोगों को 'जाहिल' कह कर गाली दी है। क्या खुदा भी जुल्मों से पीड़ित था ?

पक्ष १३– "यह वह वक्त था जब तुम अपने परवर्दिगार के आगे विनती करते थे तो उसने तुम्हारी सुन ली कि हम लगातार हज़ार फरिश्तों से तुम्हारी सहायता करेंगे। (६) हे पैगम्बर यह वह वक्त था कि तुम्हारा परवर्दिगार फरिश्तों को आज्ञा दे रहा था कि हम तुम्हारे साथ हैं, मुसलमानों को जमाये रखो, हम जल्द काफिरों के दिलों में डर डाल देंगे, बस तुम इनकी गरदनें मारो और इनके टुकड़े–टुकड़े कर डालो"

(१२) [सू अनफाल]

"वही अपने हुक्म से फरिश्तों को अपना पेगाम देकर अपने सेवकों में से जिसकी तरफ चाहता है भेजता है....."।

(सू नहल आ २)

विरोध– मक्का वाले कहते हैं कि ऐ शख्श (मौहम्मद) ! तुझ पर कुरान उतरा है, तू पागल है (६) अगर तू सच्चा है तो फरिश्तों को हमारे सामने क्यों नही बुलाता है (७)

सो हम फरिश्तों को नही उतारा करते....."। (८)

(कु सू हिज)

पक्ष१४– "और वह (कुरान) जो हमने अपने बन्दे (मौहम्मद) पर उतारा है, अगर तुमको उसमें शक हो तो तुम उसके समान एक सूरत बना लाओ और सच्चे हो तो अल्लाह के सिवाय अपने हिमातियों को बुला लो....."।

(सूरते बकर आ २३)

विरोध– ऐ पैगम्बर ! क्या (काफिर) कहते हैं कि इसने कुरान को अपने दिल से बना लिया है तो इनसे कह दो कि अगर तुम सच्चे हो तो तुम भी इसी तरह की बनाई हुई दस सूरते ले आओ और खुदा के सिवाय जिसको तुम से बुलाते बन पड़े बुला लो अगर तुम सच्चे हैं....."। (१३)

(सू हूद)

पक्ष१५– ओर हमने आसमानों को अपने बाहुबल से बनाया और हम सामर्थ वाले हैं कु सु जरियात (४७) तुम्हारा परवर्दिगार अल्लाह है जिसने छः दिन में जमीन और आसमान को पैदा किया फिर (अपने) तख्त पर जा बैठा....."।

(कु पा ८ सूरे आराफ आ ५४)

(इसमें बताया है कि जमीन और आसमान पहिले से न थे वल्कि खुदा ने छः दिन में उनको अपने बाहुबल से बनाया था। आगे खुदा कहता है कि—

विरोध– (खुदा ने) जमीन और आसमान दोनों से कहा (पूछा) कि तुम दोनों खुशी से आये या लाचारी से ? दोनों ने कहा हम खुशी से आये....."। (११)

(कु पा २४ सु हामीम सज्दह)

इससे स्पष्ट है कि जमीन और आसमान पहिले से कही

मौजूद थे जो खुदा के बुलाने पर या खुद व खुद खुदा पास चले आये। इनको खुदा ने बनाया नही था। क्या यह खुदा की बातें हैं....."।

पक्ष१६– लोगों तुम्हारा एक खुदा है सो जो लोग पिछली जिन्दगी का विश्वास नही करते उनके दिल इन्कारी हैं और वह घमण्डी है। (२२)

(कु सू नहल पा १४)

इसमें बताया हैं कि इस जिन्दगी से पहले लोगों को और भी जन्मों में रहना पड़ा था अन्यथा पिछली जिन्दगी शब्द का कोई अन्य अर्थ नही हो सकता है। इसके विपरीत देखें—

विरोध– (लोगों को) समझाओ कि तुम मुल्क में चलो फिरो और देखो कि खूदा ने जिस तरह पर पहली मर्तबा (तुमको) पैदा किया फिर खुदा आखरी उठाना भी कयामत को उठा-येगा।

(कु पा २० सू अन्कूबूत आ २०)

इसमें बताया है कि सभी लोग एवं पृथ्वी पहली ही बार पैदा हुई थी इससे पूर्व किसी की कोई जिन्दगी नही हुई थी स्पष्ट बिरोध विद्यमान है।

पक्ष१७– "जब हम किसी चीज़ को चाहते हैं तो हमारा कहना उसके बारे में सिर्फ इतना ही होता है कि हम फर्मा देते हैं कि 'हों' और वह हो जाता है....."।

(कु सूरे नहला आ ४०)

विरोध– खुदा ने दुनियाँ को आठ दिन में बाहुबल से बनाया था।

(कु सू हामीम सज्दह आ ९, १०, ११ तथा सूरे जरियात आ४७

ऊपर दोनों स्थलो में परस्पर विरोध स्पष्ट है—

मिस्टर मौलाना ! कुरान के हम इस लिए भी इलहाम (ईश्व-

रीय पुस्तक) नही मानते हैं क्यों कि उसमें हमको उन सब जरूरी शिक्षाओं में से एक भी नही मिलती है जिनकी मनुष्य को संसार में उत्तम स्वस्थ जीवन यापन के लिए आवश्यकता होती हैं । उसमें किसी भी प्रकार की धार्मिक सामाजिक, या वैज्ञानिक शंका का समाधान नही मिलता है जो मनुष्य के मस्तिष्क में समय-समय पर उठा करती है। दर्शन शास्त्र सम्बन्धी एक भी विषय पर कुरान प्रकाश नही डालता है । ईश्वर, जीव, प्रकृति जगत रचना का वैज्ञानिक प्रकार प्रलय सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर, प्राणि-विज्ञान, मनो विज्ञान, खगोल बिज्ञान, बनस्पति विज्ञान शरीर विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, पदार्थ विज्ञान शिक्षा सम्बन्धी निर्देश, स्वास्थ्य विज्ञान आदि किसी विषय पर हमको कुरान में कुछ भी नही मिलता है। आकश पृथ्वी व जगत की रचना तथा प्रलय के बारे में यदि कुछ लिखा भी गया है तो वह बुद्धि एवं विज्ञान के विरुद्ध मिलता है जब कि ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ की हर बात प्रत्यक्ष तथा सृष्टि नियमों के अनुकूल होना चाहिए । प्रलय कब होगी यह प्रश्न कई बार कुरान में लोगों ने पूंछा है पर हमेशा उत्तर को टाला गया है जबकि खुदा को यदि जानकारी होती तो सही उत्तर देकर उसे लोगों की जिज्ञासा को शान्त करना था । मांसाहार की आज्ञा दी गई है जो कि स्पष्ट रूप से बिष युक्त एवं स्वास्थ विनाशक होता है ।

कुरान की सभी शिक्षाये या उपदेश मानव जाति को एक मान कर सभी को नही दिये गये वरन केवल कुरान भक्त अरबी मुसलमानों को ही दिये गये हैं और खुदा ने अपने को मुस्लिम पक्ष-पाती घोषित किया है जो कि संसार को पालनकर्ता परमेश्वर के लिये एक कलंक की बात है। कुरान का खुदा सर्व शक्तिमान सर्व व्यापक तथा सर्वज्ञ भी कुरान से सावित नही होता हैं। उसकीमदद

को फरिश्ते लोगों के कर्म लिखते हैं रोजनामचा के रजिस्टर भी मुसलमानों और गैर मुसलमानों के रखे व मुसलमानों के नाम भी लिखे जाते हैं उनकी सुरक्षा को फरिश्ते तैनात रहते हैं।

(सूरे ततफीफ व सू हामीम सज्दह आ ६९ में लिखा है—)

" कि कयामत के दिन खुदा किताबों से फैसला करेगा । खुदा ने मुसलमानों की मदद फरिश्तों की फौज लड़ाई में भेज कर की थी इत्यादि बातों से खुदा की स्थिति खराब की गई है। इन सारी बातों को कुरान में लिखा देख कर तथा विदयाओं का अभाव उसमें देख कर कुरान के खुदाई होने पर यदि हमारा विश्वास नही जमता तो इस कमी की जिम्मेदारी अरबो खुदा तथा उसके नाम पर लिखी गई किताब कुरान की है। अरबी खुदा की इस कमी को दूर कर देना चाहिये ताकि वह संसार के सभी शिक्षित लोगों के भी समझने को पुस्तक बन जावे और सभो को उसमें रुचि पैदा हो सके।

हमारी अपनो समझ में वह पूरी पुस्तक नही है वैसे आप या अन्य मुसलमान लोग उसे चाहे अन्ध विश्वास से जैसा माने आपकी मर्जी हमें कुछ नही कहना हैं। अब हम कुरान पाक की एक विलक्षण आयत पेश करते हैं जिस पर कुरान लेखक की बुद्धि का दर्शन आप करें कुरान सूरे यासीन रु कु ३ आयत ४० में अरबी खुदा फरमाता है" न तो सूरज ही से बन पड़ता है कि चाँद को पकड़े और न रात हीं दिन से आगे आ सकती है और हर कोई एक घेरे में फिरते हैं"।

हर शिक्षित विद्यार्थी जानता हैं कि सूरज इस जमीन से लग—भग ९ करोड़ मील दूर है और चांद दो लाख छत्तीस हजार मील के फासले पर हैं। यदि दोनों एक ही दूरी पर होते तब तो यह कहना कुछ अर्थ भी रखता था कि वे एक दूसरे को नही पकड़

सकतेपर जब दोनों मेंलगभग९करोड़ मील कीं दूरी है तो यह आयत गलत रही या नही ? उस पर भी चांद पृथ्वी की परिक्रमा लगाता पर सूरज तो किसी की याजमींन की परिक्रमा नही लगता हैदूसरी वात भी गलत है । दुनियां बनने से पहले घोर अन्धेरा था, यह तोरात उत्पत्ति अध्याय एक में लिखा है । बाद को जब चौथे दिन सूरज बना तब दिन पैदा हुआ । इस तरह रात पहले थी व दिन वाद को आया । इस तरह रात के बाद ही दिन आने का सिल-सिला अभा तक चला आ रहा है । मौलना बतावें कि खुदा कुरान लिखाते बक्त तौरात की सही बात को क्यों भूल गया ? एक आयत और देखें—

कु सू० अन्फाल में लिखा है—अल्लाह के नजदीक सब जान-वरो में निकृष्ट गूंगे और बहरे हैं जो नही समझते (२२) अल्लाह अगर इनमें भलाई पाता तो इनको सुनने की योग्यता भी जरूर देता । लेकिन अगर खुदा इनको सुनने की काबिलियत दे तो भी लोग मुंह फेर कर उल्टे भागें (२३) अरबी कुरान परस्त मौलाना बतावें कि जब खुदा ने किसी भी प्राणी या आदमी को पहिले कभी कर्म करने का इसे पैदा करके मौका नही दिया, पहली ही बार जन्म दिया है और न मरने के बाद फिर कभो जन्म या कर्म करने का अवसर देगा, साथ हो हर इन्सान की तकदीर भी दुनियां बनने से ५०००० साल पहिले लिख कर रख दी देखों—

(मिश्कात जि० १ हदीस न० ७३ सफा २८)

तो जैसा तकदीर में खुदा ने लिखा वैसा हो बुरा भला इन्सान करेगा । स्वयं तो कुछ करता नही है । स्वतन्त्रता से करने पर जिम्मेवारी उसकी होती । तब यह आयत गलत हुई या नही । उसके सभी कर्मो की जिम्मेवारी खुदा की है । कुम्हार खुद टेड़े वरतन बनावेगा तो जिम्मेवारी भी उसी की होगी अगर जन्म

गूंगे वहरे खुदा पर दावा ठोंक दें तो डिग्री उनको खुदा पर शर्तिया होगीं, खुदा बच नही सकेगा, क्यों कि बे गुनाह जीवों पर खुदा के जुल्म कुरान से प्रमाणित हैं। अरबी खुदा ने कुरान सूरे हिज आ१४ में लिखा है अगर हम इन लोगों के लिए आसमान का एक दरवाजा खोल दें और यह लोग सब दिन चढ़ते रहूँ.....'। इसमें आसमान का दरबाजा होना लिखा है। मौलाना! कुछ दम हो तो आसमान में दरवाजे होना सींढ़ियों के द्वारा उस पर चढना साबित करो बरना ऐसी किताबों पर विश्वास करना छोड़ो। हम टाप मार कर दौड़ने बाले घोडों खुदा की जन्नता बैठक की किवाडों व खुदा की कसम खा कर कहते हैं कि दुनियाँ का कोई तुम्हारा आलिम आसमान में दरवाजे व बुर्ज होना या आसमान का कागज की तरह लपेटे जाना साबित नही कर सकेगा। अगर कर दोगे तो १००१) इनाम मिलेगा किस्मत आजमा कर देखो।

अब हम आपकी गाली गलौज भरी असभ्यता पूर्ण पुस्तक **"सत्यार्थ प्रकाश का असत्यार्थ प्रकाश"** का उत्तर देना प्रारम्भ करते हैं। अपने दिलो दिमाग को दुरुस्त करके उसे गौर से समझने की कोशिस करना। हम इस उत्तर को इस लिये लिख रहे हैं ताकि तुम्हारा यह गर्व चूर कर दिया जावे कि तुमको किसी ने जबाब नहीं दिया। जन्नत जाते वक्त इस हमारे जवाब को साथ साथ लेते जाना और वहाँ अपने अरबी खुदा को पढ़ा कर सुनाना क्यों कि हमारी जानकारी के अनुसार तुम्हारा अरबी खुदा हिन्दी भाषा व लिपि की जानकारी नही रखता है। वह सिर्फ अरबी ही जानता हैं।

दूसरा अध्याय

विपक्षी पुस्तक **"सत्यार्थ प्रकाश का असत्यार्थ प्रकाश"** के आक्षेप युक्त स्थलों का उसी के क्रम वार उत्तर

सत्यार्थ प्रकाश की समीक्षा नं० १०० "और नियत करते हैं वास्ते अल्लाह के बेटियां, पवित्रता है उसको और वास्ते उनके हैं जो कुछ चाहें क ाम अल्लाह की अवश्य भेजें हमने पैगम्उर !

(कु सूरे नहल ५६—६२)

स० प्र० की समीक्षा—अल्लाह बेटियों का क्या करेगा ? बेटियां तो किसी मनुष्य को चाहिए.....कसम खाना झूठों का काम है.... सच्चा सौगन्ध क्यों खाये ?

हमारा उत्तर—खुदा की कसम खाने बाला दूसरा कौन है ? क्या खुदा ने किसी दूसरे बड़े खुदा की कसम खाई है ? क्या खुदा कई हे ? मौलवी स्पष्ट करें: — स्वामी जी की समीक्षा पर विपक्ष की बकवास उसकी पुस्तक में मूर्खता पूर्ण है स्वामी जी ने अपना भाव स्पष्ट किया है कि जो लोग बेटियों से नफरत करते थे और उनको यह कह कर मार देते थे कि बेटियां खुदा और फरिश्तों के लिए हैं तथा बेटे मनुष्यों के लिये हैं, उनकी जहालत पर सवाल स्वामी जी ने उनसे किया है कि बेटियाँ खुदा और फरिश्तों के लिए हैं इसमें क्या प्रमाण है [यह अन्ध विश्वास मूर्खता पूर्ण था। बेटियाँ और बेटे मनुष्य के लिये होते हैं। यही विपक्षी ने लिखा है। तब आक्षेप क्या बना ? व्यर्थ गालियां देकर उसने अपना कमीना पन प्रगट किया है। स्वामी जी ने कहां लिखा है कि ईश्वर अपने लिये बेटियां नियत करता है ?

आगे स्वामी जी ने खुदा के कस्मे खाने पर ठीक ऐतराज किया हैं कि कसम हमेशा झूठे और बेईमान लोग खाते हैं भले आदमी तक कसम खाने से नफरत करते हैं । जिसकी जबान का इतमीनान नहीं होता है इसकी कस्मे पर कभी कोई भरोसा नही करता है । कुरान में अरबी खुदाने बार—बार कस्मे खाकर अपनी पोजीशन को जराब किया है । स्पष्ट है कि आप

से स्वामी के आक्षेप का उत्तर नही बन पड़ा है। कैसे मोलवी हो कि महा पुरुषों को गालियां देते हो। यह गन्दी आदत तुमने अपने कुरान अरबी खुदा से सीखी लगतो है जिसने समस्त अरब वालोंको 'जाहिल लिख कर गालियाँ दी हैं। देखो कुरान सूरत अलइमरान आयत २० में खुदा ने लिखा है—

ऐ पैगम्बर! किताब वाले और "जाहिलों" से कहो कि तुम भी इस्लाम को मानते हो या नही....." । खुदा ने खुद ही लोगों को जाहिल पैदा किया उनको वहकाने को उनके पीछे शैतान लगाये, और खुद ही उनको गालियां दीं हैं। क्या लोगों को गाली देना भी आपके अरबी खुदा की तहजीव का नमूना है ? अच्छा होता कि तुम कुछ सभ्यता सीख लेते ताकि तुम्हारा यह जहालत मिट जाती और तुम भले लोगों में बैठने के योग्य बन जाते।

२- **सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास १४ में कुरान की समीक्षा नं०१२२**—

आयतें- "और आज्ञा दी हमने मनुष्य को साथ मां बाप के भलाई करना और जो झगड़ा करे तुमसे दोनों यह कि शरीक लावे तू साथ मेरे उस वस्तु को जो कि है वास्ते तेरे साथ उसके जान बस मत कहा मान इन दोनों का तरफ मेरी है। और अवश्य, भेजा हमने नूह के तरफ, कौम उसकी के। बस रहा बीच उसके हजार बर्ष परन्तु पचास ~~हजार~~ बर्ष कम।

(सूअनक बूत आ ७ व १३)

ऋषि की समीक्षा- माता पिता की सेवा करना अच्छा ही है जो खुदा के साथ शरीक करने के लिये कहें तो उनका कहना न मानना भी ठीक ही है। परन्तु क्या यदि माता—पिता मिथ्या भाषणदि करने की आज्ञा देवें तो क्या मान लेना चाहिए....? क्या नूह आदि पैगम्बरों को ही खुदा संसार में भेजता हैं तो अन्य जीवों को कौन भेजता है ? यदि सभी को भेजता है तो

सभी पैगम्बर क्यों नही ? यदि प्रथम मनुष्य की आयु हजार वर्ष की होती थी तो अब क्यों नही होती ? इससे यह बात ठीक नही ।

हमारा उत्तर- स्वामी जीकी आपत्ति सर्वथा सही है, विपक्षी में उसे समझनेकी योग्यता का अभाव है स्वामी जी भी खुदा के साथ दूसरों का नाम शामिल करने को बुरा मानते थे । यहाँ खुदा का आदेश अधूरा है । उसे यह कहना था कि मां बाप शिर्क के ब किसी भी गलत बात के लिए सन्तान से कहें तो उसे मानने से वह इन्कार कर देवें । सिर्फ एक बुराई के लिए इन्कार करने का स्पष्ट अर्थ हैं कि अन्य बुराइयों को मानने के लिये पायवन्दी नही रहेगी । खुदाई आदेश में कमी स्वामी जी ने बताई है । पर आप इस पर चोंक क्यों पड़े ? आप भी तो 'लाइलाहा लिल्लल्लाह मुहम्मद रसूल्लिाह नाम के कलमे में मुहम्मद साहद की शिरकत खुदा के साथ करने पर गुनहगार हैं । सारे कुरान में यह पूरा कलमा कही पर एक जगह नही हैं । आप दिखा दें तो १०००) इनाम मिलेगा । खुदा को यदि यह शिरकत मंजूर होती तो वह कुरान में यह कल्मा भी कही लिखा देता । एक बात और भी है । शिरकत कोई औलाद या आदमी किसी के कहने से कर भी तो नही सकता है । यदि करता है तो वह जिम्मेवार नही होता है । स्पष्ट लिखा है—

"अगर खुदा चाहता तो वे शरीक न ठहराते, और हमने तुमको इन पर निगहबान नही किया और न तुम इन पर वकील हो....." ।

(कु पा ७ सूरे अनआम रु १३ आ १०७)

इसका अर्थ है जो लोग मुशरिक बने हैं वे खुदा की ही मर्जी

व आदेशों से बने हैं। तब खुदा का औलाद को मां बाप का हुक्म न मान नेकाहुक्मदेना ही व्यर्थ था औलाद तो वही करेगी जो खुदा चाहेंगा और शिरकत भी लोग खुदा की मर्जी से करेंगे स्वयं नहीं । तब उसमें वे गलती क्या करेंगे ?—

स्वामी जी ने दूसरा ऐतराज भी ठीक किया है । खुदा यदि हाजिर नाजिर है तो उसमें और इन्सान में कोई दूरी देश का स्थान की नही है। पैगाम लाने वाला पैगम्बर मध्यस्थ व दलाल या एजेन्ट तो दो व्यक्तियों के बीच में स्थान की दुरी होने पर जरूरी होता है। क्या खुदा अपनी बात लोगों के दिल में खुद नहो डाल सकता था जो बिना जरूरत पैगम्बर या एजेन्ट जिब्रील फरिश्त उसे भेजना पड़ा जैसे सभी इन्सान व प्राणी खुदा ने पैदा किये वैसे ही नूह आदि का भी जन्म हुआ। आप उन्हें पैगम्बर माने या चाहे कुछ माने। स्वामी जी की आलोचना सही व अकाऽय है । खुदाई पैगम्बर में जो गुण होने चाहिये वह आपके माने हुद पैगम्बरों में नही थे। नूह को महा पुरुष मानना ही ठीक होगा।

मूसा की उम्र ९५० साल की या आप दो बिन्दी आगे जोड़ कर ९५००० साल की मान ले आपकी इच्छा है। किसी ने ९५ पर एक शून्य बढ़ाया होगा आप दो चार या पाँच या दस और भी बढ़ा सकते हैं पर आदमी की उम्र हजार साल मानना केवल वहम है क्यों कि उसके शरीर के तत्व इतने समय तक स्थिर रहने की सामर्थ नही रखते हैं।

३– **समीक्षा नं० ४६**–"कह इससे अच्छी ओर क्या परेहजगारों को खबर दे कि अल्लाह की ओर बहिश्त हैं जिसमें नहरें चलती हैं उन्हो में सदैव रहने वाली शुद्ध बीवियां हैं अल्लाह की प्रसन्नता से, अल्लाह उनको देखने वाला है साथ बन्दों के ....."।

(कु सूरे अलइमरान आ११)

समोक्षा–भला यह स्वर्ग है किंवा वेश्याबन । उसको ईश्वर कहना या स्त्रीण ? कोई भी बुद्धिमान ऐसी बातें जिसमें हों उसको परमेश्वर का किया हुआ तुस्तक मान सकता है । यह पक्षपात क्यों करता है, जो बीबियां वहिश्त में सदा रहती हैं वह यहाँ जन्म पाके बहां गई हैं या वही उत्पन्न हुई ? यदि यहां जन्म पाके यहाँ गई हैं और जो कयामत की रात से पहले ही वहां बीबियों को बुला लिया है उनके खाबिन्दों को क्यों नहीं बुलाया । और कयामत की रात में सबका न्याय होगा इस नियम को क्यों तोड़ा । यदि वहाँ जन्मी तो कयामत तक वह क्यों कर निर्वाह करती हैं । जो उनके लिये पुरुष भी हैं तो यहां से वहिश्तों में जाने वाले मुसलमानों को खुदा बीबियाँ कहां से देगा । और जैसी बीबियां बहिश्त में सदा रहने वाली क्यों बनाया । इस लिए मुसलमानों का खुदा अन्यायकारी है बेसमझ हैं ।

हमारा उत्तर– इस समीक्षा पर मौलाना आपे से बाहर हो गया हैं और ऋषि को अनेक गालियां दे बैठा है, जबकि उपरोक्त समोक्षा पूर्णतः सत्य है । जन्नत का जो हाल कुरान व अन्य इस्लामी साहित्य में लिखा हे वह केवल काल्पनिक तथा अनर्गल है बुद्धि विरुद्ध है तथा अरब के अय्यास मुसलमानों को इस्लाम की ओर खोचने के लिये लिखा गया था हम जन्नत का नजारा कुरान व इस्लामी पुस्तकों से प्रस्तुत करते हैं पाठक उसे देख कर बतावें कि ऋषि की आलोचना कितनी ठीक है । जन्नत के द्रश्य (जन्नत में) सफेद रंग की शराब पीने वालों को मजा देगी (४६) उनके पास नीची निगाह वाली बड़ी—बड़ी आखों की औरतें होंगी (४८) गोया वह छिपे अण्डे रखे हैं

(४६) ।

[कु सू साफफात रु २]

उनके पास नीची नजर वाली हूरें होगी और हम उम्रहोंगी

(५४) [सू साद रु ४]

ऐसा ही होगा बड़ी—बड़ी आँखों वाली हूरों से हम उनका विवाह कर देगे (५४)

[सूरे दुःखान रु ३]

जन्नत में शराब की नहरें हैं जो पीने बालों को बहुत ही मजेदार मालुम होगी (१५)

[सूरे मौहम्मद रु २]

वहां शराब के प्यालों की छीना झपटी करेंगे.... । (२३) और लड़के (गिलमें) उनके पास आयगे जॉयेगे गोया यत्न से रखे हुए मोती है (२४)

[सूरे नूर रु १]

(जन्नती लोडों की प्रसंशा क्यों की गई है इसका रहस्य विपक्षी बताबें ।)

उनमें पाक हूरें होंगी जो आंख उठा कर भी नही देखेंगी । और जन्नत वासियों से पहले न तो किसी आदमी ने उन पर हाथ डाला होगा और न जिन्न ने (५६) उनमें खूब सूरत औरतें होगी (७१) हूरें जो खोमे में बन्द हैं ।

[सू रहमान रु २]

उनके पास लौडे हैं जो हमेशा लौडे ही बने रहेंगे (१८)और हूरें बड़ी—बडी आंखों बाली जैसे छिपे हुए मोती (२३) हमने हूरों एक खास सृष्टि बनाई हैं । (३५) फिर इनको क्वारी बनाया है(३६ प्यारी—प्यारी समान अवस्था वाली (३७) सू वाकिया ।

(जन्नत में) उन पर चाँदी के वर्तन और गिलासों का दौर

चलता होगा कि वह शीशे की तरह होगे (१५) और वहाँ उनको (शराव के) प्याले पिलाये जायेंगे जिनमें सेंठ मिली होगी (१७) उनके पास लौडे (गिलमें) फिरते हैं (१९) उनका परवरदिगार उन्हें पाक शराव पिलावेगा (२१) निःसन्देह सुकर्मी प्याले पीवेंगे जिनमें कपूर की मिलावट होगी (५)

[सु० दहर]

नौ जबान औरतें हम उम्र (३३) और छलकते हुए (शराव) के प्याले (३४)।

[सू नवा]

उनको खालिस शराब मुहर की हुई पिलाई जायेगी(२५)जिस की मुहर कस्तूरी की होगी और इच्छा करने वालों को चाहिये कि उसी पर इच्छा करें (२६)।

[सू ततफीफ]

हजरत अवदुल्ला विनउमर ने फरमाया कि हर व्यक्ति ५००-हूरों ४००० क्वारी औरतें और ८००० व्याहता (मर्द रशीदा) औरतों से व्याह करेगा"।

जन्नत में एक बाजार है जहां मर्दो व औरतों के हुस्न का व्यापार होता है। बस जब कोई व्यक्ति किसी सुन्दरी स्त्री की ख्वाहिश करेगा तो वह उस वाजार में आवेगा जहां बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूरें जमा हैं.....। वे कहेंगी कि मुवारिक है वह शख्स जो हमारा हो और हम उसको हों"।

नोट— यही वात निरमिजी शरीफ में हदीस ७४० जिल्द2में भी लिखा है।

"हजरत अंस ने फरमाया हूरें गाती हैं हम सुन्दर दासियां हैं, हम इज्जतदार लोगों के लिये सुरक्षित हैं"। मुकद्दमाये तफसरुलकुरान पृ० ८३ से मिर्जा हैरत देहलवी कृत। तथा कुरान परिचय

पृ० ११७ विपक्षी पागल मौलाना अब बतावें कि उनका जन्नत वेश्यालय से किस बात में कम है ? जहां शरावें खुदा पिलावें उसके दौर चमकीले चाँदी के प्यालों में चलते हैं, नशे में लोग उनकी छीना झपटी करते हैं, खूब सूरत लौडे जहां उनको आस-पास घेरे रहते हैं हर मियां को १२५०० औरतें खुदा व्याह दे और उस पर भी हूरों (खूब सूरतें औरतो) का बाजार अलग से अय्याशी को खुला रहता है। जहाँ हर समय हुस्न बिकता रहता हो, औरतें भी मुसलमानों हम उम्र दी जाती है अर्थात १८ साल के जन्नती मियां को १८ साल की और ८० साल बूढे मुल्ला को ८० साल को अर्थात (बूढी खूसट) हम उम्र जैसे को तैसी मिलेगी शराब भी मामूली न होकर सौठ ओर कपूर मिली होवे तथा उसकी बोतल में कस्तूरी की डाट लगी होगी, प्याले पर प्याले गिलास पर गिलास गटकने को मिले, और फिर भी नियत न भरे तो शराबों से भरी बहती नहरों में कूद कर सर तक डुबकी लगा कर दिल भरके पीने व शराव में नहाने के साधन मिलें, ऐसी अय्याशी की जगह को यदि सत्यार्थ प्रकाश में वेश्यालय लिख दिया तो क्या बुरा किया ? अछूती खूब सूरत हुस्न वाली खोमों में बन्द अण्डे व मोती जैसी सफदे हूरें जिन्हें कभी किसी मर्द या जिन्न ने (बकौल कुरान के) इस्तेमाल न किया हो न छाती से लगा कर प्यार किया हो वे हजारों लाखों करोडों सालों से इश्क में तडफती खूब सूरत औरतें क्या तुम्हारे हीं लिये सुरक्षित हैं (कैद हैं)। मन तो चलता होगा उनका भी। मौलना, सच सच बतान क्या इन बेश्याओं को तुम छूना भी पसन्द करोगे जो ऊंचो आवाज से बेशर्मी से बुलाती हो कि है कोई मर्दमी का दम भरने वाला मुल्ला जो हमारा हो जावे। क्या यह खुदा का जुल्म और उनकी बेचैनी की तडफन इश्क को जाहिर नहीं करता है। क्या तुम्हारी बीवी भी जवानी में बिना

मन चलाये रह सकती है, जरा उससे उसके दिल का हाल तो पूंछ लेते ।

इसीं लिये इस्लाम के मान्य मौलना सर सैयद अहमद खां ने अपनी किताब तफसीरुल्कुरान भाग १ सफा ३३ पर लिखा है—

"यह समझना कि स्वर्ग एक बाग के रूप में उत्पन्न किया है और संग मरमर और मोती से जडाऊ महल हैं, हरे भरे पेड़ हैं, दूध शराब, शहद, की नहरें वह रही हैं हर तरह केमेवाखाने को मौजूद हैं साकी व साकनींनअत्यन्तखूबसूरत चांदीकेगहने पहने कंगन पहिने हुएजो हमारे यहां घोसिने पहिनती है,शराब पिला रही हैं,और एक जन्नती (मुसलमान) एक हूर के गले में हाथ डाले पड़ा है, एक ने रान पर (उसकी जाँघ पर) सर रखा है, एक छाती से लिपट रहा है, एक ने जाँ बख्श (प्राणदायी) बौसा होठ का लिया है कोई किसी कौने में कुछ·····ऐसा बेहूदापन है जिस पर आश्चर्य होता हैं। यदि यही वहिश्त हैं तो बिला मुबालिगा (बिना सोचे) कहना होगा कि हमारे खराबात (रण्डी खाने) इस जन्नत से हजार गुना बैहत्तर है" ।

[तफसी रुल्कुरान पृ ३३ भाग १]

फर्जी जन्नती हूरों के आशिक पागल मौलाना ! जब आपके आका जान मुसलमान हो आपकी जन्नत से भारत/पाकिस्तान के रण्डी खानों को बैहतर मानते हैं तथा लिखते हैं तो स्वामी दयानन्द जी पर आपने मूर्खता पूर्ण कलम क्यों उठाई है । बिना कुरान पढे तुम्हारे जैसे जाहिल ऐसी ही बदमाशी किया करते है । जन्नत की १२५०० औरतों को भोगने का लालच न होता और उनके ख्वाब तुम्हें न आते होते तो तुम अरबी इस्लाम ब कुरान पाक को छोड कर कभी के अपना मजहम बदल चुके होते । क्या इतनी बदचलन

औरतों तथा गिलमों (लौडों) को भोगने की ताकत तुम्हारी कमर में है। कल्पित ज़न्नती हूरों व लौडों पर आशिक मौलाना ! एक वात बताओ ! ज़नकेमानी हैं औरतें। ज़न्नत के मानी हैं वह जगह जहां सिर्फ औरतें ही रहती हों। जैसा जानना जहां लिखा होता है उस पाखाने या रेल के डब्बे में कोई शरीफ मर्द नही घुस सकता है। यदि तुम्हारा जैसा पागल घुस जावे तो सर पर जूते पड़ते हैं और पुलिस बन्द कर देतो है। ऐसे ही जहाँ जन्नत का साइन बोर्ड लगा होगा उसमें आपको घुसने कौन देगा। यदि फिर भी घुसे तो वहां की औरतें हूरें चप्पलें मार-मार कर तुमको धक्का मार-मार कर निकाल देंगी। तब तुम्हारा या हाल होगा।

फिर ज़न्नत की १२५०० में से ८००० औरतों जो तूमको मिलेगी वे मर्द रशीदा (शादी शुदा शौहरों वाली) होंगी वे सभी इस्तैमाल की हुई (सैकन्ड़ हैन्ड) तूमको दी जावेगी वे अछूती या पवित्र भी न होंगी तो उनमें तुमको क्या जायका या रुचि होगी वें तो अपने शौहरों के साथ तुम्हारी साझे की बीबियां होंगी और तुम और उनके शौहरउ नको नम्बर-नम्बर से सहकारी खेती की तरह इस्तैमाल करोगे।

नोट— कुरान सूरते बकर आ २२३ में बीवियों को खेतियां लिखा है।

यदि कभी नम्बर के मामले पर आप में और उनके शौहरों में झगड़ा हो गया और वे शौहर तगड़े पडे तो तुम्हारी खोपड़ी की क्या शक्ल बनेगी। और जन्नत में तुम्हूरी वीवीयाँ भी साथ जावेंगी यदि वहाँ के लोगों ने तुमसे भी तुम्हारी बोंवी में साक्षा मांगा तो क्या तुम और तुम्हारी बींबीं इसे बर्दाश्त कर लेगी। क्या तुम्हारी औलाद भी जो वहां साथ होगी इस बेहूदगी को देख कर सहन कर लेगी।

एक बात और बतावें जब ज़न + नत में (औरतों के लोक में) मर्द जा घुसेंगे तो फिर वह ज़न्नत कैसे रहेगी। फिर तो वह मद औरतों की साझे की जगह हो जावेगी। तब उसका नाम बदलना पड़ेगा जैसे विना बोर्ड का रेल का डिब्बा मेरा सुझाव है कि तुम अपने खुदा बन्द करीम महाराज से यह सब पहिले साफ कर लेने के बाद वहाँ जाने की सोचो तो ठीक रहेगा। क्योंकि फिर वहां से निकलना सम्भव नही होगा। दरना हो सकता हैं तुम व तुम्हारे बीबी बच्चे परेशानी में पड़ जावें ।

नोट-(१)बहिश्त में बे शुमार हूरो होने से उसका सही नाम ज़न्नत ठीक हैं। मुसलमान भूल से उसे जन्नत बोलते हैं। जिसका अर्थ होगा बागों बाला। पर बहिश्त में खजूर, बबूल शीशम के बागों की भरमार होने से उसे बागों बाला कहना उसकी बदनामी करना है औरतों होने से बाला ज़न्नत शब्द ठीक हैं।

(२) कुरान पाक (२७) सूरे रहमान आ (५६) में अछूती औरतें मिलने की बात लिखी है (बहिश्त में) सूरते आल इमरान आ ३१ जो सत्यार्थ प्रकाश में दी है उस पर भी आपने व्यर्थ बकवास की है जिसका तर्जुमा शाह अब्दुल कादिर साहब ने तर्जुमा कुरान में इस तरह लिखा है—

"तू कह ! मैं बताऊं तुमको इससे बेहतर परहेजगारों को अपने रब (खुदा) के यहाँ बाग हैं जिनके नीचे बहती नदियां हैं और उनमें हमेशा बे रहेंगे। और बागों के अलावा सुथरी बीबियां हैं और खुदा की खुशी हैं और अल्लाह बन्दों को देख रहा है" !

इसमें खुदा के यहाँ बाग बता कर स्पष्ट लिखा हैं कि खुदा जन्नत (अर्थात औरतों के लोक) में रहने वाला हैं वह सर्व व्यापक नही है। हो सकता है कि वह उस अपने हैड क्वार्टर से उतर

कर कहीं आते जाते भी हो (देखो उपत्ति ३/८ तौरात) आप ऐसे ऐसे मतवाले हैं कि कुरान का भी खन्डत करने बैठ गये हैं । अफ-सोस है आपकी शक्ल पर ।

इस ४६वीं समीक्षा में आपने ऋषि दयानन्द के लिए बड़ी गन्दी शब्दावली एवं भाषा का प्रयोग किया है । यदि यही आपकी भाषा ज्यों की त्यों मैं आपके पूज्य ह पैगम्बर साहब या खुदा के लिये वापिस कर दू तो क्या आप प्रसन्न होंगे ? आप रोवेंगे तो नही मौलना ! कुछ लिखने की तमीज सीखो वरना सभ्य लोग तुमको गुन्डा कहने लगेंगे जो भाषा तुम अपने मान्य पुरुषों के लिए इस्तेमाल नहीं कर सकते हो, वह दूसरों के मान्य पुरुषों के लिए भी इस्तेमाल न किया करो । वरना यदि हमने ज्यों का त्यों जवाब दे दिया तो तुम्हारे पक्ष में रोने पड़ जावेंगे ।

मौलाना ! जन्नत में तुमको एक बड़ा आराम होगा । 'जन्नत में मुसलमानों को जब औलाद की तमन्ना होगी तो तुम्हारी बीवी को तत्काल हमल रह जावेगा और बच्चे पैदा होकर जवान भी बन जावेंगे यह सब एक घन्टे में हो जावेगा जैसे आप चाहेंगे" ।

(देखो तिरमि जी शरीफ हदीस नं० ७३९ जिल्द दोयम)

इस जादूगरी में आपकी बीबी को न तो दर्द होंगे न पिचूटोन के इजैक्शन लगेंगे न आपरेशन कराना पड़ेगा न दाई की जरूरत पडेगी और न आपको बच्चे की टट्टी पेशाब उठानी पडेगी । फौरन बिबाह लौडों के करके जल्दीसे आप बाबा पड बाबा भी बन जावेंगे आप कई परेशानियों से बचे रहेंगे । इस लिये किसी गहरे कुयें में छलाँग लगा कर फौरन जन्नत को अर्थात् हूरों के लोक को भागिये वहाँ खुदा, शराबे गोरी हूरें व गोरे गिलमें (लौडे) सभी भर पूर मिलेंगे । बड़े मजे को छनेगी मौलना ! यहां बुढापे में सूखो बूढ़ी व अकेली बीबी के साथ क्या मजा मिलता होगा । पर एक परेशानी

फिर भी रहेगी। कुरान के अनुसार वहां भी हम उम्र बूढ़ी औरतें ही तुमको मिलेगी पर मिलेगी हजारों यहां से फिर भी फायदे में रहोगे।

विपक्षी मौलाना सावधान !

जन्नत व दोजख में जाने की बात धोखा है, कुरान की घोषणा

कुरान में लिखा है कि—

"फिर भी तुम लोगों की गिनती के अनुसार हजार वर्ष की मुद्दत का एक दिन होगा। उस दिन तमाम इन्तजाम उसके सामने से गुजरेगा।

(कु सूरे सज्दह आ ५)

"जब तक आसमान और जमीन (कायम) है वे हमेशा उसी में रहेंगे। (कु सूरे हूद आ १०७)

(कयामत के दिन) "आसमान की खाल खोची जायेगी"।

[कु सूरे तकवीर आ ११]

"आसमान लपटे हुए उसके दाहिने हाथ में होंगे"।

[सू जमर आ ६७]

"हम आसमान को इस तरह लपेटेंगे जैसे तूमार में कागज को लपेटते हैं....."। [सूरे अम्बिया आ १०४]

"और जब जमीन तान दी जावेगी (३) और जो कुछ उसमेंहै उसे बाहर डाल देगी और खाली हो जावेगी (४) और अपने परवदिगार की बात सुनेगी....."। [सूरे इन्शकाक]

इससे स्पष्ट है कि कुरान के अनुसार कयामत के दिन आसमान और जमीन का बजूद न रहेगा। जमीन का जर्रा-जर्रा अलग अलग हो जावेगा और जमीन नाम की कोई चीज बाकी न रहेगी कयामत का फैसला भी हजार साल में पूरा हो पावेगा और उसके बाद लोगों के जन्नत या दोजख में जाने की बात होगी।

कुरान के अनुसार जन्नत और दोजख में भी तब तक लोग रहेंगे जब तक ज़मीन आसमान कायम रहेंगे । इधर जमीन आसमान दौनों कयामत के दिन खतम हो जावेंगे ऐसा कुरान मानता है । अर्थ यह हुआ कि जन्नत दोजख में जाने और वहां रहने की म्याद कयामत के दिन ही खतम हो जावेगी और किसी को भी उनमें जाने का मौका ही न आवेगा । अतः कुरान की वहां रहने की म्याद के खत्म होने की व्यवस्था से वहिश्त (जन्नत) या दोजख में जाने की बात स्पष्ट रूप से गलत है । हूर और गिलमे (लौडे) शराब की नहरें दोजख की भट्टी में जलने की कुरान की सभी कल्पनायें व लालच उपरोक्त प्रमाण की उपस्थिति में मुसलमानों को कोरा धोखा हैं ।

समीक्षा नं० ३५—"अल्लाह के मार्ग में लडो उनसे जो तुमसे लड़ते हैं मार डालो तुम उनको जहां पाओ कतल से कुफ बुरा है । यहाँ तक उनसे लड़ो कुफ न रहे और होवे दीन अल्लाह का । उन्होंने जितनी ज्यदती करी तुम पर उतनी ही तुम उनके साथ करो ।

[सूवकर आ १९०—१९१]

समीक्षा-जो कुरान में ऐसी बातें न होती तो मूसलमान इतना बड़ा अपराध अन्य मत बालों पर किया है करते....." ।

हमारा उत्तर- इस पर विपक्षी ने भारी वकवास की और इसे युद्ध में यथावत व्यवहार बताया है । साथ ही आर्य समाजका चैलेंज किया है कि कुरान में अन्य मतबालों से मुसलमानों को लड़ने की आज्ञा दी गई है । ऐसी एक भी आयत (प्रमाण) में पेश करै । मौलना की चुनौती हमको स्वीकार है । अरबी खुदा का इन्साफ कुरान में यह है कि ऐ ईमान बालो ! जो लोग मारे जावें उनमें गुलाम के बदले गुलाम औरत के बदले औरत....." । [कुसूरे बकर रु २२ आ १७८]

यदि इस बे इन्साफी पर यह ऐतराज किया जावे कि चोरी के बदले चोरी जिना के बदले जिना, गाली के बदले गाली, कत्ल के बदले कत्ल कराना जुर्म के बदले जुर्म करना यह सरा सर अन्याय खुदा का है तो क्या गलत होगा ? एक गुन्डा किसी की औरत से बलात्का कर बैठे तो क्या दूसरे को भी उसकी पति व्रता पत्नी से काला मुंह कर लेना चाहिए अथवा उस गुन्डे को ही मुनासिब सजा देना या दिलाना चाहिए ? कुरान तो बलात्कार के बदले बलात्कार करने का आदेश देता हैं ? क्या आप बता सकते हैं कि क्या इस जहालत के आदेश को भी खुदाई माना जा सकता है ? बुराई के बदले बुराई करना यही तो इस्लामी अन्याय है ? और ऐसी आज्ञा देने वाला खुदा न तो खुदा होगा और न ऐसी किताब खुदाई मानी जा सकेगी जो गुनाह के बदले गुनाह करना सिखावे।

लड़ाई में एक दूसरे पर बराबर की चोट करने को तो आप युद्ध नीति कह सकते हैं किन्तु तुम उनसे लड़ते रहो यहाँ तक कि फित्ना बाकी न रहे और दीन सर्वथा अल्लाह के लिए हो जाये (वे सब मुसलमान हो जावें) इसका क्या मतलब है ? इसका स्पष्ट अर्थ है कि लड़ाई का असली मतलब तो गैर मुसलमानों को मुसलमान बनाने तक लडने का है। वस्तुतः इस्लाम फैलाने को लडाई लड़ने का तो बहाना ढूढना होता था। यही कुरान के आदेश का खुला तत्पर्य था। मूल आयतो का आपने जो अर्थ किया वह यह है—

" परन्तु यदि वह तुम से लडे तो तुम भी उनको मारो कि ऐसे धर्म भ्रष्टों की यही सजा है(१६१)तुम उनसे लडते रहो यहां तक कि फित्ना बाकी न रहै और दीन सर्वथा अल्लाह के लिए हो जाये........"। (१६२)

[कु सूरे बकर रु २४]

यदि केवल शत्रुओं से लडना ही उद्देश्य था तो दीन कबूल कराने की शर्त क्यों लगाई गई ? दुश्मनी बाँधना फिर दूसरा कुछ कहे तो लड़ पडना और तलवार के जोर से इस्लाम फैलाना यह तो इतिहास से मुसलमानों के कुकर्म साबित है। दया तो उसी पर की जाती रही है जिसने आपका मजहब जान बचाने को विवशता में कबूल किया था। आपके बुजुर्ग भी तलवार के जोर से मार-मार कर कभी मुसलमान बनाये गये थे, पता तो लगा कर देखो। भारत में एक भी आदमी राजी से कभी मुसलमान नहीं बना था। ज्यादा देखना हो तो खूनी इतिहास 'आर्य साहित्य' मण्डल लि० अजमेर से मंगा कर पढ़ कर अपना अज्ञान मिटा लेवें। यदि कुरान के हत्या के आदेश अरब के मुस्लिम बिरोधी शत्रुओं के बारे में मानेंगे तो आज के कुरान भक्त मुसलमान भी उन का अनुकरण क्यों नहीं करेंगे जैसा कि सदेव इतिहास में उन्होंने किया है। आप अन्य धर्म वालों को धर्म भ्रष्ट कहते हैं। पर बास्तव में धर्म भ्रष्ट आप हैं या दूसरे लोग इसका निर्णय तो शास्त्रार्थ में ही हो सकेगा

इस विषय में प्रमाण और भी देखें— "काफिरों से लडते रहो यहां तक कि फसाद न रहे और सब खुदाकाही दीन हो जाये पस अगर मान जावें तो जो कुछ ये लोग करेंगे अल्लाह उसको देख रहा है (३९) [कु सू अन्फाल रु० ५]

खुदा का दीन भी कुरान ने क्या बताया है वह भी देख लें "और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवाय किसी और दीन को तलाश करे तो खुदा के यहाँ उसका वह दीन कबूल नहीं और वह कयामत में नुकसान पाने वालों में से होगा........"।

[कु सु आल इमरान रु ९ आ ८५]

अब आपने समझा कि इस्लाम दूसरे विचार वालों मजहब वालों को वर्दाश्त नही करता है। मारकाट से ही उसका बिस्तार

हुआ था और उसी का प्रचार कुरान सदैव करता रहता है।

"दीन तो खुदा के नजदीक यही इस्लाम है" (कु सू अलइमरान आ १८) इससे प्रगट है कि कुरानी अरबी खुदा मुसलमान ही है और वह दूसरे धर्मों व सम्प्रदायों से खुद भी घृणा करता था तथा दूसरों से कराता था। अतः कुरान का यह लिखना कि "दीन में जबरदस्ती नही"। (सू बकर रु ४ आ २५६)

उपरोक्त कुरान के ही प्रमाणों से गलत तथा लोगों को धोखे में डालने वाला है जिसको आपने धोखा देने को आपने लेख में मदद ली है। स्पष्ट है कि इस्लाम सर्व धर्म सम भाव में विश्वास नही रखता है। स्वामी जी का लेख ठीक हैं।

समीक्षा नं० ७६—आयत "प्रश्न करते हैं तुझको लूटने से कह लूटें वास्ते अल्लाह और रसूल के और डरो अल्लाह से"।

[कु सू अन्फाल आ १]

समीक्षा– जो यह लूट मचावें, डाकू के कर्म करें करावें और खुदा तथा पैगम्बर और ईमानदार भी बनें, यह बडे आश्चर्य की बात है और अल्लाह का डर बतलाने और डाका आदि बुरे काम भी करते जायं और "उत्तम मत हमारा है" कहते लज्जा भी नही हठ छोड़ के सत्य वेद मत का ग्रहण न करें इससे अधिक कोई बुराई दूसरी होंगी ?

हमारा उत्तर– विपक्ष ने लूट का समर्थन किया है जो उससे नहीं बन पड़ा है। लूट कितना गन्दा काम है यह भुक्त भोगी जानते हैं। सुन्नी मुसलमानों ने भारत के मन्दिर धर्म स्थान व नगरों को लूटा बर्बाद किया इसे इतिहास के पृष्ठों पर देखा जा सकता हैं। पाकिस्तान के मुसलमानों ने बंगला देश को लूट कर बर्बाद किया यह कल की सी बात है। लूट के दौरान ढाई लाख बंगाली औरतों से व्यभिचार किया था

यह बंगला देश की पालिया मैन्ट में बताया गया था लाखों औरतों को जहाजों में भर कर अरब व पाकिस्तान पकड़ ले गये यह अखवारों में छपा था। वह कौनसा अत्याचार है जो लूटने वाले कुरान परस्त मुसलमानों ने बंगला देश में या अन्यत्र सदैव नही किये थे? लूट में फौजों के हाथी घोडे, लड़ाई का सामान हीं नही होता था। कुरान ने औरतों की लूट व उनसे व्यभिचार करने की भी आज्ञा दी है देखो प्रमाण—

"और जाने रखो कि जो चीज तुम लूट कर लाओ उसका पांचवा भाग खुदा का ओर पैगम्बर! का और पैगम्बर के सम्बन्धियों का अनाथों का और गरीवों का और मुसाफिरो का"

(कु सू अनफाल आ ४६)

"और ऐसी औरतें जिनका खाविन्द जिन्दा है उनको लेना भी हराम है, मगर जो कैद हो कर तुम्हारे हाथ लगी हो उनके लिए तुमको खुदा का हुक्म है....."

(सू निसा आ २४)

क्या लूट में सभी तरह की शरारतें कुरान द्वारा समर्थित नही है मजे की वात यह है कि माल, जेवर, धन दौलत फौजी सामान व औरतों की कुल लूट में पांचवा भाग खुदा और पैगम्बर ह मौहम्मद (सल्ल) साहव तथा उनके रिश्तेदारों को भी विना मेहनत के घर बैठे वाँधा गया था जो बे लेते और इस्तैमाल करते होंगे। यह सव ऐसे ही होता था जैसे आज भी अपने सरदार को लुटेरे लोग उसका हक दिया करते है। समझ में नही आता कि लूट में खुदा का हिस्सा क्यों रखा गया था? कहा जा सकता हैं कि खुदा के हिस्से को खैरात कर दिया जाता था, पर लूट में मिली या पकड़ी ओरतों और वादियो के अपने हिस्से का खुदा और

पैगम्वर क्या करते थे ? क्या यही इस्लाम का नारी जाति के प्रति इन्साफ था ? क्या इसी व्यभिचार व अत्याचर का विपक्षी मौलाना समर्थन करते हैं ? यदि स्वामी दयानन्द जी ने इस गुन्डा गर्दी की निन्दा की है तो क्या गलत किया है ? गरीवों, बूढ़ों, बच्चों औरतों को लूट लेना उन्हें बरवाद कर देना क्या यही इस्लामी तालीम का नमूना है ? क्या ऐसी बातों का समर्थन करने वाली किताव खुदाई मानी जा सकती है ? गलत प्रकार से प्राप्त किया धन अच्छे काम में लगाना भी मूर्खता है। कुरान परस्त मौलाना ! द न आदि कर्मो के लिए कमाई भी उत्तम होनी चाहिए न कि लूट व डकैती की हो।

वास्तविक वात यह है कि लूट कराने व उसमें पांचवाँ हिस्सा पैगम्वर व उनके सम्बन्धियों का वाँध कर ह मोहम्मद साहव के लिये आमदनी का एक जरिया बना रखा गया था वरना उनका हिस्सा क्यों बांधा था ? युद्धों में लूट प्रजा व औरतों की नीच लोग करते हैं। वहादुर सेनायें तो विपक्षी फौजों को हरा कर देश पर अधिकार करती तथा प्रजा की जान व माल की रक्षा करना धर्म मानती हैवेकेवल विपक्षी राजा के कोश व धन सम्पति पर अपना अधिकार करती है नारी जाति को स्पर्श करना पाप समझती है। जैसा कि भारतीय सेनाओं ने पाकिस्तान युद्ध में दोनों पाकिस्तानों की विजय के साथ सद् व्यवहार वहा की प्रजा के साथ किया था। जब कि गुन्डा पाकिस्तानी फौजों ने बंगला देश की ढाई लाख औरतों से व्यभिचार वप्रजा के साथ घोर अत्या चार करके इस्लामी असभ्यता का परिचय दिया था। इस्लामी सभ्यता को जीते जागते सवूत आप खुद हैं जो जवाव देने के स्थान पर गालियाँ स्वामीं दयानन्द को अपने लेख में अधिक देते हैं। आपको सभ्यता पूर्वक लेख लिखने की भी तमोज नही है।

समीक्षा न० ७९– आयत— "और लडो उनसे यहाँ तक कि न रहे फितना अर्थात बल काफिरों का और होवें दीन तमाम वास्ते अल्लाह के और जानो कि तूम यह कि जो कुछ तुम लूटो किसी वस्तु से निश्चय वास्ते अल्लाह का है' पांचवाँ हिस्सा उसका और वास्ते रसूल के"। कुसूरत अन्फाल आ ३९—४१ इससे बीच की आयत में लिखा है— "पस अगर मान जावें तो जो कुछ यह लोग करेंगे अल्लाह उसे देख रहा है"।

स्वामी जी की समीक्षा—ऐसे अन्यायी से लड़ने लड़ाने वाला मुसलमानों के खुदा से भिन्न शान्ति भंगकर्ता दूसरा कौन होगा....ऐसे लूट के माल से खुदा का हिस्सेदार बनना जानो डाकू बनना है....."।

उत्तर-इस बिषय में हम ऊपर की समीक्षा न० ७६ में यथेष्ठ लिख चुके के है। अबी खुदा ने स्वयं अपना हिस्सा लुटेरों से लूट में मांगा है उसने कई जगहों पर लोगों से पाप क्षमा करने का वायदा करके कभी दूना कर देने का लालच देकर कर्ज भी माँगा है, ऐसा कुरान में अनेक जगहों पर लिखा मिलता है। इस्लाम को लड़ कर फैलाने का आदेश तो ऊपर स्पष्ट आ गया है। जो लोग मुसलमान बनने को राजी हो जावें तो उन पर ज्यादती न करने के भी कुछ उपदेश कुरान में मिलते हैं। पर जब तक मुसलमान न बने तब तक लड़ने के भी आदेश दिये गये हैं। युद्ध करने का उद्देश्य ही कुरान के अनुसार मुसलमान तलवार के जोर पर बनाना होता था और यही उपरोक्त आयत से भी स्पष्ट है। यदि युद्ध में शत्रुओं से लड़ने का ही आदेश उक्त आयतों में माना जावे तो खुदा का ही दीन (इस्लाम) फैल जावे इसमें कोई रुकावट न रहे, उन गैर मुस्लिम काफिरों को लूटो यह आदेश क्यो दिए गये? शत्रु को पराजित करने की बात तो ठीक हो

सकती है पर विपक्ष को पराजित करना अथवा उनको विवश करके मुसलमान बनाने का हुक्म देना, उसकी प्रजा को, स्त्री बच्चों, धन सम्पति को लूटने की बात कहना दूसरी ही बात है और गन्दी शर्त है। अतः स्वामी जी की आलोचना सर्वथा सत्य हैं कि आपका खुदा अशान्ति फैलाने वाला है वह शान्ति कर्ता नहीं हैं।....

वेदों से परमात्मा से भक्त अपनी सुरक्षा तथा धूर्त, डकैत, लुटेरों, धार्मिक कार्यों में विघ्न डालने बालों को तिरस्कृत व नष्ट करने की प्रार्थनायें जो आपने उद्धृत की हैं उनमें क्या दोष है ? कुरान की तरह यह कहां लिखा हैं कि धार्मिक विचार भेद रखने वालों से लड़ो उन्हें लूटो, उनकी बीवियों को पकड़ लाओ, उनसे व्यभिचार करो या उन लोगों को मार-मार कर अपने मजहब में मिला लो और न मिलाना चाहें तो उनको कत्ल कर दो ! आपने मनु स्मृति का जो प्रमाण दिया है जिसमें शत्रु पक्ष की धन सम्पति व स्त्रियों कों लेने की बात है वह प्रमाण सर्वथा प्रक्षिप्त है, क्योंकि वैदिक मर्यादा के विरुद्ध है। वैदिक युद्ध नीति में असमर्थ वृद्ध युद्ध से अलिप्त, शरणागत, स्त्रियों, रोगी व बालकों आदि पर शस्त्र न उठाने एवं उनकी पूर्ण रक्षा करने का विधान है।

कुरान में जहां खुदा और पैगम्बर का लूट में पांचवा हिस्सा स्वयं अरबी खुदा ने बांधा है वही हम यह भी देखते हैं कि खुदा ने लोगों को अनेक प्रकार के लालच दे देकर कर्जा भी मांगा है जो कि उसकी शान में बट्टा है। खुदा को कर्जा दो—

कुरान में लिखा हैं—कोई हैं जो खुश दिली से खुदा को कर्ज दे कि उसके कर्ज को उसके लिये कोई गुना बढ़ा देगा.....''।

[सू वकर अ २४५]

"खुश दिली से खुदा को कर्ज देते रहो तो हम जरूर तुम्हारे

गुनाह तुमसे दूर कर देंगे....." । [सू मायदा आ १२]

"ऐसा कौन है जो खुदा को खुश दिली से उधार दे फिर वह उसके लिये दूना कर दे उसके लिये इज्जत का फल है !

[सू हदीद आ ११]

"अगर तुम अल्लाह को खुश दिली से उधार दो तो वह तुमको दूना करेगा तुम्हारे पाप क्षमा करेगा....." ।

[सू तगावुन आ १७]

"जिसने नेकी की उसका दसगुना उसको मिलेगा, बदी की तो वह उसके बराबरा सजा भुगतेगा....." ।

[सू अनआम आ १६०]

मौलाना ! ऊपर आपने देखा कि खुदा कर्ज मांगता है, कहीं दूना फल कही दस गुना फल और कहीं कई गुना अर्थात बे हिसाब फल देने व पापों को माफ करने का भी लालच देता है इससे माल-दार लोग तो कर्ज देकर अपने पाप माफ करा कर हूरों भरी जन्नत को पा लेंगे मगर गरीब ईमानदार खुदा परस्त तो घाटे में रहेंगे । ऊपर कुरान से आपने देखा कि खुदा कर्जा भी मांगता है और लूटों में पांचवा हिस्सा भी लेता है क्या इन बातों से खुदा की शान पर धब्बा नही लगता है ? क्या अरबो खुदा बिलकुल तुम्हारे जैसा ही आदमी हैं जो किताब छपाने के बहाने मुसलमानों से रुपया माँगते और फिर किताबें बेच कर सब पैसा खुद खा जाते हैं, हिसाब भी नही देते हैं । आश्चर्य है कि आपने अपने में व अरबी खुदा में कोई फर्क नही माना है आप सच्चे मुसलमान दीखते हैं ।

समीक्षा नं० ६५—आयत—"कह निश्चय अल्लाह गुमराह करता है जिसको चाहता है और मार्ग दिखाता है तरफ अपनी उस मनुष्य को जो रुजूअ होता है" । [कु सूरे राद आ २७]

स्वामी जी की समीक्षा—"अल्लाह गुमराह करता है तो खुदा और

शैतान में क्या भेद हुआ, जब कि शैतान दूसरों को गुमराह अर्थात बहकाने से बुरा कहा जाता हैं तो खुदा भी वैसा ही करने से बड़ा शैतान क्यों नही ? और बहकाने का पाप उसे क्यों नही होना चाहिए"।

उत्तर- कुरान की यह आयत यदि किसी भावुक भक्त ने कही होती तब तो यह बात कही जा सकती थी कि कोई किसी को नेक रास्ते पर ले जाने की कोशिश करे पर जब तक खुदा की मर्जी न होगी वह उधर न जा सकेगा। पर यहां तो कुरान शरीफ में खुदा स्वयं दावे के साथ अपने बारे में कहता है कि बिना मेरी मर्जी के कोई अपना रास्ता नही बदल सकता है। मैं ही जिसे चाहता हूं गुमराह बनता हूं और जिसे चाहे बिना वजह रास्ता दिखाता हूं। इस बिषय में स्पष्ट समझने के लिए कुछ प्रमाण और देखें—

"ऐ पैगम्बर ! इन लोगों को सीधे मार्ग पर लाना तुम्हारे काबू का नहीं, बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है सीधे मार्ग पर लाता है·····"। [सूरे बकर रु ३७ आ २७२]

"क्या तुम यह जानते हो कि जिसको खुदा ने भटका दिया उसको सीधे रास्ते में ले आओ और जिसको अल्लाह भटकावे सम्भव नही कि तुम में से कोई उसके लिए रास्ता निकाल सकें·····'

[कु सू निसा रु १२ आ ८८]

खुदा जिसको चाहे माफ करे और जिसको चाहे सजा दे·····"

[कु सू मायदा रु ३ आ १८]

"क्या तुझको मालूम नही कि आसमान और जमीन में अल्लाह ही की हुकूमत है, जिसको चाहे सजा दे और जिसको चाहे क्षमा करे अल्लाह हर चीज पर ताकतवर है·····"।

[कु सू मायदा रु ५ आ ४०]

"इनमें ऐसी भी है कि तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं और उनके दिल पर हमने पर्दे डाल दिये। इनके कानों में बोझ है ताकि तुम्हारी बात न समझ सके और अगर यह सब करामात भी देख लें तो भी ईमान लाने वाले न हो ....."।

[सू अनआम रु ३ आ २५]

"अगर खुदा चाहता तो वे शरीक न ठहराते और हमने तुम को इन पर निगहबान नही किया और न तुम इन पर बकील हो।

[सू अनआम रु १३ आ १०७]

"जिसको खुदा सीधी राह दिखाना चाहता है उसके दिल इस्लाम के लिए खोल देता है और जिस शख्स को भटकाना चाहता है उसके दिल तंग कर देता है....."। [सू अनआम रु१४/१२५]

और हमने बहुतेरे जिन्न और मनुष्य दोजख के ही लिये पैदा किए हैं....."।१८६खुदा कहता हैं"फिर हम उनके आपस में फूट डाल देंगे"। [सू यूनिस रु ३ आ २८]

" हमको जब किसी गांव को मार डालना मंजूर होता हैं, हम उसके खुशहाल लोगों को आज्ञा देते हैं। फिर वह उसमें बे हुक्मी करते हैं, तब उन पर यह सजा साबित हो जाती है। फिर हम उस बस्ती को मार कर तबाह कर देते हैं।

[सू बनी इसराइल आ १६]

"और (दीन के रास्ते दो प्रकार के हैं) एक सीधा रास्ता खुदा तक है और दूसरा टेड़ा और खुदा चाहता तो तुम सबको सीधा रास्ता दिखा देता"। ९। सू नहल।

"खुदा चाहता तो तु सबको एक ही गिरोह बना देता, मगर वह जिसको चाहता हैं गुमराह करता है और जिसको चाहता है सुझाता है....." ९३। सू नहल।

मिश्कात किताबुलईमान जिल्द १ सफा२८हदीस नम्बर ७३ से

स्पष्ट लिखा है 'जमीन और आसमान बनाने से पचास हजार साल पहिले अल्लाह ने इन्सान की तकदीर बनाई । अल्लामियां का तख्त पानी पर था । "जन्नती जन्नत में जायेंगे चाहे उनके कर्म कितने ही बुरे होंगे । दोजखी दोजख में जायेंगे उनके कर्म कितने ही अच्छे क्यों न हों" । (मिश्कात जि१हदीस नं० ९०)

उपरोक्त प्रमाणों के सन्दर्भ में क्या दुनियां का कोई मौलवी स्वामीदयानन्दजीकी समीक्षा कोगलत बताने का साहस कर सकता है ? यदि खुदा का यह दावा झूठा नही है कि लोगों को वहकाने उनके कानों ब दिमागों पर सच्चाई को न समझ सकने के लिये परदे डालने, उन्हें गुनहगार बनाने का गलत काम खुदा ही का है । उनमें फूट डालने, अलग-अलग गिरोह में बांटने, एक गिरोह बना कर मिलकर न रहने देने का खुराफाती काम अरबी खुदा ही करता है, जैसा कि वह बारबार कुरान में दावे से कहता है तो शैतान और खुदा में क्या अन्तर होगा ? खुशहाल वस्तियों कोतवाह करने के लिये खुदा लोगों को गलत हुक्म देता है और जब शरीफ लोग उनको नही मानते हैं तो खुदा बहाना पकड़ कर उनको मार डालता है । क्या ऐसा अन्यायी शख्स खुदा हो सकता है ? विना कारण विना गुनाह या सवाब किये लोगों की तकदीर जमीन बनने से ५०,००० साल पहिले लिख देने वाला खुदा कौन था ? जैसा जिसकी तकदीर में उसने लिख दिया कोई उसके खिलाफ कर्म कैसे कर सकेगा ? जन्म से गूगा, बहरा, अन्धा, गरीब, अमीर लोगों को बनाने बाला अरबी खुदा जालिम स्वेच्छाचारी अन्यायी क्यों नही माना जाबेगा ? जब जीबों को पहली ही बार पैदा किया गया है तो कर्मानुसार दण्ड या इनाम श्रेणी भेद पूर्व कर्मानुसार तो आग मान नही सकते जैसा कि आवागमन के चक्र के आधार पर हिन्दू समाज या हम लोग मानते हैं । कुरान ने आपकी मान्य-

तानुसार खुदा की निर्दोष सत्ता को भी बिना आधार के जालिम व अन्यायो साबित कर रखा है। अतः आप की वकवास व्यर्थ है। कुरान व सत्यार्थ प्रकाश दौनों के सिद्धान्तों में भारी अन्तर है। सत्यार्थ प्रकाश आपकी मदद नही कर सकता है। बैदिक धर्म में जोव कर्म करने में स्वतन्त्र है वे अपने कर्मानुसार अपने भाग्य का निर्माण करते हैं और प्रभु उनको तदनुसार फल देता है। ईश्वर उनको कर्म करने को प्रेरणा नही देता है इसी लिए जीव स्वकर्मानुसार परिणाम में दुःख सुख उठाते हैं। यदि ईश्वर ही उनको कुकर्म करने में इस्लाम के अनुसार विवश करने वाला होगा तो जीवों पर उनके कर्मो का उत्तर दायित्व नही होगा बल्कि खुदा ही उनके पाप पुण्यों का जुम्मेवार होगा। कुरान की स्थिति इस बिषय में अत्यन्त नाजुक व हास्यास्पद है। आप को ऐसे कमजोर मुकद्मे की झूठी वकालत नही करनी चाहिए थी। खुदा ही लोगों को शिरकत करने देता है ब करवाता है और उन्हें फिर काफिर बता कर कत्ल करता है। आप बतावें कि चोर से जो कहे चोरी कर और साह से कहे कि जाग' ऐसे दुष्ट व्यक्ति को कौन पसन्द करेगा परन्तु यह आपके अरबी खुदा मियां है जो दोनों पलडे बजाते हैं। लोगों को खुद गुमराह भी करें और उन्हें फिर काफिर बता कर उन पर जुल्म भी करें यही आपके खुदा की खुदाई है क्या ? देखो कु० सूरे तौबा रु० १६ आ १२३ में लिखा है—

"मुसलमानो ! अपने आस-पास के काफिरों से लड़ो और चाहिए कि वह तुम से सख्ती मालूम करें और जाने रहो कि अल्लाह उन लोगों का साथी है जो बचते है"।

विपक्षी मौलाना बतावें कि क्या यही इस्लाम का विश्व बन्धुत्व है ? क्या कुरान को सर्व मान्य पुस्तक साबित किया जा सकता है ?

समीक्षा अंक ७८ आयत –"अल्लाह मुसलमानों के साथ है (१९) ऐ लोगों जो ईमान लाये हैं। पुकारना स्वीकार करो, वास्ते अल्लाह के और वास्ते रसूल के (२०) ऐ लोगों जो ईमान लाये हो, मत चोरी करो अल्लाह की, रसूल की, और मत चोरी करो अमानत अपनी की (२७) और मक्र करता था अल्लाह भला मक्र करने वालों का है" (३०)

(सूरे अनफाल आ० १९, २४, २७, ३०)

स्वामी जी की समीक्षा– क्या अल्लाह मुसलमानों का पक्षपाती है ? जो ऐसा है तो अधर्म करता है, नही तो ईश्वर सब सृष्टि भर का है। क्या खुदा बिना पुकारे नही सुन सकता बहरा है ? और उसके साथ रसूल को शरीक करना बहुत बुरी बात नही है ? अल्लाह का कौनसा खजाना भरा है जो चोरी करेगा ? क्या रसूल और अपने अमानत की चोरी छोड़ कर अन्य सबकी चोरी किया करें ? ऐसा उपदेश अविद्वानों और अधर्मियों का हो सकता हैं। भला जो मक्र करने वाले का संगी है वह खुदा कपटी छली और अधर्मी क्यों नही इस लिये यह कुरान खुदा का बनाया हुआ नहीं है किसी छली कपटी का बनाया होगा। नही तो ऐसी अन्यथा बातें लिखित क्यों होती ?

उत्तर–इस स्थल में कई आयतों एक ही साथ देकर स्वामी जी ने सम्मिलित समीक्षा करदी है पर अर्थ सही दिये हैं । विपक्षी ने व्यर्थ का रोना रोया है पर उक्त समीक्षा को काट नही सका है । यह भी नही बता सका है कि स्वामी जी ने कौनसी गलत की है मक्र शब्द का अर्थ वह तदवीर युक्ति बताता है पर कुरान के अनेक टीकाकारों ने मक्र का अर्थ मकर ही किया है।

१– श्री अहमद बशीर साहब, एम० ए० कामिल, दबीर कामिल

मौलवी अर्थ करते हैं—

"जब काफिर तुम पर फरेब करते थे कि तुसको पकड़ रखें या तुमको मार डालें या तुमको देश निकाला कर दें और काफिर चाल करते थे ओर अल्लाह भी चाल करता था चाल और खुदा सब चाल चलने बालों से अच्छी चाल चलने वाला है।

(३०) [पृ० १८७—१८८]

२- तर्जुमा कुरान (लखनऊ नवलकिशोर प्रेस छापा) शाह अब्दुल कादिर साहब—

"और जब फरेब बनाने लगे काफिर तुझको बैठा दें या मार डालें या निकाल दें और वह फरेब करते थे और अल्लाह भी फरेब करता था और अल्लाह का फरेब सबसे बहतर" (३०)

[सफा १८०]

३- और जिस वक्त मकर करते थे साथ तेरे वह लोग कि काफिर हुए तू कि बन्द कर रखे तुझको या मार डालें तुझको या निकाल दें तुझको और मकर करते थे वह और मकर करता अल्लाह नेक मकर वालों का है" (३०) तर्जुमाकार हजरत अल्लामाशाह अब्दुल कादिर साहब देहली छापा" (सफा११०)

उपरोक्त तीन तर्जुमों में मक्र शब्द के अर्थ चाल चलना फरेब करना, मकर करना, यह तीनों अर्थ मकर मक्कारी, छल कपट फरेब धोखा देना आदि समानार्थक है। विपक्षी जो कुछ ज्यादा पढ़ा लिखा भी नही मालूम होता है। वैसे ही पांचबा सवार बनने चला है। जब कुरान खुदा को छली कपटी मक्कार धोखे बाज बताता है तो स्वामी दयानन्द जी की समींक्षा सत्य ही साबित हो गई कि कुरान खुदाई नही है क्यों कि वह निर्दोष खुदा को बदनाम करता है और मुसलमानों का पक्षपाती घोषित करता है। आप बतावें कि ऐसा कौनसा लाच्छन है जो पवित्र खुदा पर कुरान

ने न लगा रखा हो।

जब कुरान ही खुदा के साथ किसी को शरीक न करने का आदेश देता है "खुदालाशरीक है" देखो सूरे आराफ आ १६३ तो मुहम्मद साहब को कलामें में खुदा के साथ जोड़ने से आप घोर काफिर सिद्ध है। मौलाना ! अल्लाह मियाँ के मकर दगा फरेबी छल कपट करने में माहिर होने के बारे में कुरान में कई स्थानों पर वर्णन आता है स्वामी जी ने तो एक ही उद्धरण दिया हैं। अन्य प्रमाण भी देखो।

"और फरेब किया इन काफिरों ने और फरेब किया अल्लाह ने और अल्लाह का दाव (फरेब) सबसे बहतर है" (५४)

[सू आलइमरान]

"काफिर (मुनाफिक) जो हैं दंगाबाजी करते अल्लाह से हालांकि खुदा उन्ही को धोखा (दगा) दे रहा है....."।

[सू निसा आ १४२]

सूरते यूसुफ आ ७६ में खुदा फरमाता हैं 'यों हमने यसुफ के फायदे के लिये मकर किया' तथा सूरते तारिक में खुदा ने कहा है "वह मकर करते हैं मकर करना और मकर करता हुं मैं मकर करना" आ १६।

इस प्रकार खुदा के मकर (धोखा) करने और उसके इस हुनर में माहिर होने की बात कुरान में बड़े गर्व के साथ कई बार बताई गई है। तब आप खुदा को इस मक्कारी कला में दक्ष होने की कुरान की बात पर शर्माते क्यों हैं ? क्या कुरान पर विश्वास नहो है ?

समीक्षा अंक ६१ आयत–"निःसन्देह अल्लाह बुरे लोगों और काफिरों को जमा करेगा दोजख में, निःसन्देह बुरे लोग धोखा देते हैं, अल्लाह को और उनको वह धोखा देता हैं। ऐ ईमान वालो !

मुसलमानों को छोड़ काफिरों को मित्र मत बनाओ''।

[सू निसा आ १४२—१४३]

स्वामी जी समीक्षा– मुसलमानों के बहिश्त और अन्य लोगों के दोजख में जाने का क्या प्रमाण ? जिसका खुदा धोखाबाज है उसके उपासक लोग क्यों न धोखेबाज हों ?

उत्तर– विपक्षी का उत्तर है कि मुसलमानों के जन्नत में या काफिरों के दोजख में जाने का प्रमाण स्वयं कुरान हैं अन्य प्रमाण कोई उस के पास नही है वह आयत पेश करता है "यह मुनाफिक ईश्वर के साथ धोखे बाजी कर रहे हैं, "हांलाकि वास्तव में ही ईश्वर ही ने उनको धोखे में डाल रखा है"। (सू निसा आ १४२) आगे इसी आयत को खुलास करते हुये लिखता है—

"आयत का तात्पर्य यह है कि मुनाफिक अपनी धोखा बाजी के फलस्वरूप धोखे में पड़े हुए थे तथा अपना लोक और परलोक जीवन नष्ट कर रहे थे, कर्मो का फलदाता ईश्वर है इस लिए उसको इस तरह वर्णित किया गया है कि ईश्वर ने मुनाफिकों को धोखे में डाल रखा है"।

हमारा कहना है कि खुदा के सभी शब्द ज्यों के त्यों मानने होंगे। खुदा ने अपने को कुरान में धोखे बाज बताया है और यह कहा है कि लोग जो धोखा करते थे वे अपनी मर्जी व आजादी से करते थे। और यह बताया है कि खुदा भी उनके साथ धोखेबाजी का व्यवहार बदले में करता था। यहां पर यह स्पष्ट है कि मुनाफिक व खुदा दोनों एक दूसरे के साथ छल कपट फरेब धोखा करते थे और दोनों में खुदा ही ज्यादा बढ़िया फरेबी था ! मौलाना को खुदा की बात पर विश्वास नही है और खुदा को सच्चा नही मानता है ! बल्कि खुदा की बात को झूठी घोषित कर रहा है इस लिए पक्का काफिर है।

मोलाना ! तुम कुरान की बुद्धि बिरुद्ध बातों का समर्थन क्यों करते हो । जन्नत में तो इस्लाम के ७३ फिरकों में से केवल एक ही जाने पावेगा । (शेष ७२ फिरके तो दोजख में भूने जावेंगे और तुम बेचारे उन बदकिस्मत ७२ फिरकों में से एक के हों ! देखो मिश्कात किताबुलईमान सफा जि० १ हदीस १६३ पहिले यह सप्रमाण पता लगा लो कि तुम जन्नती फिरके के मुसलमान हो या७२दोजखी फिरकों में शामिल हो ?

समीक्षा अंक १५५ आयत–"निःसन्देह वह मकर करते हैं एक मकर और मैं भी मकर करता हूं एक मकर" ।

[सू तारिक आ १५—१६]

स्वामी जी की समीक्षा–क्या खुदा भी मक्कार है ? और क्या चोरी का बदला चोरी और झूठ का बदला झूठ है कि खुदा मकर के बदले मकर करता है ? यदि कोई और किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के घर में चोरी करे तो क्या प्रतिष्ठत व्यक्ति को भी चाहिए कि चोर के घर जाकर चोरी करे ?

स्वामी दयानन्द जी की समीक्षा पर विपक्षी लिखता है स्वामी जी ने यहां भी कपटाचार किया है । आयत १७ छोड दी है जिससे इन आयत १५, और १६ का तात्पर्य विदित हो जाता है ।

उत्तर– हम यहाँ आयत नं० १० से १७ तक की पूरी सामिग्री पेश करते हैं । आयतें यह हैं—

"जिस दिन भेद जाने जायेंगे (९) (उस दिन) आदमी का न कुछ बल चलेगा और न कोई सहायक होगा (१०) पानी वाले (चक्कर खाने वाले) आसमान की कसम (११) और फट जाने वाली जमीन की कसम (१२) यह बात दो टूक है (१३) और नही यह बात हसी की है (१४) अलबत्ता वह लगे हैं एक दाब करने में (९५) और में लगा हूं एक दाव करने

में (१६) सो ढील दे मुनकिरों की, ढील दे उनको सब्रकर(१७)
(सू तारिक)

इसमें अरवी खुदा बन्द साहब ने दोवार आसमान व जमीन की कसमें बिना जरूरत के खा कर कौनसी योग्यता दर्शाई है ? यदि इन बेकार की आयतों को स्वामी जी ने छोड़ दिया तो क्या भूल की ? इनसे तो खुदा की कसम खाने की मजाक ही बनती है। असल वातें खुदा कैं दाव पेच खेलने की है, वह भी नाचीज आदमी के साथ। अगर किसी बराबर की हस्ती या ताकत वाले के साथ दाव पेच खुदा मियां खेलते तब तो शान की बात थी। इससे खुदा की कमजोरी प्रगट होती है। अगर आदमी दाव फरेव करता है तो उससे वह भी बदनामी उठाता है खुदा भी बदनामी उटावेगा। जैसे से तैसा बर्ताव खुदा व उनके कुरान की शान में बट्ठा लगाने बालीबात हैकोई चोरी करे तो दूसरा भीं चोरी करे कोई जिनाकरे तो खुदा भी जिना करे कोई दूसरे की औरत को बिगाड़े तो दूसरा भीं उसकी औरत को बिगाडे जैसा कि सू बकर आ १७८ में औरत के बदले औरत के साथ जूल्म या वदला लेने का हुक्म दिया गया है। शायद इसी लिये जैसे के साथ तैसा बर्ताव करने का नमूना मक्कारी के बदले मक्कारी करने की वात कह कर खुदा ने अपने स्वभाव का प्रदर्शन कुरान में अनेक जगह किया है। तब स्वामी दवानन्द का आरोप पूर्णतः सत्य प्रमाणित हो गया और मौलाना की बकवास व्यर्थ रही।

आक्षेप नं० १ आयत–आरम्भ साथ नाम अल्लाह के क्षमा करने बाला दयालु"।

स्वामी जी की समीक्षा– मुसलमान लोग कहते हैं कि यह कुरान खुदा का कहा है परन्तु इस कथन से विदित होता है कि उसका बनाने बाला कोई दूसरा है क्यों कि जो ईश्वर का बनाया होता

तो आरम्भ साथ नाम अल्लाह के ऐसा न कहता किन्तु आरम्भ वास्ते उपदेश मनुष्यों के ऐसा कहता.....जो वह क्षमा और दया करने हारा है तो उसने मनुष्यों के सुखार्थं अन्य प्राणियों को दारुण पीडा दिला कर मार के माँस खाने की आज्ञा क्यों दी"।

उत्तर- विपक्षी मौलाना ने इस अर्थ को गलत बताया है। हम तीन कुरान भाष्य स्वामी जो के अर्थ के समर्थन में उपस्थिति करते हैं—

१- "शुरू करता हूं मैं साथ नाम अल्लाह बख्शीश करने वाले मेहरवान के"।

तर्जुमा कुरान ह० अल्लामाशाह अब्दुल कादिर साहब दिल्ली छापा।

२- "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरवान निहायत रहम वाला"।

तर्जुमा कुरान ह० अल्लामाशाह अब्दुल कादिर साहब लखनऊ छापा।

३- (शुरू) अल्लाह के नाम से जो निहायत दयावान मेहरवान है"

तर्जुमा हिन्दी कुरान श्री अहमद वशीर साहब एम० ए० लखनऊ।

उपरोक्त तीनों तर्जुमे स्वामी जी के अनुकूल है अतः मौलाना का आरोप गलत हैं। मिस्टर मौलाना! दरअसल तुमको अरबी भी नही आती तुमको किस बेवकूफ ने तालीम दी है। तुम्हारा "बिस्मिल्लाह" शब्द लिखना भी गलत है। अरबी के ब इस्म+ अल्लाह इन तीन अक्षरों के मेल से ब+इस्मअल्लाह शब्द बनता है, बिस्मल्लाह नही बनता है। इनको मिला कर बिस्मिल्लाह बनाना या बोलना अरबी व्याकरण से गलत है। अब समझे कि तुम्हारे कुरान का बिस्मिल्लाह ही जब गलत है तो आगे क्या होगा

यह सभी समझ सकते हैं। अब अपने कान पकड़ों और कभी बिस्मिल्लाह मत बोलना।

दूसरी बात भी स्वामी की ठीक कि खुदा नम्बर एक का बेरहम है जो मूक जीवों को हत्या करा कर उनका गोश्त खाने का हुक्म कुरान में देता है। माँस में तो जहर होता है यूरिक एसिड़ मछली में ८ ग्रेन भेड़ बकरी में ६ ग्रेन सुअर में ८ ग्रेन बछडे में ८ ग्रेन चूजा में ६ ग्रेन गाय में ६ ग्रेन गाय के जिगर में १६ ग्रेन गाय के शोरवा में ५० ग्रेन गाय की भुनी बोटी में १४ ग्रेन होता है। इस प्रकार आपका खुदा आपका पक्का बैरी है जो जहर युक्त मांस खिला कर आपको मरने की इजाजत देता है। गोश्त खाने से कितने प्रकार के शारीरिक तथा मानसिक विकार पैदा होते हैं यह वैज्ञानिकों से पूछो। इस लिए स्वामी दयानन्द जी ने आपके अरबी कुरानी खुदा को बेरहम बताया है जो बिलकुल ठीक है। आया ख्याले शरीफ में ?

आपने जितने प्रमाण माँसाहार के समर्थन में कुछ हिन्दूपुस्तकों के दिये हैं वे सभी मूर्खों को मान्य हैं तथा आर्य समाज को अमान्य हैं। वे मासाहारी लोगों को प्रक्षेप हैं।

वैदिक धर्म तो स्पष्टतया अविमां हिंसी। द्विपदी माँ हिंसी। अहिंसा परमोधर्मः। मित्र स्याअहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। आदि वाक्यों द्वारा समस्त प्राणी जगत को मित्र दृष्टि से देखने का आदेश देता है सभी की हिंसा का विरोध करता है। क्या खुदा राक्षस है जो अपनी ही प्रजा की हत्या करने का आदेश देता है ? खेद है कि आपके कुरान ने खुदा की निर्दोष सत्ता को भी कलंकित कर दिया हैं। स्वामी दयानन्द जी की समीक्षा पूर्णतया सत्य एवं अकाट्य है।

पशु यज्ञ तथा माँस भक्षण आर्यों कों कभी मान्य नहो था यह

राक्षसों और धूर्तो के कर्म हो सकते है। इस विषय में आप अपना अज्ञान मिटाने के लिए निम्न पुस्तकों को देख सकते हैं । "८ वेद और पशु यज्ञ" ले पं० शिव शर्मा जी महोपदेशक। (२) वैदिक पशु यज्ञ मीमांशा लेखक श्री पं० विश्वनाथ जी वेदोपाध्याय गुरु कांगड़ी (३) प शुबलि अधर्म है' ले अमर स्वामी जी महाराज (४) क्या वेदों में मास भक्षण का विधान है ? ले० आचार्य डा०शिवपूजन सिंह जी कुशवाहा एम० ए० (५) प्राचीन भारत में गो मांस एक समीक्षा प्रकाशक गीता प्रेस गोरखपुर (६) अण्डा और मांस में दिष। ले०पं० रघुनाथ प्रसाद जी सा०दे०आ०प्र०नि० सभा दिल्ली । अन्डा और मांस में बिष ले० डा० श्रीराम आर्य।

मौलाना ! हमारे धर्म शास्त्र तो मांसाहार को भिष्टा भोजन के समान घ्रणित मानते हैं किन्तु समर्थन आप बाइबिल और कुरान में देख सकेंगे क्यों कि माँस में जहर यूरिकएसिड होता है जो जल्दी मारने का स्वास्थ्य बिनाशक काम करता है हमारी तो मान्यता है-

सुरा मत्स्या मधु मांसमासवं कृसरौदनम् ।
धूर्तैः प्रवर्तित ह्यं तन्नेतद वेदेषु कल्पतिम् (महा शन्ति पर्व)

शराब, मछली, मधु, नशीले आसव आदि का प्रचलन धूर्तो ने किया है इनका उल्लेख वेदों में नही है।

आपको जहां कही भी शराव, मछली, माँस, भक्षण की प्रशंसा किसी भी दुनियां की किताव में या समर्थन इनको खाने का मिले आप भी उन स्थलों को धूर्तो की मिलावटें मान लिया करें क्यों कि आप भी भारतीय आर्यो की नस्ल में से हैं चाहे भ्रम वश अब चेले अरबी खुदा के बने बैठे है और आपने अपनी हुलिया बदल ली है जबकि आपको अपने भारतीय रक्त का होने का गर्व होना चाहिए था। अरबी विदेशी सभ्यता ने हजारों खुराफातें ने आप लोगों के दिमाग में घुसेड़ दी है आपका भारतीयों से रक्त का नाता

है और अरबें से पानी का रिश्ता है । रक्त का रिश्ता पानी के रिश्तों से भारी और करीब होता है । आपको भारतीय सभ्यता संस्कृति बेष भूषा खान पान और भारत की जमीन व हवा से प्रेम होना चाहिए न कि अपने पूर्वजों के दुश्मनों के धर्म व सभ्यता से जिन्होंने तुम्हारे पुरखों को मार-मार कर अपना मजहब स्वीकार करने पर मजबूर किया था ?

समीक्षा नं० २ आयत–सब स्तुति परमेश्वर के वास्ते हैं जो परवदिगार अर्थात पालन करने हारा है सब संसार का क्षमा करने वाला दयालु है । "सूरते फातिहा आ० १-२"

स्वामी जी की समीक्षा– जो कुरान का खुदा संसार का पालन करने हारा होता और सब पर क्षमा और दया कर्ता होता तो अन्य मतवाले और पशु आदि को भी मुसलमानों के हाथ से मरवाने का हुक्म न देता । जो क्षमा करने हारा है तो क्या पापियों पर भी क्षमा करेगा ? और जो वैसा है तो·····काफिर को कत्ल करो अर्थात जो कुरान और पैगम्बर को न माने काफिर हैं ऐसा क्यों कहता ? इस लिये कुरआन ईश्वर कृत नही दीखता ।

उत्तर– स्वामी जी की समीक्षा विलकुल उचित है कुरान में खुदा का रहम व क्षमा केवल मुसलमानों तक ही सीमित है । शेष अन्य मजहब वालों के लिए खुदा स्वयं शत्रु अपने को घोषित करता है और मुसलमानों को भी उनसे दोस्ती न करने को कहता है । चन्द प्रमाण देखें ।

काफिर परिभाषा– जो मनुष्य अल्लाह का दुश्मन हो और उसके रसूलों का और जिब्रील का और मीका एल फरिश्ते का तो अल्लाह भी ऐसे काफिरों का दुश्मन है । [कु सू० बकर ९८]

हमने काफिरो के लिए दोजख का जेलखाना तैयार कर रखा है"

[सू बनी इसरायल आ०८

" अल्लाह काफिरों को नसीहत नही दिया करता" ।

[सू वकर अ० २६४]

"जो लोग काफिर हैं अल्लाह के यहाँ न तो उनके माल ही कुछ काम आयेंगे और न उनकी औलाद हीं और यही दोजख के ईधन हैं । [सू आलइमरान आ १०]

"मुसलमानों को चाहिए कि मुसलमानों को छोड़ कर काफिरों को अपना दोस्त न बनावें और जो वैसा करेगा, तो उससे और अल्लाह से कुछ सरोकार नही"....। [सू आलइमरान २८]

इनकी तबियत यह है कि जिस तरह खुद काफिर हो गये उसी तरह तुम भी इन्कार करने लगे ताकि तुम एक ही तरह हो जाओ तो जब तक खुदा के रास्ते में देश त्याग न जावे इनमें से दोस्त न बनाओ । फिर अगर मुंह मोड़ें तो उनको पकड़ो और जहां पाओ उनको कत्ल करो । उनमें से दोस्त और सहायक न बनाना" ।

[सू निसा रु·१२ आ २६]

"जो खुदा की उतारी हुई (किताव) के मुताबिक हुक्म न दें तो यही लोग काफिर हैं" ४४और काफिरों को दोस्त न बनाओ'५७

[सू मायदा]

अन्य मत वालों, अपने विश्वास के अनुसार इस्लाम से भिन्न प्रकार से ईश्वर उपासना या पूजा करने वालों, दूसरे पैगम्बरों महा पुरुषों या देवताओं के उपासकों कुरान, मुहम्मद, फरिश्तों दोजख जन्नत व कयामत पर बिश्वास न रखने वालों के विरुद्ध कुरानी खुदा ने अति कठोर आदेश दिये हैं, मुलमानों को कत्ल करने व उनको दोस्त न बनाने को कहा है । क्या यही सर्व धर्म समभाव है इसलाम का ? यदि दूसरे मत बाले भी ऐसा ही व्यवहार मुसलमानों के साथ करना सीख लें तो क्या दुनियां में शान्ति रह सकेगी ? ऐसे खुदा उसकी किताव कुरान उसके मजहब व इस्लाम

से यदि लोग बचने लगें तो आप चौकते क्यों हैं ? आपका खुदा वकौल कुरान अत्यन्त पक्षपातो व द्वेषी था। वह रहीम (दयालु) तो नाम का भी नही था। मनुष्यों के अतिरिक्त अन्य मूक पशुओं पक्षियों को मारने खाने के आदेश कुरान में सूरे बकर आ ५७/सूरे मायदा आ २-४+९६/सू अनआम १४५-१४६ सू नहल आ१४-११५ आदि में अनेक जगहों पर दिये हुए है जो कुरान व उसके अरबी खुदा को क्रूर व हिंसक साबित करते हैं। कुरानी खुदा जहान का परिवर्दिगार व रहीम हरगिज २ नहीं है कुरानी खुदा केवल मुसलमानों को क्षमा करेगा ससार को नही दो एक महत्व पूर्ण प्रमाण और देखें—

काफिरों और मुनाफिकों से जहाद कर और उन पर सख्ती कर उनका ठिकाना तो नरक है....''। (तहरीम आ९)

कु० सूरते फतह रु २ आ १६ में लिखा है—

ऐ पैगम्बर ! देहाती जो पीछे रहे इनसे कह दो कि तुम बड़े लड़ने वालों के लिए बुलाये जाओगे। तुम उनसे लडो या वे मुसलमान हो जावें....''।

लड़कर विपक्षियों क तलवार के जोर पर मुसलमान बनाने यह एक ऐसा सबूत है जिसे कोई काट नही सकता है। एक प्रमाण और भी देखें—

'किताब वाले जो न खुदा को मानते हैं और न कयामत को ओर न अल्लाह और उसके पैगम्बर की हराम की हुई चीजों को हराम समझते है और न **सच्चे दीन को मानते हैं उनसे लडो** यहां तक कि जलील होकर (अपने) हाथों से जजिया दें....''।

[कु सूरते तोवा रु५ आ२९]

इस आयत के फुट नोट में कुरान के हिन्दी भाष्यकार मौलान श्री अहमद वशीर साहव एम० ए० मौलवी कामिल दवीर लखनऊ

लिखते हैं – **जजिया उसको कहते हैं जो मुसलमान शासक अपने खिलाफ मजहव वालों से लिया करते थे।**

कुरान की उपरोक्त आयत भीं स्पष्ट रूप से मुसलमानों के गैर मुस्लिम विचार वालों या मजहव बालों से लड़ने, उनपर यहां तक अत्याचार करने को कहती है कि बेचारे जान वचाने को या तो मुसलमान बन जावें और या फिर अपनी प्रतिष्ठा को खो कर धार्मिक टैक्स (कर) गैर मुस्लिम होने को सजा का मुसलमानों को देना स्वीकार कर लें।

मौलाना ! यह तुम्हारा सर्व धर्म सम भाव, दूसरों के धार्मिक विचारों के प्रति कुरान व इस्लाम की-असहिष्णुता का नमूना हैं इसो लिए हम कहते हैं कि यदि कुरान और इस्लाम न होता तो ससार में खून की नदियाँ धर्म के नाम पर नही वहती।

मौलाना ! जजिया टैक्स पराजित शत्रुओं सेनही बल्कि विधर्मी प्रजा इस्लामेतर लोगों से मुस्लिम नवाबों द्वारा लिया जाने वाला धर्मिक टैक्स होता था, यह आपके ही कुराने पाक के मुस्लिम भाष्यकार ने स्पष्ट किया है आपने व्यर्थं झूठ रोना क्यों रोया है? ज्ञात होता है कि आपको न तो कुरान ही आता है और न इस्लाम धर्म की ही खाक जानकारी है। वैसे ही अन्धों में काना राजा बनने का शौक सवार हैं।

समीक्षा नं० ३ "आयत"—मालिक दीन न्याय का तुझ ही की हम भक्ति करते हैं और तुझी से सहायता चाहते हैं, दिखा हमको सीधा रास्ता" (सू फतिहा आ ३-४-५)

स्वामी जो की समीक्षा—क्या खुदा नित्य न्याय नही करता है किसी एक दिन न्याय करता है इससे तो अंधेर विदित होता है……"।

उत्तर-इस पर विपक्षीं ने स्वामी जी की सीधी साधी समीक्षा को भी न समझ कर व्यर्थ वकवास की है। हमारा कहना है कि

उक्त आयत सही नही है। जब खुदा विश्व भर का मालिक हैं तो उसे एक ही प्रलय के मनहूस दिन का मालिक बताना उसका खुला अपमान करना है। भारत के राष्ट्रपति को राम नगरिया का राष्ट्रपति बताना तो मूर्खता पूर्ण होगा। वह तो उसके विशाल साम्राज्य का एक बिन्दू बराबर स्थान होगा। विश्वपति कहने के बाद खुदा को जमीन के हर गाँव हर शहर कस्बे का मालिक बताना बुद्धिमानी का काम नही होगा इस्लाम के अनुसार कयामत का (न्याय का) दिन तो मरघट या दुनियां के विनाश का अत्यन्त मनहूस दिन होगा इससे तो खुदा को दुनियां बना कर उसे सरसब्ज बनाने के रूप में याद किया जाता तो उत्तम होता। मरघट का स्वामी बनना तो दुष्ट लोग भी पसन्द नही करते हैं। और न मालिके योमिद्दीन ईय्याका कहने से खुदा की शान बढ़ती है। हां आपको जन्नत की हूरों को भोगने को या लोडों (गिलमें) के लालच में जन्नती जनानखाने में घुमने का अवसर कयामत के बाद मिलेगा इस बहम में फस कर आप इस दिन को पसन्द करते हो तो बात दूसरी है या जो खुदा स्वयं न्यायी नही है उससे आपको भी जन्नतरूपी औरतों का जनानखाना नसीब नही होगा, विश्वास रखें। स्वामी जी की समीक्षा को आप समझने के लिए पहिले वैदिक धर्म की मान्यताओं को ठीक से समझना सीखें। जब खुदा ने आपको मुसलमान बना दिया तो कुरान के अनुसार आपका रास्ता तो स्वयं ही सीधा है। क्या आप उसे गलत मानते हैं जो सीधा रास्ता दिखाने की प्रार्थना करते हैं ? क्या खुदा ने कुरान में गलत लिखा हैं कि सीधा रास्ता इस्लाम का है।

आर्य शब्द का अर्थ श्रेष्ठ पुरुष का है और दस्यु का अर्थ

उनसे विपरीत लोगों का है। चाहे वे किसी भी स्थान में रहते हों इसमें पैगम्बर कुराम आदि को मानने न मानने की शर्त नहीं हैं। स्वामी जी ने सभी लोगों को गुमराह करने वाली पुस्तकों व अन्ध विश्वासों की समीक्षा की है और लोगों को सन्मार्ग प्रदर्शित किया है जोंकि मानबोचित कार्य हैं। अरब देश की गलत मान्यताओं का भारत में प्रचार करना आपका कार्य अवश्य गलत है। बल्कि भारतीय संस्कृति के साथ गद्दारी है जो आपके पूर्वजों ने की है आपने तपाक से पूछा है कि मुसलमानों ने कहाँ कहा है कि उन्ही का रास्ता सीधा है। आंखों के अन्धे मौलाना ! तुमने कभी कुरान को पढ़ के भी देखा है या वैसेहीइस्लाम में पाचबेंसवार बनना चाहते हो। हम पीछे कई आयतें दे चुके है जिनमें सीधा रास्ता खुदाई मजहब इस्लाम को बताया गया है। लगता हैं आपको कुरान पर भी विश्वास नही रहा है। चन्द प्रमाण पुनः देखें—

"दोन तो खुदा के नजदीक इस्लाम है"।

(सू आल इमरान आ १९)

"और जो व्यक्ति इस्लाम के अलावा किसी और दीन को तलाश करे तो खुदा के यहाँ उसका दह दीन कबूल नही और कयामत में वह नुकसान पाने वालों में होगा।

[आयत इमरान आ ८५]

और हमने तुम्हारे लिए दीन इसलाम को पसन्द किया....."।

(सूरे मायदा आ ३)

अब आप समझे कि खुदाई सोधा रास्ता खुदाई दीन इसलाम कुरान ने बताया है जिसे जबरदस्ती फैलाने के लिए कुरान में आदेश दिये गये हैं। देखो सूरे फतह आ १६ पर स्पष्ट आदेश। यह प्रमाण पीछे दिया है।

समीक्षा अंक ४ आयत–"उन लोगों का रास्ता कि जिन पर तूने

अपनी नियामत की और उनका मार्ग मत दिखा कि जिन पर तूने गजब अर्थात अत्यन्त क्रोध की दृष्टि की और न गुमराहों का मार्ग हमको दिखा ..." ।

(सू फातिहा आ ५-६-७)

स्वामी जी की समीक्षा– जब मुसलमान लोग पूर्व जन्म और पूर्व–कृत पाप पुण्य को नहीं मानते तो किन्हीं पर नियामत अर्थात दया करने और किन्हीं पर न करने से खुदा पक्षपाती हो जायेगा क्योंकि पाप पुण्य सुख दुःख देना अन्याय की बात है....." ।

उत्तर–स्वामी जी के इस आक्षेप का कि बिना कारण किसी को सुख किसी को दुःख देने से खुदा पक्षपाती व अन्यायी बनता है उत्तर मौलवी से नहीं बन पड़ा है । उसने व्यर्थ की बक–वास करने में १४ पृष्ठ अपनी पुस्तक के पुनर्जन्म वेद ईश्वरी ज्ञान है । या नहीं और इस पर ऐतिहासिकों व पौराणिकों के लेख कई समाचार पत्रों के उद्धरण आदि देते हुए निरर्थक वकवास की हैं जिसका विषय से कोई सम्बन्ध वह नहीं जोड सका है । जब कि उसे बिना कारण जीवों को नेक या बुरा पैदा करने अथवा नेक और भ्रष्ट रास्ता दिखाने वाला होने पर खुदा को निर्दोष, निष्पक्ष साबित करना था जो वह नहीं कर सका है ।

कुरान सूरे अनफाल रु० २८ आ २३ में लिखा है—"अल्लाह के नजदीक सब जानबरों में निकृष्ट बहरे और गूंगे हैं जो नहीं समझते (२२) अगर अल्लाह उनमें भलाई पाता तो इनको सुनने की योग्यता भी जरूर देता....." । (२३)

प्रश्न यह है कि जो लोग जन्म से गूंगे और बहरे पैदा होते हैं उनको यह सजा खुदा किस गुनाह के बदले में देता है जो बेचारे सारी उम्र दुःख उठाते रहते हैं ? खुदा की इस बे इन्साफी की

कोई सफाई सारी उम्र कोई मौलवी कोशिश करके भी नही दे सकता है। खुदा का गुस्सा करना भी खुदा को दिमागी कमजोरी प्रगट करता हैं। मजिस्टेट को तो शान्त मस्तिष्क से हर बात सुननी देखनी चाहिए और तब उचित निर्णय लेना चाहिए। गुस्सा तो दिमाग को पागल बना देता है। कुरान में खुदा के गुस्सा करने का भी उल्लेख आता हैं "भला जो शख्स अल्लाह की मर्जी का हो वह उस शख्स जैसा कैसे हो सकता है जो खुदा के गुस्से में आ गया हो....."। (सू आलइमरान रु १७ आ १६३)

"और उनकी इन्कारी खुदा का गुस्सा ही बढ़ाती है....." ।३६

(सू फातिर)

हम ही नही कोई भी समझदार आदमी गुस्से बाज खुदा को खुदा नही मान सकेगा। सूरते फतिहा में ऊपर गुमराहो का मार्ग न दिखाने को कहा है, पर गुमराह जो जन्म से होता है जिनके कान व दिमाग पर खुदा खुद ही मुहर कर देता है और खुद ही विना वजह उनको गुमराह पैदा करता है तो सारा दोष तो गुमराही का खुदा का ही होता है। किसी के पूर्व कर्मो का फल गुमराह को तो मिलता नही है क्यों कि बेचारा पहली ही वार जन्म लेता है जैसा इस्लाम मानता है। तव आपने व्यर्थ की बकवास क्यों की है? स्वामी जी की बात आपको विना कांन पूंछ हिलाये मान लेनी चाहिये थी।

कुरान में पुनर्जन्म—कुरान में एक स्थान पर पुनर्जजन्म (आवागमन) को भी मान लिया गया हैं। देखो प्रमाण—

लोगो ! तुम्हारा एक खुदा है, सो जो लोग पिछली जिन्दगी का विश्वास नही करते उनके दिल इन्कारी है और वह घमण्डी है। (कु सूरे नहल रु ३ आ २२)

इसमें यह स्वीकार किया हैं कि लोगों का वर्तमान जन्म सुख व दुख पिछली जिन्दगी (पूर्व जन्म) में दिए उनके कर्मो के परिणाम

स्वरूप है। आवागमन का इससे उत्तम प्रमाण और क्या चाहिए। हमारी यह डिग्री मौलाना पर उसी की किताव कुरान से हो गई है। अतः पुनर्जन्म का सिद्धान्त कुरान को भी मान्य है।

नोट-यदि कोई अन्य आदमी किसी को दुखी देख कर खुदा के उस पर क्रोध की बात कहता तब तो दूसरी बात थी जैसा कि लोग ना समझी से कह देते हैं। पर उक्त आयते खुदा ने स्वयं अपने क्रोध करने की कही है अतः वे ज्यों की त्यों माननीय व आपत्ति जनक है। उन पर कल्पना करने की जरूरत नही है क्यों कि यदि वे गलत हैं तो को झूठा खुदा को मानना पड़ेगा

मौलाना ने पुनर्जन्म और वेद कब से हैं इन विषयों पर बड़ी बेतुकी बकवास की है। वह अपने विषय से ही हट गया है ऐतिहासिक लोग वेदों के बारे में व पुराण क्या मानते है, यह यहाँ का प्रसंग नही है इस विषय पर वह हमसे स्वतन्त्र शास्त्रार्थ कर सकता है। ऐतिहासिकों का तो कोई सर्व सम्मत एक निर्णय ही नही है। पुराणों में भी परस्पर मत भेद है यह हमारी मान्यता का खण्डन उनसे नही हो सकता है और न बे हमको मान्य हैं। अतः उनके उद्धरण देना पागलपन है। यदि विपक्षी आवागमन के सिद्धान्त को नही मानता है जो कि कुरान को भी मान्य है वह अपने खुदा को निर्दोष कर्म फल प्रदाता कभी भी साबित नही कर सकेगा। कोई जन्माध, गूंगा, या जन्म से रोगी खुदा पर इस बात का दावा कर दे कि उसने उसे इतना दुःखी क्यों पैदा किया है तो न तो इस मुल्ला पर और न कुरान के अरबी खुदा पर कोई सफाई का जबाव कोर्ट में बन पड़ेगा। इसका सही जवाव कुरान के अनुसार पिछली जिन्दगी के कर्म ही मौजूदा जिन्दगी की दशा के लिए जिम्मेवार हैं ऐसा मानना ही है।

सभी ऐतिहासिक कुरान को ह० मुहम्मद साहब की रचना

घोषित करते हैं जैसा कि कुरान की अन्तः साक्षी से भी स्पष्ट है। तब क्या आप भी ऐतिहासिकों के अनुसार कुरान के बारे में वही मानते हैं जो वे मानते हैं ? यदि आप मान लें तो हम आपका मुंह मीठा कराने को तैयार हैं १०१) पुरुस्कार भी देगे ? हो जाइये तैयार इनाम लेने के लिए।

समीक्षा अंक १३० "आयत" कसम है कुरान द्रढ़ की निश्चयत् मेजे हुओं में से है। उस पर मार्ग सीधे के उतारा है गालिब दयावान ने। (कु० सूरे यासीन आ १, २,)

स्वामी जी की समीक्षा—अब यह देखिए कुरान खुदा का बनाया होता तो वह उसकी सौगन्ध क्यों खाता ? यदि नबी खुदा का भेजा होता तो लेपालक बेटे की स्त्री पर मोहित क्यों होता ? यह कथन मात्र है कि कुरान के मानने बाले सीधेमार्गपरहैसीधामार्गबहीहोताहैं जिसमें सत्य मानना, सत्य बोलना, सत्य करना, पक्षपात रहित न्याय धर्म का आचरण करना आदि हैं, और इसके विपरीत का त्याग करना, सो न कुरान में न मुसलमानों में और न उनके खुदा में ऐसा स्वभाव है। यदि सबसे प्रबल पैगम्बर मुहम्मद साहब होते तो सबसे अधिक विद्वान और शुभ गुण युक्त क्यों न होते ? इस लिए जैसे कुंजडी अपने बेर को खट्टे नहीं बतलाती वैसे ही यह बात है"।

उत्तर- इस सत्य आलोचना से चिड़ कर विपक्षी ने भारी बकवास की है ऋषि के लिए अपने गन्दे स्वभाव के अनुसार अनेक अप शब्दों का प्रयोग किया है।

कसम अपने से ऊंची व प्रतिष्ठा प्राप्त बड़ी वस्तु या सत्ता की खाई जाती है न कि अपने से छोटी वस्तु या सत्ता की जो व्यक्त किसी वस्तु को पैदा करता है या बनाता है वह स्वयं पैदा की या बनाई वस्तु से निश्चय ही अधिक महत्व रखता हैं। कोई कारीगर

अपने बनाये कोट या पतलून को कसम खावें या कोई लेखक अपने लेख की कसम खावे खुदा अपनी बनाई जमीन, कुत्ता, घोड़ा, सूरज चाँद कुरान की कसम खावे तो वह स्पष्ट मजाक की ही बात बनेगी। खुदा कस्में भी अजीब किस्म की कुरान में खाता हैं—

तिरमिजी शरीफ हदीश १३७७ में लिखा हैं सिर्फ अल्लाह की कसम खानी चाहिए। तो खुदा बन्द ने दूसरों की नीचे लिखी कस्मे को खाकर गलती क्यों की हैं? नमूना देखें—

तारे की कसम जब वह टूटता हैं। सू नज्य १। नून कलम की और जो कुछ वह लिखते हैं उसकी कसम (२) सू कलम मैं पूरब और पश्चिम के परवदिगार की कसम खाता हूं (४० सू मआरिज) नही नही चांद की कसम (३२) और रात की कसम जब वह गुजरने लगे (३३) और सुबह की जब रोशनी हो (३४) सू मद्दसिर। आसमान की कसम जिसमें बुर्ज हैं। और गवाह की जिसके सामने गवाही देता हैं उसकी कसम (४) सू बरुज। आसमान की और रात को आने वालों की कसम (१) और फट जाने वाली जमीन की कसम (१३) सू तारीक। कसम पैदा करने वाले आदम की और उसकी औलाद की (३) सू बलद। सूरज और उसकी धूप की कसम (२) दिन चढ़े की (२) सू जुहा। अंजीर और जैतून की कसम (१) तूरसीना पहाड की कसम (२) सू तीन। हांफ कर दौडने वाले घोड़े की कसम (२) सू आदियाल खुदा की कसम—। (६३) सू नहल। जाहिर किताव की कसम (२) सू दुःखान। उडा कर बखेरने वाले की कसम (१) सू जरियात। लिखी किताव की कसम (२) सू नूर। काफ कुरान बुजुर्ग की कसम.....(१) सू काफ। मैं शाम की सुर्खी की कसम खाता हूं (१६) सू इन्शिकाक इत्यादि।

इस प्रकार कुरान में खुदा ने जो कस्में खाई हैं हमने उनमें से थोडी सी ऊपर दी है जिन्हें देख कर कोई भी खुदा पर हंसे विना

न रहेगा। कसम हमेशा वही लोग खाते हैं जिनकी बात पर कौल फैल पर कोई दूसरा भरोसा नही करता है और भरोसा उसका नहीं किया जाता है जो या तो इतना गलत आदमी हो कि उसका विश्वास उठ चुका हो अथवा जो गलत बात पर लोगों का विश्वास जमाने की कोशिश करता हो। अरबी खुदा भी अपने कामों से ऐसा अविश्वासनीय साबित होता हैं। लोक प्रसिद्ध है कि झूठे ही कसमें खाते हैं सच्चा कसम क्यों खायेगा। शरीफ आदमी भी कसम नही खाया करते है।

कुरान, घोड़ा आदि जिनकी खुदा ने कसमें खाई हैं खुदा से भी ज्यादा महत्व रखते थे ऐसा कसमों से प्रकट है। यदि कोई आदमी इसी प्रकार घोड़ा, गधा सुअर, डन्डा, जूता-चप्पल, लोटा, गिलास पैन्ट, कोट आदि की कसमें खाने बैठ जावे तो क्या लोग उस पर हंसे बिना रह सकेंगे? खुदा ने दूसरे खुदा की कसम खाई है तो क्या इस्लाम कई खुदा मानता है। जैसा कि कुरान ने माना है। मुहम्मद साहब पैगम्बर थे, इस जरासी बात के लिए कसम खाने की क्या जरूरत थी? पैगम्बर तो जो भी व्यक्ति होगा वह अपने गुणों व कामों से स्वयं प्रकाशित हो जावेगा। जब लोग कुरान पर ही इमान नहीं रखते थे और न उसे खुदाई मानते थे तो उसमें खाई कसमों पर भी विश्वास नहीं कर सकते थे। तब व्यर्थ कसमें खाने से क्या लाभ था। आसमान में बुर्ज है। औलों के पहाड़ आसमान में जमे हैं। कागज की तरह आसमान लपेटा जावेगा, खुदा घोड़ों, पहाड़ों की कसम खाता है क्या यही बातें कुरान के इलहाम होने का बढ़िया सबूत है? इस्लाम सीधा रास्ता है या टेड़ा यह तो उसके काफिर पड़ोसियों से लड़ने आदि के आदेशों से स्वयं प्रकट है। यदि वह सीधा रास्ता होता तो लोग खुशी से स्वीकार कर लेते और लड़ लड़ कर तलवार के जोर से इस्लाम फैलाने का न तो खुदा आदेश देता और न इतिहास रक्त रन्जित हो पाता। खुदा

यदि सभी पर गालिब होता तो शैतान खुदा का सामना न कर पाता और खुदा उससे अपने सामने सिजदा करवाकर छोड़ता। पर खुदा का उस नाचीज हस्ती पर कोई बस नहीं चल सकता। इससे खुदा का गालिब सब पर हावी या (सर्व शक्तिमान) होना वा बताना गलत है। इस प्रकार यह आयत सही साबित नही हो सकी है।

अब रहा जैद (मुहम्मद साहब के ले पालक बेटे)की वह जैनव से मुहम्मद साहब के निकाह की बात। दुनियां में मां बहिन बेटा बेटी आदि जबान से कहने या मान लेने पर हमेशा लोग उनके साथ मां बहिन बेटा बेटी जैसा ही व्यवहार करते हैं। जिनकी निगाह में इसका महत्व नहीं होता है वे सगी बहिन को बेटी या बेटे की पुत्री तुल्य बधू को भी नहीं छोड़ते हैं। कुरान सू अहजाब में भी जैनव की शादी मुहम्मद साहब से होने का जिक्र मिलता है।

एक लेखक ने इस घटना के बारे में इस प्रकार लिखा है।

(देखो कुरान परिचय भाग १)

"हजरत की सातवीं बीबी जैनव पहिले हजरत के मुतबन्ना गोद लिए बेटे जैद की बहू थी। जैद के तलाक देने पर हजरत ने उसे अपनी बीबी बनाया। इस घटना का मदारि लजुन वब्बत व रौज्ता उल अहबाब से संक्षिप्त हाल यों है— मौहम्मद साहब ने जैनब को मुश्किल से राजी करके उसका अपने ही लेपालक बेटे जैद के साथ निकाह कराया था। एक दिन जब मुहम्मद साहब अकस्मात जैद के घर गये और बेटे की बहू को ऐसे कपड़ो में नहाते देखा कि जिससे उसकी सुन्दरता न छिपी। पैगम्बर साहब की तबियत ने जोश खाया और वे चिल्ला उठे 'सुभान अल्लाह मकल-उल कलूब' अर्थात खुदा की तारीफ है जो (आदमियों) के दिलों को बदल देता हैं।' जैनब ने यह बात सुनी अन सुनी कर दी और अपने पति को यह बात जता दी। जैद ने जैनब को तलाक दे दी

और फिर हजरत ने उससे शादी कर ली। जब लोगों में यह चर्चा होने लगी....तो तुरन्त उनको चुप करने को यह आयत कुरान में बना दी गई। खुदा ने कहा "जैद ने उसे तलाक दे दिया तो हमने उसका निकाह तुमसे कर दिया ताकि ईमान वालों में ले पालक बेटे की स्त्रियों से शादी करने में कोई तंगी न रहे।"

(कु सू अहजाब आ ३३-३७)

इस्लामी मान्य पुस्तक काजीखां जिल्द ४ सुफा ४०६ पर भी लिखा है "अगर कोई शख्स अपने लड़के की औरत से हराम कारी करे तो इस पर कोई शरई हद नहीं।"

मौलाना ! इसमें तो खास बेटे की बहू भी नहीं छोड़ी गई है। जैद तो ले पालक बेटा था। आप लीपा पोती क्यों करते है ? कुरान की इस आयत के सम्बन्ध में मौ० जुलालैन कुरान भाष्य में लिखते है "पैगम्बर साहब ने उस जैनब का निकाह जैद से कर दिया था। पीछे कुछ दिनों बाद उसकी निगाह उस पर पड़ी और उनके दिल में उसकी मुहब्बत पैदा हो गई। लेकिन जैद के दिल में घृणा उत्पन्न हो गई।" यही बात तफसीर सिराजे मुनीर भाग ३ पृ० २४९ पर भी कही गई है। (कु० प० पृ० ५७२) इस्लाम की पुस्तकों के आधार पर यह स्पष्ट हैं कि स्वामी दयानन्द जी का यह लिखना कि 'यदि नबी खुदा का भेजा होता तो ले पालक बेटे की स्त्री पर मोहित क्यों होता ?" सर्वथा सत्य एव साधार है। लगता है कि बिपक्षी मौलाना ने न तो कुरान ही पढ़ा है और न इस्लामी साहित्य ही कभी देखा है। पांचवा सवार बनने को कलम उठाने का शौक उसे लग गया है। आपके अरबी खुदा ने मुसलमानों को कुरान में झूंठी कसमें खाने पर गुनाह न मानने का आश्वासन दे रखा है। यथा—

"मुसलमानो ! तुम लोगों के लिए खुदा ने तुम्हारी कस्मों को तोड़ डालने का भी हुक्म रखा है .... ।२। (सू तहरीम) ॥

तुम्हारी फिजूल कस्मों पर खुदा तुमको नहीं पकड़ेगा, लेकिन उनको पकड़ेगा जो तुम्हारे दिली इरादे हैं।"

ऊपर के प्रमाणों में खुदा मुसलमानों को उकसाता है और घोषणा करता है कि विपक्षी मौलाना यदि कसम खाकर मुकर जावे या धोखा देने को जाहिरा कसम खावे और मन में कुछ और विचार रखता हो तो खुदा उस को नहीं पकड़ेगा। जब खुदा दूसरों को मिथ्या कसम खाने को कह सकता है तो हो सकता है उसने भी जो कसमें खाई हैं वे भी झूंठी होवें। ऐसी दशा में कुरान व उसके खुदा की कसमों या वायदों पर कोई विश्वास कैसे कर सकेगा? कोई मामूली इन्सान अपनी बात मनवाने को कसमें खावे तो खावे बेचारे खुदा बन्द को भी कसमें खानी पड़ी है।

कितने आश्चर्य की बात है। खुदा के वायदे गलत होने का सबूत पीछे पृष्ठ ५५ पर दिये गये जन्नत के गलत प्रमाण से स्पष्ट है कसमों के सम्बन्ध में तिरमिजी शरीफ में सुफा ३०२ पर खुलासा लिखा है 'हदीस नं० १३७१ देखो "और जब तुम किसी काम के करने की कसम खाओ फिर उस काम के खिलाफ करना अच्छा देखो तो जो अच्छा है वह करो।"

हदीस नं १३७२ जिसने किसी चीज के जरूर करने की कसम खाई और कह दिया इन्शा अल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा तो ऐसा करूंगा और फिर ऐसा न हो) तो उस की कसम नही टूटी"

देखा आपने कुरान ने कसमें तोड़ने का रास्ता बताया तो हदीस ने उसकी पुष्टि भी कर दी है। कोई आदमी जिसके साथ कसम खाकर आप वायदा कर दें आप की कसम के सच्ची या झूठी होने का निर्णय कैसे करेगा? आप तो 'इन्शा अल्लाह' कह कर झूंठी कसम खाकर दूसरों को धोखे में डाल ही देंगे।

आप के खुदा ने झूंठी कसम खाने पर आप को तो माफ कर दिया है पर मुस्लिमों के बारे में उसका उल्टा कानून भी देखें।

दो तरह का कानून बनाने से खुदा की वे इन्साफी भी देखें—

कुरान सूरते तौवा आ० १३ में अरबी खुदा कहता है "तुम इन लोगों से क्यों न लड़ो, जिन्होंने अपनी कस्मों को तोड़ डाला है कस्में तोड़ने की इजाजत मुसलमानों को देना, बचन देकर मुकर जाने झूंठी कसमें खाने की छूट देना और यदि गैर मुस्लिम कसम तोड़ डालें तो उन पर हमले कराना उनसे मुसलमानों को लड़ाना क्या यहां खुदाई इन्साफ है जिस पर विपक्षी कठमुल्ला को नाज है मौलाना ! ऐसे अरबी खुदा से तो हमारे देश के मुन्सिफ मजिस्ट्रेट लाख गुना बेहतर है जो सभी के साथ एकसा न्याय करते हैं। भारत में कानून सभी के लिऐ एकसा है पर कुरान का कानून पक्ष-पात बाला होने से अरबी खुदा पर कलंक है।

मौलाना ! एक बात और बताओ ! कुरान में तलाक के बारे में लिखा है कि तलाक तीन बार में पूरी होती है। दो वार तलाक होने के बाद तक मर्द बीबी से समझौता हो सकता है और वे फिर एक हो सकते हैं किन्तु अब अगर औरत को तीसरी वार तलाक दे दी तो इसके बाद जब तक औरत दूसरे पति के साथ निकाह न करले इसके पहिले पति के लिए हलाल नही हो सकती। हां अगर उसका दूसरा पति उससे बिषय भोग करके तलाक दे दे तो मियाँ बीबी पर कुछ पाप नही कि फिर एक दूसरे से प्रेम कर ले वशर्ते कि दौनों को आशा हो कि अल्लाह की बंधी हुई हद पर कायम रह सकेंगे।" कु स् बकर स २९ आ २३०।

यहाँ पूंछना यह है कि यह गैर के साथ निकाह व सम्भोग की शर्त औरत के लिये जरूरी क्यों की गई है ? क्या इससे औरतें बेशर्म नहीं बनेगी ? मर्द व उसकी औरत में निकाह व तलाक की लौट पलट कितनी वार चल सकती है. कोई इसकी हद भी है या नहीं ? अगर बेटा ले पालक हो तो क्या खास बाप बेटे की बहूं की यह लौट पलट हो सकती है क्यों कि उसकी बीबी को उसका बाप

तो निकाह में उसके तलाक देने पर ले ही सकता है जिसकी मिसाल जैद की बीवी की मोजूद है।

कुरान द्वारा मान्य खुदाई किताब तौरात में व्यवस्था विवरण पैरा २४ में लिखा है "यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को व्याह ले और उसके बाद उसमें कुछ लज्जा की बात पाकर उससे अप्रसन्न हो तो वह उसके लिये त्याग पत्र लिखकर और उसके हाथ में देकर उस को अपने घर से निकाल दे।२। और जब वह उसके घर से निकल जाये तब दूसरे पुरुष की हो सकता हैं ३ परन्त यदि वह उस दूसरे पुरुष को भी अप्रिय लगे तो और वह उसके लिये त्याग पत्र लिख-कर और उसके हाथ में देकर उसे अपने घर से निकाल दे या वह दूसरा पुरुष जिसने उसको अपनी पत्नी कर लिया हो मर जाय ४। तो उसका पहिला पति जिसने उसको निकाल दिया हो, उसके अशुद्ध होने के बाद उसे अपनी पत्नी न बनाने पाए क्यों कि यह यहोवा (खुदा) के सम्मुख घृणित बात है।"

खुदाई दोनों आदेश परस्पर विरोधी है। तौरात में गैर से सम्भोग के बाद स्त्री को पूर्व पति नहीं ले सकता है परन्तु कुरान में विना गैर से सम्भोग कराये पूर्व पति उसे नही ले सकता है। इन खुदाई आदेशों ने औरत को गुन्डा मर्दो के बीच तमाशा बना डाला है। उसकी कोई इज्जत इन मजहबी किताबों में नही है। पता नही ईसाई यहूदी और मुस्लिम औरतें इन मजहबों में रहकर कैसे इन व्यवस्थाओं का बर्दाश्त करती हैं। इस्लाम की मान्य पुस्तक काजीखां में जिल्द ४ सुफा ४०६ में तो यहाँ तक लिखा है। "अगर कोई शख्स अपने लड़के की औरत से हराम कारी करे तो उस पर कोई शरई हद नही होती है" अब मुहम्मद साहब! इस पर आप अपनी राय पेश करें कि क्या यह ठीक है?

समीक्षा अंक ८ आयतें—

जो तुम इस बस्तु के सन्देह में हो जो हमने अपने पैगम्बर पर

उतारी है तो इस जैसी एक सूरत ले आओ और अपने साक्षी लोगों को पुकारो अल्लाह के विना सच्चे हो जो तुम! और कभी न करोगे तो उस आग से डरो जिसका ईधन मनुष्य है और काफिरों के वास्ते पत्थर तैयार किये गये है।" कु सू वकर आ २२-२३

स्वामी जी की समीक्षा—

भला यह कोई वात है कि इसके सद्रश्य कोई सूरत न बने ११ दोजख में काफिरों के वास्ते पत्थर .... और पुराणों में म्लेक्षों के वास्ते घोर नरक लिखा है, किसकी वात मानी जावे ? .... ।"

हमारा उत्तर—

विपक्षी ने लिखा है कि अनुवाद स्वामी जी ने गलत किया है। यह दावा उसका गलत है। यही अर्थ सभी मुस्लिम कुरान फाष्य-कारों ने किया है। खुदा को शर्त लगाने का भी शौक था और इसी लिए उसने कुरान जैसी सूरत बनाने का चेलेन्ज दिया था शर्त लगाई पर जब किसी ने एक सूरत बनाकर दिखादी तो तुरन्त खुदा अपने वायदे से मुकर गया था और नई शर्त पेश कर दी कि—

(ऐ पैगम्बर) ! क्या (काफिर) कहते हैं कि इसने कुरान को अपने दिल से बना लिया है तो इन से कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो तुम भी इसी तरह की बनाई हुई दस सूरतें ले आओ और खुदा के सिवाय जिसको तुमसे बुलाते वन पड़े बुलाओ, अगर तुम सच्चे हो।" ॥१३॥ कु सू हूद ॥

मजहवी दीवानेपन से अन्धा विपक्षी मौलाना बतावे कि उसका अरवी खुदा अपनी बात का पक्का क्यों नहीं है। जो वाजी हारने पर शर्त मुकर जाता है ? ऐसे कच्ची जवान वाले खुदा पर कोई विश्वास कैसे कर सकता है ? हम खदा के पहिले वायदे(शर्त) को काटने के लिये सबूत में एक सूरत बिल्कुल मिस्ल कुरान के इसी पुस्तक से प्रथक छपा रहे हैं। विपक्षी देखें सोचे और अगर वह ईमानदार आदमी है तो ऐलान करें कि खुदा का दावा गलत

हो गया क्यों कि इन्सान ने कुरान जैसी सूरत बना कर दिखादी है। इससे यह भी साबित हो गया है कि कुरान इन्सान ने ही बनाया था। स्वामी जो की आलोचना सत्यार्थ प्रकाश में सोलह आने सत्य व अकाट्य है।

समीक्षा अंक ६०- आयत—

"जो अल्लाह, फरिश्तों, किताबों, रसूल और कयामत के साथ कुफ्र करे निश्चय वह गुमराह है, निश्चय जो लोग ईमान लाये, फिर काफिर हुए फिर ईमान लाये पुनः फिर गये और कुफ्र में अधिक बढ़े अल्लाह उन को कभी क्षमा नहीं करेगा और न मार्ग दिखायेगा।" सू निसा आ १३३-१३४।

स्वामी जी की समीक्षा—

क्या अब भी खुदा लाशरीक रह सकता है ? क्या लाशरीक कहते जाना और उसके साथ बहुत से शरीक भी मानते जाना यह परस्पर बिरुद्ध बात नहीं है ? ..... ।"

हमारा उत्तर—

इसके जबाब में मौलाना ने स्वामी जी को गाली गलौज किया है पर उत्तर उससे नहीं बन पड़ा है। वह लिखता है स्वामी जी में शिर्क को समझने तक की बुद्धि नहीं थी। पवित्र कुरान जिसको शिर्क कहता है उसका तात्पर्य ईश्वर के अतिरिक्त किसी और देवी देवता आदि में ईश्वरत्व मानना उसकी पूजा भक्ति करना ....।" (इत्यादि) बिपक्षी ने यहां छल से काम लिया है। शिर्क से ही शिरकत शब्द बनता है जिसके माने हैं शामिल करना साझा करना आप खुदा के साथ-साथ मुहम्मद को कल्मे में जोड़कर व शामिल करके खुदा व मुहम्मद दोनों की उपासना करने से कुरान बिरोधी होने से काफिर हैं। ऊपर की आयत में केवल खुदा को न मानने वालों को ही काफिर नहीं माना ' अपितु फिरिस्तों किताबों-रसूल मुहम्मद और कयामत को भी मानने की शर्त लगा

اوم

سُورۃ مثل القرآن — اعوذ باوم من القوم الظلمین — هیمنۃ عشرۃ آیۃ

بسم اوم الحیّ القیوم

شروع اوم نام سے جو کہ زندہ اور قائم بالذات ہے

قال ربّ المسلمین ۵ وخالق الشیطین ۵ فی کتبہ القرآن ۵

کہا ہے مسلمانوں کے پروردگار نے اور شیطانوں کے پیدا کرنے والے نے اپنی کتاب قرآن میں

لناس العلمین ۵ فاتوا بسورۃ من مثلہ وادعوا شھداءکم

تمام دنیا کے لوگوں سے کہ لے آؤ مثل اس کے ایک سورت اور بلاؤ اپنے گواہوں کو

من دون اللہ ان کنتم صدقین ۵ قل یاایّھا المسلمون

اللہ کے سوائے اگر تم سچے ہو تو کہہ اے مسلمانو میں

انی قد جئتکم ھذا سورۃ مثل القرآن ۵ فجرّبوا

لے آیا ہوں یہ سورت مثل قرآن کے بس تجربہ کرو

بالایمان ۵ ولا تکونوا من الکفرین ۵ واوم یشھد

ساتھ ایمان کے اور اسے انکار ہرگز نہ کرو اور اوم گواہ ہے کہ میں

انی من الصدقین ۵ وان کنتم فی شکٍّ مّمّا اعطینا

سچوں میں سے ہوں اور اگر تم کو شک ہے اسی چیز سے جو ہم نے عطا

خلیفتنا فاتوا برھنکم واسئلوا من ربّکم ان کنتم

کی ہے اپنے نائب کو تو لے آؤ اپنی دلیلوں کو اور پوچھو اپنے پروردگار سے

مؤمنین ۵

اگر تم ایماندار ہو

दी गई। शिरकत कई प्रकार की होती है। यहां शिरकत से तात्पर्य स्वामी जी का खुदा के साथ मोहम्मद साहब को शामिल करने से है। रसूल तो आप के कल्मे में शरीक है जो कि खूदा की मर्जी के बिरुद्ध है। आप में स्वामी जो की वात को भी समझने की बुद्धि नहीं है तो हम क्या करें। तुम्हारे सभी उत्तर मूर्खता पूर्ण स्वयं सिद्ध हैं। ईश्वर के अलावा अन्य को पूजना शिर्क नहीं कहलाता है बल्कि ईश्वर के साथ मौहम्मद को जोड़कर कल्मा बना लेना शिर्क है। समझे मौलाना ! शिर्क माने साझा करने के हैं।"

समीक्षा अंक ६६–

आयत "आज्ञा मानो अल्लाह की और आज्ञामानो रसूल की"
(कु० मु० मायदा आ ६२)

स्वामी जी की समीक्षा–

देखिए यह बात खुदा के शरीक होने की है। खुदा को ला शरीक मानना व्यर्थ है।

हमारा उत्तर–

स्वामी जी का आक्षप सर्वथा सत्य है। हर जगह खुदा के साथ रसूल को शामिल करने से तथा 'लाइलाहा लिल्लिल्लाह मुहम्मद रसूलल्लाह' नाम का कलमा कुरान बिरुद्ध फर्जी बनाकर आप लोगों ने हर बात में खुदा के साथ मुहम्मद को शरीक बना रखा है। कुरान में यह आपका कल्मा ज्यों का त्यों कहीं नहीं लिखा है। यदि दिखादें तो इनाम १०००) मिलेगा हिम्मत हो तो चुनौती स्वीकार करें।

समीक्षा अंक १४८ —

आयत "मस्जिदें वास्ते अल्लाह के हैं। बस मत पुकारो साथ अल्लाह के किसी को।" सूरे जिन्न आ १८।

हमारा उत्तर—

स्वामी जी ने इस कुरान के ही प्रमाण से कल्मा को गलत

बताया है जो कि अकाट्य है। खुदा के नाम के साथ पैगम्बर या भक्त को भी शामिल करना कुफ्र है। जहां कुरान में शैतान काफिरों जन्नत दोजख के बारे में बेशुमार आयतें भरी पड़ी हैं वहाँ खुदा यदि पसन्द करता तो आपका गढ़ा हुआ कल्मा भी लिखा सकता था। पर उसने इसी लिए नहीं लिखाया कि वह मुहम्मद या किसी इन्सान की शिरकत अपनी इबादत में ना पसन्द करता था। आप चिढ़ते क्यों हैं। आपका कल्मा कुरान की उक्त आयत के सर्वथा विरुद्ध है। क्या आप खुदा अकेले की इबादत नहीं कर सकते हैं या ऐसा करने से खुदा की इबादत अधूरी रह जावेगी ? क्या आप इस लिये खुदा के साथ पैगम्बर की उपासना करते है कि वे आपके साम्प्रदाय को आपकी कल्पित कयामत के दिन मुकद्दमे में खुदा के सामने पैरवी करेंगे इस लिए उनको कल्मे में रोज याद करते रहते है। मौहम्मद साहब आपके मार्ग दर्शक थे तो उनकी अलग से इबादत आप कर सकते हैं।

समीक्षा अंक ५६ —

आयत – "और एक जर्रे (त्रिसरेणु) की बराबर अल्लाह अन्याय नहीं करता और जो भलाई होय उसका दो गुणा करेगा उसको।" सू निसा आ ४०"

स्वामी जी की समीक्षा—

जब एक त्रिसरेणु(जर्रे) बराबर भी खुदा अन्याय नहीं करता तो पुण्य को द्विगुना क्यों कर देता है। और मुसलमानों का पक्षपात क्यों करता है ? बास्तव में द्विगुणा या न्यून फल देवे तो खुदा अन्यायी हो जावे।"

बिपक्षी की बकवास– ईश्वर तनिक भी अन्याय नहीं करता, पुण्य से कम फल देना तो अवश्य अन्याय है। पुण्य से अधिक फल देने को कौन अन्याय कह सकता है ?

हमारा उत्तर—

स्वामी जी का आक्षेप ठीक है। मौलाना उसे समझ नहीं सका है। कुरान में पुण्य पाप का बदला किस हिसाब से दिया जाता है इसका कोई हिसाब या पैमाना ही नहीं है।

ऊपर की आयत में पुण्य कर्मों का फल दुगना देने का खुदा का वायदा है। परन्तु इसके बिरुद्ध देखिये (कु० सूरे अनआम रुकून २० आ १६० में खुदा कहता है—

"जिसने नेकी की उसका दस गुना उसे मिलेगा और जिसने बदी की तो वह उसके बराबर सजा भुगतेगा और उन पर जुल्म नहीं होंगा।"

इसमें दुगना देने की बात को गलत करके खुदा ने दस गुने का वायदा कर दिया। इससे आगे और भी देखें—

सूरे बकर रु कू ३२ आ २४५।

"कोई है जो खुदा को खुशदिली से कर्ज दे कि उसके कर्ज को उसके लिए कई गुना बढ़ा देगा।" इसमें दुगना व दस गुना देने का वायदा भी खुदा ने झूठा कर के बे हिसाब इनाम देने का दावा ठोंक दिया। विपक्षी बताबें कि खुदा झूठा है या नहीं? उसकी कौन सी बात सत्य मानी जावे? अर्थात उसकी सभी बातें झूठी हैं एक भी सच नहीं है।

काफिरों को उन के पाप कर्मों के बराबर फल देने का वचन खुदा ने ऊपर दिया है। इसके विरुद्ध अब खुदा का दुगनी सजा देने का ऐलान भी कुरान में देखें —

कु सूरे आराफ रु कू ४ आयत ३८ में लिखा है "फर्माया कि जिन्न और इन्सान के गिरोहों में जो तुमसे पहले हो चुके हैं मिल कर आग दोजख में दाखिल हों। जब एक गिरोह दोजख में जायेगा तो अपने साथियों पर लानत करेगा, यहां तक कि जब सबके सब

नरक में जमा होंगे तो उनमें से पिछला गिरोह अपने से पहिले गिरोह के हक में बुरी दुआ करेगा कि ऐ हमारे परवर्दिगार ! इन्ही लोगों ने हमको भटका दिया, तू इन को दोजख में दूनी सजा दे। खुदा कहेगा कि हर एक को दूनी सजा मगर तुमको मालूम नहीं।

कुरान के अनुसार इस प्रकार आपका खुदा, वे इन्साफ है। उसके यहाँ सजा या इनाम देने का कोई नियम नहीं है। वह स्वेच्छाचारी मर्यादा हीन झूठे वायदे करने वाला लोगों को गुमराह करने वाला सिद्ध है, स्वामी दयानन्द का आक्षेप पूर्णतया सत्य है। ऐसा लगता है कि विपक्षी मौलाना ने कुरान को भी पूरा नहीं पढ़ा है। बेचारा वैसे ही मौलवियों में काना राजा बन बैठा है। देखो अरबी खुदा के जुल्मों का एक नमूना। खुदा कहता है—

हमको जब किसी गांव के लोगों को मार डालना मंजूर होता है। हम उसके खुश हाल लोगों को आज्ञा देते हैं। फिर वह उसमें बेहुक्मी करते हैं, तब उन पर यह सजा साबित हो जाती है। फिर हम उस बस्ती को मारकर तबाह कर देते हैं। कु पा १५ बनी इसराइल आ १६।

यह आयत खुदा के उन हथकन्डों का पर्दाफाश करती है जो बहु नेक खुशहाल लोगों को बिना बजह द्वेष बश बर्बाद करने को अपनाया करता है। अच्छे लोगों को देखकर भले आदमी खुश होते हैं और खुदा उनसे जलन रखकर शैतान के समान उनको तबाह करने को ऐसे हुक्म देता है जो गलत व न मानने योग्य हों। तथा जब वे उन बेजा हुक्मों को नहीं मानते तो खुदा हुक्म न मानने का बहाना करके उन्हें तबाह कर देता है। बिपक्षी मौलाना बताबें कि उनको कुरानी खुदा और शैतान में क्या अन्तर है। जो खुदा बिना बजह किसी को भला और किसी को बुरा बना दे उससे बुरा खुदा और कौन होगा। कुरान पारा २१ सूरे सज्दह रुकू २ आ १३ में

खुदा का का दावा भी देखने योग्य है जिसमें वह कहता है—

हम चाहते तो हर आदमी को उसकी राह की सूझ देते, मगर हमारी बात पूरी होती है कि जिन्न और आदमी सब से दोजख भर देंगे ।"

कोई बुरा आदमी यदि भला बनना भी चाहे तो यह अरबी खुदा उसे भला नहीं बनने देता है । जिसके प्रमाण हमने पीछे दिये हैं । ऐसे अन्यायी खुदा से कोई भला आदमी न्याय कीं आशा कैसे कर सकता है ?

समीक्षा अंक ७२ तथा ७३—

आयतें–"बस एक ही बार में अपना असा डाल दिया और वह अजगर था प्रत्यक्ष ।" बस हमने उस पर मेह का तूफान भेजा-चिचड़ी, टिड्डी, मेढ़क और लहू । बस हमने उनसे बदला लिया । और उनको डुवो दिया दरिया में । और हमने इस्राएल को दरिया से पार उतार दिया । निश्चय ही वह दीन झूंठा है कि जिसमें यह हैं और उनका कार्य भी झूंठा है ।" (कु० सूरे आराफ रू कू १६ आ १०७-१३३-१३५-१३६-१३८-१३९ ।

स्वामी जी की दोनों पर समीक्षा—

अब इसके लिखने से बिदित होता है कि ऐसी झूंठी बातों को खुदा और मोहम्मद साहेब भी मानते थे जो ऐसा है दोनों विद्वान नही थे । ..... यह इन्द्रजाल की बातें हैं । ..... अब देखिये जैसे कोई पाखन्डी किसी को डरपावे कि हम तुझ पर सर्पों को मारने के लिये भेजेंगे ऐसी यह बात है । भला जो एसा पक्षपाती हो कि एक जाति को डुवो दे और दूसरे को पार उतारे वह अधर्मी खुदा क्यों नहीं ? ..... क्या तौरेत जबूर का दीन जो उनका था झूंठा हो गया ? ..... ।।

हमारा उत्तर—

इस पर विपक्षी ने लिखा है कि खुदा ने हजरत मूसा की लाठो में ऐसे गुण उत्पन्न किये थे कि वह आवश्यकता पड़ने पर साँप बन जाता थी और भी अनेक चमत्कार पूर्ण कार्य होते थे ···· । मौलाना ने स्वामी जी की समीक्षा को दुष्टता पूर्ण लिखा है। हमारा उत्तर है कि ऐसी जादूगरी की बातों पर विश्वास करने वाले अक्लमन्द नहीं होते हैं। ऐसे तमाशे तो प्रत्यक्ष में जादूगर लोग आज भी दिखाते हैं। आरे से चीर कर दो टुकड़े करके खेल में फिर आदमी को जादू से जिन्दा कर देते हैं। पात्र को गायब कर देते हैं, अदृश्य में से कबूतर पैदा कर देते हैं। जादूगर बी० एन० सरकार के खेल देख लो, तो मूसा का तमाशा भूल जाओगे। जाहिलों व अज्ञानियों को बहकाने के लिये ऐसी बातें कहीं व लिखो जाती हैं, ताकि अपने मान्य लोगों को बड़ा साबित किया जा सके। जैसे अनेक बातें आपके यहां और भी लिखी मिलती हैं। मूसा की कुरान बर्णित करामातों का उल्लेख बाइबल में भी लिखा मिलता है।

कुरान शरीफ के चन्द चमत्कार और भी देखें —

१— चांद का साफ टुकड़ा पहाड़ पर गिरा और दूसरा पहाड़ के नीचे गिरा। चांद हजरत की आस्तीन से निकला। यह शक्कुल कमर चांद के दो टुकड़े होने का मौजजा है। मिनहाजन्न बब्बततर्जुमा मदारिजन्न बव्वत····(जि० १ सफा ३५७)

२— खदा ने पक्षी भजे जिन्होंने कंकड़ की जरा-जरा सी टुकड़ियां ऊपर से डालीं और उससे हाथी वालों को खाये हुए मूसे की तरह मारकर कर दिया। (कु प ३० सूरे फील १५)

३— आसमान में ओलों के पहाड़ जमे हुए हैं। कु सूरे नूर आ ४३।

४— आसमान जमीन पर गिरने से रुका है। कु सूरे हज्ज आ ६५।

५— आसमान की खाल खींची जावेगी। कु सू तक्वीर आ ११।

६— आसमान कागज की तरह लपेटा जायेगा।
(सू अम्बिया आ १०४)

७— सूरज कीचड़ के तालाब में डूबता है। सू कहफ आ ८६।

खुदाई किताब कुरान की इसी प्रकार की अनेक बातें पेश की जा सकती हैं जो अल्लाह मियां की विद्या तथा विज्ञान सम्बन्धी जानकारी की असलियत खोलने को काफी है। इसी प्रकार की बातें सभी इन्सानों द्वारा चलाये गये मजहबों की किताबों में भी मिलती है जो बे सर पैर की होती है।

मौलाना ने दो आक्षेप स्वामी जी की समीक्षा पर और किये हैं जिनसे स्पष्ट है कि मौलाना नम्बर एक का कुपढ़ है। वह लिखता है कि फिर औन और बनी इसराएल का तौरेत और जबूर से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस प्रथम आक्षेप का उत्तर यह है कि इसने कभी फूटी आंख से भी तौरेन और जबूर को नहीं पढ़ा है वैसे ही उल्मा-ओं का दादा बन बैठा है — बाइबिल में तौरात की निर्गमन पुस्त-काध्याय में पैरा ४ से १२ तक मूसा और हारुन का बिस्त्रित हाल दिया है जिससे लाठी का सांप बनाना हाथ सफेद होना टिड्डी मेंढक आदि का लाना, नदी फाड़ना आदि का सबिस्तार वर्णन है जो कि कुरान में भी पूरा नहीं दिया गया है। कुरान ने तो बाइबिल की ही सारी बातों की अधूरी नकल की है। उसमें अपने घर का क्या हैं? इस्लाम व कुरान, यहूदी ईसाई वजहबों व तौरात इञ्जील के संशोधित संस्करण ही तो है। अधिक जानने के लिए आप पुस्तक कुरान की छानबीन का अध्ययन करें। आपका अज्ञान मिट जावेगा।

अब आपके दूसरे आक्षेप का उत्तर दिया जाता है कि स्वामी जी ने अपने कुरान के उदाहरण में "निश्चय ही वह दीन झूठा है जिसमें यह है और उनका कार्य भी झूठा है।" यह वाक्य गलत

लिखा है जो कि कुरान में नहीं है ऐसा आपने लिखा है। न जाने, विपक्षी मौलवी कैसा मुसलमान है क्यों उसे झूंठ बोलने व झूंठी कसम खाने झूंठे आक्षेप करने में कोई शर्मो हया अनुभय नहीं होती है। कुरान पाक में भी कसमें तोड़ने बचन से मुकरने को गुनाह नहीं माना हे। प्रमाणहम् कुरान का पीछे दे चुके हैं। यह भी सत्य है कि उसने कभी कुरान नहीं पढ़ा है और फिर भी इस्लाम का झूठा वकील बन बैठा है। स्वामी जी का लेख सत्य है देखो कुरान सूरते आराफ आ १३९ का तर्जुमा हजरत अल्लामा शाह अब्दुल कादिर शाहब देहुलवी– दिल्ला छापा पृ० १०२ तहकीक यह लोग बातिल हैं दीनमें कि वह बीच उसके हैं और बातिल है जो कुछ थे करते।" अर्थात यह लोग बातिल (झूंठे दीन) हैं और नाशवान हैं गलत हैं जो कुछ ये करते हैं।

तर्जुमा कुरान हिन्दी श्री अहमद वशीर एम० ए० में बातिल का अर्थ 'नाश होने वाले' किया है। लखनऊ छापा कुरान शाह अब्दुल कादिर साहब में इसका तर्जुमा यह दिया है..... यह लोग जो हैं तवाह होता है जिस काम में लगे होते हैं और गलत है जो करते हैं।"

तीनों तर्जुमों को देख कर कोई भी समझ सकता है कि बातिल का अर्थ नाशवान तवाह होने वाला तथा गलत झूंठा आदि है। अतः स्वामी जी ने कुरान का जो उदाहरण वाक्य दिया है वह पूर्णतया सत्य है। झूंठे तुम्हारे जैसे लोग ऐसे ही लोगों को गुमराह करते रहते हैं वह यह नहीं जानते कि जब उनके झूंठ का पर्दाफाश होगा तो मुंह छिपाने को भी जगह न मिलेगी।

समीक्षा अंक नं० ८२—

आयत "सदा रहेंगे बीच उनके अल्लाह समीप है, उसके पुण्य बड़ा ! ऐ लोगो ! जो ईमान लाये हो, मत पकड़ो बापों अपने को

और अपने भाइयों के मित्र जो दोस्त रखे कुफ्र को ऊपर ईमान के।
सू तौबा आ २२-२३ ।

स्वामी जी की समीक्षा—

जो बहिश्त वालों के समीप अल्लाह रहता है तो सर्व व्यापक क्यों कर हो सकता है..... और मरबाप भाई और मित्र छुड़वाना केवल अन्याय की बात है ..... ।"

हमारा उत्तर–

मौलाना ने लिखा है कि स्वामी जी ने आयत को गलत समझा है कि खुदा जन्नत में रहता है, जबकि आयत का अर्थ है कि वह जन्नत में हमेशा रहेंगे, निश्चय ईश्वर के पास उनके लिए महान पुरस्कार है। हमारा उत्तर है कि कुरान को मौलाना ने पढ़ा व समझा ही नहीं है। कुरान ने खुदा को जन्नत में ही रहने वाला माना है। यहां जमीन पर तो वह कभी-२ घूमने सैर करने आता रहता था। देखो प्रमाण तोरान उत्पत्ति ३।८। तथा कुरान सूरे कमर आ ५४-५५ में लिखा है "परहेजगार बागों और नहरों में होंगे। ५४। सच्चो बैठक में बादशाह के पास जिसका सब पर कब्जा है बैठेंगे। ५५।" (अहमद वशीर का भाष्य) तथा तहकीक परहेजगार बीच बहिश्तों के है और नहरों के बीच मुकाम रास्ती के नजदीक बादशाह कुदरत वाले के (कुरान भाष्य शाह अब्दुल कादिर (देहलवी) दौनों कुरान भाष्यों से खुदा का बहिश्त में ही रहने वाला होना स्पष्ट है तथा मुसलमान वही खुदा के पास बैठक में रहेंगे अर्थात (खुदा बैठक में) रहता है। कु सूरे जमर रु ८ आ० ७५ में 'उस दिन तू देखेगा कि फरिश्ते अपने पर्वदिगार की खूबी बयान करते हैं उसके तख्त को आस पास घेरे हैं .. .... । सूरे मामिनून आ ११ पू में खुदा सच्चा बादशाह बहुत ऊंचा है, उसके सिवाय कोई पूजित नहीं। वह बड़े तख्त का मालिक है।" इसमें अश के

तख्त पर बैठे खुदा को फरिश्तों द्वारा घेरा जाना बताता है कि खुदा छोटा सा है (अनन्त नही है) वह अर्श पर बैठता है। इस जमीन पर नहीं रहता है, न सर्व व्यापक है। अर्श जन्नत में है, बहुत ऊंचा है। कु सूरे नज्म आ १० में खुदा जोरावर है फिर सीधा बैठा।६। और वह आसमान के ऊंचे किनारे पर था।७। फिर वह नजदीक हुआ और करीब आ गया।८। फिर दो कमान के बराबर या उससे भी कम फर्क रह गया।९। उस वक्त खुदा ने फिर अपने बन्दे (मुहम्मद) पर हुक्म भेजा।१०। इसमें खुदा का ऊपर बैठना, फिर नीचे उतर कर आना बताता है कि वह जमीन से बहुत दूर ऊचा रहता है। ऐसी अवस्था में स्वामी दयानन्द जी महाराज की समीक्षा सर्वथा सही है।

स्वामी जी ने ठीक ही लिखा है कि सन्तान को माता पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए न कि कुरान शरीफ के प्रभाव में पड़कर अपने घर वालों-सम्बन्धियों को त्याग देना चाहिए। कुरान तो परिवारों की परम्पराओं के त्याग की शिक्षा देकर संगठन के विनाश का मार्ग बताता है साथ ही विचार स्वातन्त्रय एवं अपनी बुद्धि के अनुसार दूसरों के प्रभु की उपासना का अधिकार भी छीन लेता है।

समीक्षा नं० ८८-

आयत 'निश्चय पर्वदिगार तुम्हारा अल्लाह है जिसने पैदा किया आसमानों और पृथ्वी को बीच छः दिन के फिर करार पकड़ा ऊपर अर्श के, तदबीर करता है काम को।" कु सूरे यूनिस आ २।

स्वामी जी की समीक्षा-

आकाश एक और बिना पैदा हुआ अनादि है, उसका बनाना लिखने से निश्चय हुआ कि कुरान कर्ता पदार्थ विद्या को नहीं जानता था। क्या सारी दुनियां परमेश्वर को छः दिन तक बनानी

पड़ती है ? तो जो "हो मेरे हुक्म से और हो गया" जब कुरान में ऐसा लिखा है फिर छः दिन कभी नहीं लग सकते इससे, छः दिन लगना झूठ।

हमारा उत्तर-

विपक्षी ने इस पर अपशब्दों का प्रयोग और बकवास की है, पर उससे उत्तर नहीं बन सका है। कुरान में उसने छः दिन का अर्थ छः काल बताया है जो गलत है। उस बेचारे ने कुरान को भी नहीं पढ़ा है मगर गालियां देने और लिखने बैठ गया। उसे यह भी मालूम नही कि कुरानी खुदा का एक दिन एक हजार इन्सानी सालों के बरावर होता है। देखो कुरान सूरे सजदह आयत ५। फिर तुम लोगों की गिनती के अनुसार हजार साल की मुद्दत का एक दिन होता है। इस तरह ६ या ८ हजार सालों में खुदा दुनियां बना सका था न कि छः दिन में। छः दिन में जमीन आसमान और जो कुछ उसमें है उसे बनाने की कल्पना भी कुरान ने तौरात से चोरी की है। उसमें लिखा है कि छः दिन में सभी कुछ बनाकर सातवें दिन यहोवा (खुदा) ने बिश्राम किया था। उत्पत्ति १॥ और इसी को नकल कुरान ने कर ली है। खुदा जब कुरान में डंके की चोट यह घोषणा कर चुका है कि "वह जब किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसके लिये फर्मा देता है 'हो' और वह हो जाता है। सू बकर आ ११७। तो फिर दुनियां बनाते वक्त उसे क्या भूल गया था ? दोनों में से कौन सा दावा खुदा का झूंठा है मौलवी बतावे ?

अरबो खुदा के दो हाथ हैं 'खुदा के दोनों हाथ फैले हुए हैं। जिस तरह चाहता है खर्च करता है ....।' कु० सू० मायदा रु० ९ आ ६४॥

'और हमने आसमानों को अपने हाथों के बल से बनाया'

कु.सू जारियात आ ४७ ।

और हमने बनाये आसमान और जमीन और जो कुछ उनके बीच में है और न आई हमको मांदगा (अर्थात हम नहीं थके) ।

कु सूरे काफ रु ३ आयत २७ ।

पाठक देखें कि खुदा का 'कुन' (हो) कह कर सब कुछ बनाने का नुस्खा या दावा अब कहां गया ? अरबी खुदा के केवल दो ही हाथ हैं और अपने दौनों हाथों से उसे दुनियां बनाने में कड़ी मेहनत करनी पड़ी तब कहीं ६ दिन में वह यह सब खेल बना पाया । और इसी लिये तौरात तथा कुरान के अनुसार उसे सातवे दिन आराम करने, मेहनत करने की हरारत निकालने को अर्श के तख्त पर जा कर बैठना पड़ा । हो सकता है ज्यादा मेहनत करनी पड़ती तो ज्यादा थकावट आ जाती यदि यह बात नहीं थी तो खुदा को यह क्यों कहना पड़ा कि हम नहीं थके थे । तौरात में 'विश्राम' शब्द खुदा की थकावट को खुलासा करता है । तौरात को कुरान ने खुदाई प्रमाणिक किताव माना है ।

आसमान भी खुदा ने बनाया तो उसके बनने से पूर्व इस शून्यता में क्या भरा था और कब से भरा था तथा वह कहां गया, यह भी हमें बिपक्षी से जानना है । जिसमें कुछ भी न बना हो केवल शून्य (पोल) हो उसे भी खुदा बना सकता है कैसी मजाक हैं ? दुनियां का कोई भी मुसलमान मौलवी यह बतावें कि कौन से लक्षण हैं जिससे यह पता चल सके कि कोई चीज बनी हुई हैं ? हर बनी बस्तु की पहिचान कुछ लक्षणों से ही होती हैं ? हमारी इस चुनौती को कौन सा मौलवी स्वीकार करेगा हमें देखना हैं । और फिर आप वही लक्षण आसमान में घटा कर उसे बना हुआ साबित करके दिखावे ? स्वामी जी का खन्डन तो अकाट्य हैं उसे संसार के सारे मौलाना मिलकर भी नहीं काट सकते हैं, हमारा दावा हैं ।

आसमान (शून्य) के बारे में हम कुरान की बुद्धि एवम् विज्ञान के विरुद्ध मान्यताओं पर पीछे प्रकाश डाल चुके हैं।

कुरान की ६ दिन में जमीन आसमान और जो कुछ उसके बीच म है बनाने की बात भी कुरान के ही अनुसार ही गलत है। देखिये प्रमाण कुरान पा २४ सूरते हामीम सज्दह में लिखा है कि *दुनियां को ८ दिन में खुदा बना पाया था।*

(ऐ पैगम्बर) कहो क्या तुम उससे इन्कार करते हो। जिसने दो दिन में जमीन को पैदा किया और तुम उसको शरीक बनाते हो। यही सारे जहान का परिवर्दिगार है। ९। और उसी ने जमीन में पहाड़ बनाये और उसमें बरकत दो। और उसी ने माँगने वालों के लिए चार दिनों में खुराके ठहरा दी। १०। इसके बाद दो दिन में उसने सात आसमान बनाये और हर एक आसमान में अपना हुक्म उतारा.....। ११। (अर्थात कुल आठ दिन लगे थे) कुरान शरीफ कहीं दुनियां में सभी कुछ छः दिन में बनाना बताता है और कहीं आठ दिन में बनाना लिखता है। ऐसी परस्पर विरोधी बातें बताने वाली किताब को केवल आपही खुदाई मान सकते हैं।

हमने खुदा के दुनियां बनाने के दो परस्पर बिरोधी दावे पेश किये हैं। मौलाना में हिम्मत हो तो खुदा का दौनों में से एक वा दौनों दावे झूंठ स्वीकार करने का साहस दिखावें।

अरबी खुदा के केवल दो ही हाथ कुरान मानता है। इस कल्पना में हिन्दू आगे निकल गये हैं। वे बिष्णु के चार हाथ, दुर्गा के आठ हाथ, सहस्र बाहु के हजार हाथ मानते हैं। मौलाना ! तुम इसमें भी हार गये। गप्प भी उड़ाई जावे तो ऊंची उड़ानी चाहिये ताकि मजहबी गप्पों के मुकाबिले के सम्मेलन में हार तो न हो सके।

समीक्षा अंक १०४–

आयत "यह लोग वास्ते उनके हैं बाग हमेशा रहने के, चलती

है नीचे उनके नहरें, गहना पहनाये जायेंगे बीच उसके कंगक सोने के और पोशाक पहनेंगे वस्त्र हरे रंग की और तफ्ते की सी तकिये किये हुए बीच उसके ऊपर तख्तों के, अच्छा पुण्य, अच्छी है बहिश्त लाभ उठाने की।" कुरान सूरे आ कहम ३१।

स्वामी की समीक्षा–

'भला कोई बुद्धिमान यहाँ विचार करे तो यहां से वहां मुसलमानों बहिश्त में अधिक कुछ भी नहीं है .....।

हमारा उत्तर-

इस पर मौलाना ने लिखा है 'जन्नत के पदार्थों में और सांसारिक वस्तुओं की कोई समानता नहीं है। मनुष्य को जानकारी के अनुसार कुछ वर्णन कर दिया गया है ताकि मनुष्य को उसका कुछ अनुमान हो सके।" कोई बतावे कि गहने कपड़े हरे रंग के जेवर तकिये नहरें और बागान जो वहां मिलेंगे उनमें क्या बिशेषता होगी ? क्या जेवर खुदा स्वयं बना कर देगा ? सोंठ कपूर मिली शराब तो यहां भी बन सकती है। शहद यहां भी मिलता है। दूध ऊटनी बकरी गाय भैंस गधी आदि का भी मिलता है। जो आप चाहे खरीद कर पी लेते हैं। फिर खुदा की जन्नत में और क्या बिशेषता होगी। शराब भी बढ़िया से बढ़िया यहाँ मिलती है। हरे और गोरे चट्टे लौंडे (गिलमें) सभी मुसलमानों को अरब में मिल जाते हैं। पानी यहां आबे जमजम का नील नदी का गगा जमुना का सिन्ध का मिल जाता है सोतों समुद्रों पहाड़ी व वर्फ का भी मिल जाता है तब आपकी जन्नत की क्या बिशेषता रह जावेगी हां अनार, केले, सन्तरे, रसगुल्ले, रबड़ी, लड्डू बालूशाही आदि वहां जरूर नहीं मिलेंगे। न रेडियो, टेलीबिजन, सिनेमा आदि तफरीह को मिलेंगे। कुछ न कुछ घाटा ही रहेगा वहां फंस कर।

क्या आप बता सकते हैं कि खुदा बन्द ने कुरान पाक में जन्नत

में अण्डे की तरह खूबसूरत गोरे गिलमें (लोंडे) आपको देने का जिक्र किस ख्याल से किया है ? तथा वे हमेशा लड़के ही बने रहेंगे यह क्यों लिखा है ? यदि वे बड़े होकर दाड़ी मूंछ वाले बन जायेंगे तो आपकी उन से क्या परेशानी सेवा लेने में होगी ? खुलासा करें व अनुभव लिखें।

मौलाना ! बहिश्त में मिर्जा देहलवी के मुकद्दमाये तफसीरुलकुरान पुस्तक के अनुसार हर एक मियां को १२५०० औरतें मिलेगी जिनमें ८००० मर्द रशीदा शादी शुदा खाबिन्दों वाली औरतें दी जावेगी तो इसके मानी होंगे कि बहिश्त में मर्द भी हमेशा पहिले से रहते होंगे। जब उनकी बीवियों में तुमको साझा मिलेगा तो क्या तुम्हारी बीवियों में उनको साझा खुदा नहीं देगा ? एक बात हिसाब लगाकर और बताओ कि १२५०० औरतें हर मुसलमान को वहां दी जावेंगी और मान लो कि कयामत तक सौ अरब मुसलमान इस जमीन से मर कर बहिश्त में गये तो कितनी औरतें उनके लिये वहां खुदा को तैयार रखनी पड़ेंगी ? और जब सारी बहिश्त खुदा के साथ जबान औरतों से ही भरा होगी तो फिर बहिश्त औरतों का लोक हुआ या नहीं ? क्या बेचारे मुसलमान खुदा परस्त हर फकीर को भी १२५०० औरतें दी जावेंगी ? आखिर क्या बात है कि खुदा ने लोगों को मुसलमान बनने का लालच बे शुमार औरतों और गिलमों (लोंडों) का जन्नत में दिया है ?

कुरान पाक में सूरे बकर रु कू २८ आयत २२३ में लिखा है "बीवियाँ तुम्हारी खेतियां हैं वास्ते तुम्हारे पस जाओ खेत अपने में जिस तरह चाहों और आगे भेजो जान अपनी के और अल्लाह से डरो।" ..... इसी आयत पर हफ बातुल मुसलमी पुस्तक मे पृष्ठ ४०/४१ पर लिखा है कि—"औरतें तुम्हारी खेती है, जिधर से चाहो आओ और अपने नफ्स का चाहाना करो पस अल्लाह से डरो और

उसको सुनो।

कुरान में हाशिये पर इस आयत पर हदीस दी है वह यह है "यहूद कहते थे कि अगर कोई शख्स औरतों से इस तरह जमाअ (संभोग) करें कि औरत की पुश्त मर्द के मुंह की जानिब हो, तो बच्चा जौल यानी भेंगा पैदा होता है। एकबार हजरत उमर रजी अल्लाह से ऐसा हुआ तो उन्होंने हजरत सले अल्लाह औलियह वसल्लम (मुहम्मद साहब) से अर्ज किया तो यह (ऊपर वाली) आयत नाजिल हुई यानी अपनी बीवी से हर तरह जमाअ (सभोग) दुरस्त है।" (देखो मुतरज्जिम कुरान शाह अब्दुल कादिर देहलवी का पृ० २३)

जब औरत से पीछे से जमाअ जायज है तो आप गिलमों को छोड़ देंगे यह कौन मान सकता है। इगलाम शब्द भी तो गिलमे से बना है। बती फी उलदुवर (गुदा मैथुन) मौलाना आपके घर से ही जायज है इसने बारे में विशेष प्रमाण आह हफबातुल मुसलमीन पुस्तक में पृ ४२/४३ पर देख लेवें जो आपके ही एक मुसलमान दोनो भाई ने लिखो है। उसमें बती फीउल दुवर के समर्थन में कई प्रमाण दिये गये हैं कि वह इस्लाम में जायज है।

दोजख में जब काफिर अपने कर्मों के बराबर दण्ड भुगत चुके होंगे तो फिर उनको वहां बन्द रखने वाला अरबी खुदा मुंसिफ कैसे हो सकेगा ? जेल को म्याद पूरी होने पर कैदी को जेल में बन्द रखने वाला मजिस्ट्रेट क्या बेईमान व पापी नहीं होगा ? क्या अरबी खुदा को न्याय करना भी नहीं आता जो थोड़ी सी जिन्दगी के थोड़े से गुनाहों का दण्ड अनन्त देने बैठेगा ? और जो नेक कर्म काफिर करेगे उनका उत्तम बदला दोजख में कैसे व कब देगा, इसका कुरान में जिक्र क्यों नहीं है ? क्या यह खुदाई बेइन्साफी नहीं है।

मौलाना ! स्वामी दयानन्द जी ने कुरान के वारे में जो कुछ सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास में लिखा है वह अक्षर अक्षर सत्य है। तुम्हारी तो हस्ती क्या है कोई भी मौलवी (उल्मा) उसे काट नहीं सकता है। गालियां देकर दिल की भड़ास भले ही निकाल ले।

स्वामी जी ने कुरान की आयतों के जो अर्थ दिये हैं वे ही अर्थ कुरान के तर्जुमाकार मौलवियों ने किये है अतः पूर्णतः सत्य हैं। इस प्रकार आपकी गन्दी पुस्तक का हमने कुरान के ही प्रमाणों से यथोचित उत्तर दे दिया है।

"सत्यार्थ प्रकाश का असत्यार्थ प्रकाश" पुस्तक में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के लिये उसके लेखक मुस्लिम मौलवी की गालियों के नमूने—

"यह हैं आर्य समाज के महर्षि और यह है उनका नंगा नांच वैश्याओं के दलालों और भड़ओं की शैली शब्दावली किसे कहेंगे ? पृ० २४(पुस्तक स० प्र का असत्यार्थ प्रकाश में)"

'स्वामो जी ने कपटाचार धूर्तता और भ्रष्ट प्रचार का अन्त कर दिया। पृ० २६

'स्वामी जी की वुद्धि तो पक्षपात के अन्धकार में चली गई थी।' पृ० २७।

'उनको तो आरोप और आक्षेप का बेलगाम घोड़ा दौड़ाना था कि हम भी है पाँचवे सवारों में'। पृ० २९

समीक्षाओं में भी वही द्वेष भाव है वही 'घ्रणां' प्रसार है वही धूर्तता और कपटाचार है। यदि कोई मूर्ख नीच और असभ्य व्यक्ति ऐसी अनर्गल वकवास करता.... और समीक्षक बनकर ऐसी भ्रष्टता और दुराचार का नंगा नृत्य किया है....।" पृ० ३०।

"परन्तु उनके कपटाचार और धूर्तता और अज्ञानता को प्रकट कर देना आवश्यक है। पृ० ३८।

गुरु विरजान... 801
सन्दर्भ पुस... ४)
परिग्रहण ... दयानन्द महि...

मूर्खों के समान यह आक्षेप कर दिया है।" पृ० ७४।

"आजतक आर्य समाजियों को ऋषिवर की यह मूर्खता नहीं सूझी।" पृ० ७६।

"मूर्खता पूर्ण आलाप कोई मूर्ख ही कर सकता है ···· स्वामी जी में शिर्क समझने तक की बुद्धि न थी।" स्वामी जी ने अनेक समीक्षाओं में उसी मूर्खता और बुद्धिहीनता का प्रदर्शन किया है। पृष्ठ ७९।

"स्वामी जी पवित्र कुरान से अभिज्ञ भी थे, मूर्ख भी और बुद्धिहीन भी" पृ० ८०।

"किस विद्या ने ऋषिवर की बुद्धि का सर्वनाश कर दिया था कि वह न्याय अन्याय को भी नहीं समझते थे।" पृ० ८१।

"ऐसी दुष्टता पूर्ण और भ्रष्ट समीक्षा लिखकर अपने को अपमानित नहीं करते। पृ० ८२।

"स्वामी जी के एक अनर्गल आलाप का उत्तर लिखेंगे।" पृ० ८२।

"ऋषिवर में सभी गुण थे। अज्ञानता भी भ्रष्टाचार भी कपटाचार भी और हठधर्मी भी।" पृ० ८४।

स्वामी जी का कपटाचार देखिये, बीच की तीन आयतों को छोड़कर विषय ही भ्रष्ट कर दिया है।" पृ० ८४।

"ईश्वर को न जानने वाले तथा जंगली थे स्वामी जी।" पृष्ठ ८५।

"इस समीक्षा में देखिये ऋषिवर की बुद्धिहीनता।" पृ० ८७।

"स्वामी जी की बुद्धिहीनता का दूसरा प्रमाण देखिये।········ यह उदाहरण सर्वथा मूर्खता पूर्ण ········ है।" पृ० ८८।

नोट– सन् ७१ के अपने अखबार अन वारुल इस्लाम में एक लेख में विपक्षी ने हमारे लिये भी जाहिल शब्द लिखा है।

मौलाना ! यही गालियां किसी अरबी पैगम्बर को आप देकर देखते तो पता चल जाता कि नतीजा क्या होता है ?